# नूतन पद्य-प्रसून

सम्पादक

डॉ० राम गोपाल गोयल

खेमचन्द चतुर्वेदी

[माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के अधिकार द्वारा प्रकाशित]

१९६४

विद्या बुक हाउस, जयपुर

# नूतन पद्य-प्रसून

[ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की हायर सैकण्डरी परीक्षा की विशेष हिन्दी के लिये काव्य-संकलन ]

सम्पादक :

डॉ. रामगोपाल गोयल
प्राध्यापक-हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय
अजमेर

खेमचन्द्र चतुर्वेदी
प्रख्याता
राजकीय शिक्षक-प्रशिक्षण
महाविद्यालय; अजमेर



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
के अधिकार द्वारा प्रकाशित

इण्डिया बुक हाउस
फतेहपुरियों का दरवाजा
चौड़ा रास्ता–जयपुर 302003
1 9 8 4

# विषय-सूची

# प्राक्कथन



प्रस्तुत काव्य-संकलन माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा निर्धारित ठ्यक्रम के अनुसार उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विशेष हिन्दी के विद्यार्थियों लिये संकलित और सम्पादित किया गया है। रचनाओं का चयन करते मय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि वे विद्यार्थियों के मानसिक ... के अनुरूप उनके विषय-ज्ञान और सौन्दर्य-बोध के क्षितिज को ...ौर व्यापकता प्रदान करने वाली हों, साथ ही बोर्ड द्वारा निर्धारित राजक ...ाओं एवं भाषायी शिक्षण के उद्देश्य की अनुपूरक भी हों।

...ंकलन में बोर्ड द्वारा निर्धारित पृष्ठ संख्या में ही हिन्दी कविता ... के विविध सोपानों ... करने वाले रचनाकार और ...ओं को समाविष्ट ... ...टा की गई है। आदिकाल से ...ेक काल तक लगभग एक सहस्र वर्षों की कालावधि में विस्तृत ...ा के इतिहास के विविध काल-खण्डों और काव्य-प्रवृत्तियों का ...तिनिधित्व करने वाले कवियों और उनकी कविताओं का चयन कर पाना ...ड़ा कठिन कार्य है, तथापि प्रस्तुत संकलन में भक्तिकाल के कबीर से लेकर ...द्यतन आठवें दशक के प्रतिनिधि कवि एवं नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर ...र्वेश्वर दयाल सक्सेना तक की रचनाओं का समावेश किया गया है।

इस पद्य-संकलन के अन्तिम कवि देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में अपना ...ीवन उत्सर्ग करने वाले स्वतन्त्रता सेनानी तमिल भाषा के महान् कवि एवं ...राष्ट्र के चारण' सुब्रह्मण्य भारती हैं जिनकी तमिल से हिन्दी भाषा में ...नूदित रचना उदात्त देश-प्रेम, राष्ट्रीयता एवं भावात्मक एकता की भावनाओं ... ओत-प्रोत है। हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्यार्थियों द्वारा हमारे देश ...ी अन्य भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के अध्ययन से जहाँ एक ...ौर विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रति सौहार्द की भावना जागृत होगी ...हाँ राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता को बल प्राप्त होगा, यह निर्विवाद ...त्य है।

हिन्दी कविता की क्रमिक विकास परम्परा, विभिन्न विचारधाराओं और भाव-सरणियों, तथा विविध रचना-पद्धतियों का विद्यार्थियों द्वारा सम्यक् परिचय प्राप्त करने की दृष्टि से पुस्तक के प्रारम्भ में हिन्दी कविता के विकास की संक्षिप्त भूमिका दी गई है, तदनन्तर संकलन में समाविष्ट प्रत्येक कवि का जीवन-परिचय, उसके कृतित्व एवं काव्यगत विशेषताओं का संक्षिप्त आँकलन तथा संकलित रचनाओं की विषय-वस्तु एवं भाषा-शैली का सारांश दिया गया है।

प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यासार्थ कुछ प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों में वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नों की रचना इस दृष्टि से की गई है कि उनके द्वारा विद्यार्थीगण में प्रस्तुत रचनाओं के भावपक्ष की गहन रसानुभूति एवं भाषा-शैली के कलात्मक सौन्दर्य की सम्यक् समझ उत्पन्न की जा सके, साथ ही उनमें मौलिक चिन्तन, क्षमता और रचनात्मक योग्यता का भी विकास हो सके।

पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट के रूप में कठिन शब्दों के अर्थ, कठिन पंक्तियों और अन्तर्कथाओं का स्पष्टीकरण एवं वांछित टिप्पणियाँ दी गई हैं, विद्यार्थीगण विषय-वस्तु एवं भाषा सम्बन्धी काठिन्य का निवारण करके प्रस्तुत काव्य की रसानुभूति और अभिव्यक्ति के सौन्दर्य को भली भाँति हृदयंगम कर सकेंगे।

आशा है प्रस्तुत काव्य-संकलन उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के लिये अपेक्षित भाषा, भाव, विचार, काव्यगत रसानुभूति, सौन्दर्य-बोध एवं रचना-क्षमता आदि विविध आयामों को विस्तृत करने के लिये उचित अवसर प्रदान करने में सक्षम सिद्ध होगा।

अन्त में, हम उन सभी कृतिकारों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं, जिनकी रचनाओं के द्वारा प्रस्तुत पद्य-संकलन की साहित्यिक श्रीवृद्धि की गई है।

—सम्पादक द्वय

# भूमिका

## हिन्दी काव्य का क्रमिक विकास

आज हिन्दी साहित्य अपने वर्तमान रूप में पर्याप्त समृद्ध और प्रौढ़ है। इसमें भारतीय मनीषा की लगभग एक सहस्र वर्ष की गहन अनुभूतियाँ एवं चिन्तन-मनन का प्रतिफलन हुआ है। अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की भाँति हिन्दी भाषा के साहित्य का प्रारम्भ भी काव्य से होता है। हिन्दी-काव्य के क्रमिक विकास की कालावधि लगभग एक सहस्र बर्ष पुरानी है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हिन्दी साहित्य के इतिहास को विद्रानों ने मुख्यतः चार काव्यखण्डों में विभाजित किया है। हिन्दी साहित्य की विविध धाराओं, विभिन्न प्रवृत्तियों एवं इसकी कालावधि तथा नामकरण को लेकर हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों में व्यापक मतभेद हैं, किन्तु इस मत-विभिन्नता के होते हुए भी हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और रचना-पद्धतियों को आधार मानकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा किया गया काल-विभाजन एवं नामकरण अन्य विद्वानों द्वारा बिवेचित काल-विभाजन की अपेक्षा अधिक प्रचलित और बहुमान्य है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का प्रारंभ सम्वद् 1050 से मानते हैं। उन्होंने समस्त हिन्दी साहित्य को निम्नलिखित चार कालों में विभाजित किया है—

(1) आदिकाल (वीरगाथा काल, सम्वत् 1050-1375)
(2) पूर्वमध्यकाल (भक्तिकाल, सम्वत् 1375-1700)
(3) उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल, सम्वत् 1700-1900)
(4) आधुनिककाल (गद्यकाल, सम्वत् 1909 से अब तक)

**आदिकाल :**

आदिकाल के नामकरण के बारे में विद्वानों में व्यापक मतभेद हैं। युद्धों में वीरता अथवा शौर्य-प्रदर्शन की विशेष प्रवृत्ति को लक्ष्य करके तथा वीर-रस प्रधान चरित-काव्यों की बहुलता देखकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल का नामकरण वीरगाथाकाल किया, किन्तु परवर्ती विद्वानों को शुक्ल जा का यह मत मान्य नहीं हुआ। शुक्ल जी ने जिन [बारह ग्रन्थों के आधार

पर नामकरण किया है, उनमें से अधिकतर ग्रन्थों का नामोल्लेख ही मिलता है, जिनका कहीं अस्तित्व नहीं है। चन्द बरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' एवं नरपति नाल्हकृत 'वीसलदेव रासो' भी अप्रमाणिक माने गये हैं। इसके अतिरिक्त शुक्ल जी ने सिद्ध एवं जैन मतावलम्बियों के साहित्य को धार्मिक एवं उपदेशात्मक साहित्य कहकर उसे अपने विवेचन में सम्मिलित नहीं किया। अतः शुक्ल जी से मतभेद प्रकट करते हुए राहुल सांकृत्यायन ने इस युग का नाम 'सिद्ध-सामन्त युग' रखा तो डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'चारण-काल' नाम देना उपयुक्त समझा। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस युग का नाम 'आदिकाल' रखा जो अधिक तर्क-संगत् जान पड़ता है। वस्तुतः यह युग भाषा और भाव की दृष्टि से विविधता लिये हुए है। इस युग में साहित्य की विविध धारायें, विभिन्न विचार एवं भाव सरणियाँ, अनेक प्रकार की रचना-पद्धतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। उन सबका समावेश 'आदिकाल' नामकरण में हो जाता है। 'आदिकाल' का प्रमुख काव्य चारण व भाटों द्वारा अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्ति में लिखे गए वीरगाथात्मक काव्य हैं जिन्हें 'रासो' ग्रन्थ कहा जाता है। ये चारण काव्य-प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। इन्होंने अपने आश्रयदाता राजाओं और सामन्तों के वंश, शौर्य और यश आदि का अलंकृत भाषा में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करने में अपनी काव्य-प्रतिभा का भरपूर उपयोग किया। अपने आश्रयदाता राजाओं के यशोगान के लिये लिखा गया काव्य 'चारण काव्य' कहलाया जो आदिकाल की प्रमुख काव्य-पद्धति है। वीर गाथाकालीन चारण काव्य में युद्धों का जैसा सजीव चित्रण अलंकृत एवं चित्रोपम ओजपूर्ण भाषा में मिलता है वैसा अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। इसका कारण यह है कि वे कवि अवसर आने पर स्वयं युद्ध-क्षेत्र में अपना रण-कौशल प्रदर्शित करते थे। ओजपूर्ण सशक्त भाषा में वीर-पुरुषों के शौर्य-वर्णन के अतिरिक्त वीरांगनाओं के युद्ध-कौशल एवं उनके हृदयगत वीरभावों का जैसा सजीव और सुन्दर चित्रण वीरगाथाकालीन काव्य में मिलता है, वह विश्व साहित्य को अपूर्व देन है।

आदिकाल के चारण काव्य में वीर-रस की प्रधानता पाई जाती है। वीर-रस की जैसी अजस्र धारा इस काव्य में प्रवाहित है, वह अपने आप में अनूठी है। वीर-रस के साथ ही शृंगार रस की धारा भी अबाध रूप से प्रवहमान रहती है, क्योंकि आदिकाल में युद्धों का एक प्रमुख कारण नारी

श्रौर उसका सौन्दर्य रहा है। श्रतः इस काल के साहित्य में 'नायिका-भेद' एवं 'नखशिख वर्णन' के साथ नारी के सर्वांगीण श्रपूर्व सौन्दर्य का कलापूर्ण चित्रण करने की विशेषता पाई जाती है। वीररस के सहायक रौद्र, वीभत्स श्रौर भयानक रसों का भी निर्वाह इन रचनाश्रों में हुश्रा है।

इस काल की वीरगाथाश्रों की रचना मुख्यतः डिंगल भाषा में हुई जो चारण कवियों की एक विशिष्ट काव्य-भाषा-शैली है। द्वित्ववर्ण प्रधान डिंगल भाषा श्रोजगुण की सृष्टि करने में सफल सिद्ध हुई है। व्याकरण की दृष्टि से श्रशुद्ध होने पर भी इस काल की भाषा में भावों की सशक्त व्यंजना कर पाने की क्षमता विद्यमान है। उस समय की श्रपभ्रंश मिश्रित भाषा पिंगल के नाम से भी जानी जाती है। वीरगाथा काल की कविता में दूहा, पद्धरी, तोमर, नाराच, छप्पय, गाथा, श्रार्या, सट्टक, रोला, उल्लाला श्रौर कुण्डलिया श्रादि छन्दों का प्रयोग बड़े कलात्मक ढंग से हुश्रा है जो श्रोजगुण प्रधान डिंगल भाषा की प्रभाव-वृद्धि में सहायक सिद्ध हुश्रा है। वीर गाथा काल के कवियों ने रूपक, उत्प्रेक्षा श्रादि परम्परागत श्रलंकारों के प्रयोग के साथ श्रतिशयोक्ति श्रलंकार का सबसे श्रधिक प्रयोग किया है। इसके कारण उनकी कृतियों की विषय-वस्तु कल्पना की ऊँची उड़ान लिये श्रतिरंजनात्मक हो गई है तथा उनकी ऐतिहासिकता भी संदिग्ध हो गई है फिर भी ये कृतियाँ श्रपने युग की सामन्ती सभ्यता श्रौर संस्कृति का चित्र बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

वीरगाथाकाल के प्रमुख कवि चन्दबरदाई हैं। इनके द्वारा रचित 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। इसकी प्रामाणिकता के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। यद्यपि प्रक्षिप्त श्रंश जुड़ जाने से इसकी प्रामाणिकता संदिग्ध हो गई है तथापि यह ग्रन्थ श्रपने युग की संस्कृति का सजीव चित्र उपस्थित करता है। काव्य-कौशल की दृष्टि से इस ग्रन्थ का बहुत महत्व है। 'पृथ्वीराज रासो' के श्रतिरिक्त—'बीसलदेव रासो', 'खुमाण रासो, 'जयचंद प्रकाश', 'हम्मीर रासो', 'विनयपाल रासो' तथा 'परमार रासो' (श्राल्हा-खण्ड) इस युग की उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

चारण-काव्य के श्रतिरिक्त जैन मुनियों द्वारा रचित जैन-काव्य भी इस काल में उपलब्ध होता है। इस काव्य की भाषा पर श्रपभ्रंश का प्रभाव है। स्वयंभू द्वारा रचित 'पउमचरिउ' पुष्पदन्त कृत 'पद्म-पुराण' श्रादि इसके

प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य का आदिकाल विविध साहित्यि प्रवृत्तियों, विविध काव्य-रूपों एवं शैलियों की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपू काल है।

**पूर्व-मध्यकाल अथवा भक्तिकाल :**

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल का समय सम्वत् 1375 सम्वत् 1700 तक माना है। अनेक विद्वानों ने भावपक्ष और कलापक्ष क सर्वोत्तम श्रेष्ठ रूप देखकर भक्तिकाल को हिन्दी-साहित्य का स्वर्णकाल मान है। वस्तुतः अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष का जैसा भावप्रवण औ कलात्मक सामंजस्य भक्तिकाल में मिलता है, वैसा पूर्ववर्ती और परवर्त साहित्य में मिलना दुर्लभ है।

हिन्दी-साहित्य में भक्तिकाल का आविर्भाव कोई आकस्मिक औ अलौकिक घटना नहीं है और न 'ईसाइयत' आदि किसी विदेशी प्रभाव क उपज है, जैसा कि पाश्चात्य विद्वान् सर ग्रियर्सन ने सिद्ध करना चाहा है भक्ति-काल को विदेशी सत्ता के समक्ष अपनी पराजय और पराभव से निरा होती हिन्दू-जनता की निराशात्मक मनोवृत्ति का प्रतिफलन बतलाना भ न्यायसंगत नहीं है। वस्तुतः भक्ति-आन्दोलन का आविर्भाव इस देश की सदिय से चली आ रही धार्मिक और सांस्कृतिक धारा का अविच्छिन्न अंग है जि पुराणों में भागवत-धर्म कहा गया है। जब उत्तर भारत में धार्मिक अत्याचा हो रहे थे, तब अपेक्षाकृत निरापद व शान्त दक्षिण भारत में भक्ति की प्रबा धारा प्रभावित हो रही थी। वस्तुतः तमिल के आलवार वैष्णव भक्त हमा देश में भक्ति-भावना के पुरस्कर्त्ता समझे जाने चाहिये। उन्हीं की परम्परा श्री रामानुजाचार्य हुए जिन्होंने भक्ति भावना को लोकप्रिय बनाया।

भगवान् के रूप-गुण की विशिष्टता को आधार मानते हुए उपासना पद्धति के भेद के कारण भक्तिकाल के काव्य की निर्गुण और सगुण धारा प्रवाहित हुईं।

निर्गुण काव्य-धारा के भी दो भेद मिलते हैं—प्रथम, निर्गुण पंथ की ज्ञानाश्रयी शाखा एवं द्वितीय प्रेम-मार्गी शाखा। इसी प्रकार सगुण भक्ति-धारा रामभक्ति शाखा तथा कृष्ण भक्ति शाखा, दो रूपों में विभाजित है।

**(1) निर्गुण पंथ की ज्ञानाश्रयी शाखा**—इस शाखा के सन्त, कवियों ने ईश्वर के रंग-रूप-विहीन निराकार रूप की उपासना की। निर्गुण-धारा भारतीय ब्रह्मज्ञान और योग-साधना के साथ इस्लाम के एकेश्वरवाद की उपासना-पद्धति को लेकर अग्रसर हुई। सन्त कवियों ने हिन्दू-मुसलमानों को एक-दूसरे के समीप लाने की दृष्टि से राम-रहीम की एकता का प्रतिपादन करके दो भिन्न हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय की विराट् चेष्टा की। सन्त कवियों ने छूआछूत, अस्पर्श्यता, ऊँच-नीच की भावना, वर्ण एवं जाति-भेद का तिरस्कार किया तथा सहज-साधना, और आडम्बर-रहित सरल और सादगीपूर्ण रहन-सहन पर बल दिया। अधिकांश सन्त कवि जन्मना निम्न जातियों के थे, अतः उन्होंने उच्च वर्णों के आडम्बरपूर्ण जीवन की भर्त्सना की तथा ऊँच-नीच के भेद को अमान्य करते हुए मानव मात्र की एकता का सन्देश दिया। इन सन्त कवियों ने हिन्दू-मुसलमानों में प्रचलित धार्मिक बाह्याडम्बरों यथा मूर्ति-पूजा, तिलक-छापा-तीर्थ-यात्रा ,हज, रोजा, नमाज आदि का अपनी आक्रोशमयी भाषा-शैली में बड़ी तीव्रता के साथ खण्डन किया तथा निश्छल और सरल जीवनयापन पर बल दिया। अधिकांश संत कवि अपढ़ थे, किन्तु उनका अनुभव ज्ञान बहुत समृद्ध था अतः उनके काव्य में अनुभूति की तीव्रता के साथ भाषा का आडम्बर-विहीन सहज रूप मिलता है। संत-काव्य अपनी सन्देश की व्यापकता में महान् है। विशुद्ध मानवता के आधार पर एक नूतन संस्कृति के उद्भव का श्रेय संतों को ही है।

क्रान्ति द्रष्टा कबीर इस धारा के प्रमुख कवि हैं। कबीर के अलावा रैदास, धर्मदास, नानक, सुन्दरदास, मलूकदास, दादूदयाल आदि सन्त कवियों ने सन्त-साहित्य को समृद्ध किया। इनका साहित्य बानियों, साखियों एवं शब्दों में विद्यमान है।

**(2) प्रेममार्गी शाखा**—यह काव्यधारा मुसलमान सूफी-सन्तों की सद्भावना का प्रतिफल है। इनकी उपासना-पद्धति में अल्लाह तक
लिये 'प्रेम की पीर' को बड़ा महत्व दिया है। इस प्रेम
कवियों की धारणा है, साधक ईश्वर को प्रेम के द्वार
है। सूफी मत भारतीय अद्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद ... द्धान्त
है। ईरान के सूफी सन्त सुलेमान फारसी ... आनन्दमय है तथा

सर्वव्यापक बतलाया था। "अल्लाह का नूर सारे खलक में समाया हुआ है" यह धारणा गीता के "वासुदेवः सर्वम्इति" से बहुत मिलती-जुलती है। सूफी कवियों ने अपनी कृतियों के माध्मम से हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय की जो उदात्त और विराट्-चेष्टा की है वह भारतीय संस्कृति और साहित्य में सदैव स्मरणीय रहेगी। जो कार्य सन्त कवियों की प्रताड़नात्मक भाषा-शैली नहीं कर पाई, उसे सूफी कवियों ने अपनी रागात्मक काव्य-शैली के द्वारा कर दिखाया। इन सूफी कवियों ने दोनों जातियों के हृदयगत कोमल तारों को बड़ी मार्मिकता से झंकृत किया है। सूफी प्रेमाख्यानकारों ने भारतीय जन-जीवन की महत्वपूर्ण लोक-कथाओं को आधार बनाकर ठेठ ग्रामीण अवधी भाषा में प्रेमाख्यानों की रचना की तथा उन्हें सूफी सिद्धान्तों के प्रचार का माध्यम बनाया। इन लोक-कथात्मक प्रेमाख्यानों में भारतीय लोक-संस्कृति, रंग-बिरंगी प्रकृति, ऋतुयें, पर्व, त्यौहार आदि का रागात्मक सरस चित्रण मिलता है। सूफी प्रेम-साधना-पद्धति में ईश्वर अथवा अल्लाह को प्रेमिका तथा साधक को प्रेमी माना जाता है। लौकिक प्रेम कहानियों से अलौकिक प्रेम-व्यंजना को व्यंजित करना, इन प्रेमाख्यानकारों का रचनात्मक उद्देश्य रहा है। प्रेममार्गी सूफी काव्यकारों ने अपनी कृतियों को मसनवी शैली में लिखा है। इसमें भारतीय काव्य-शैली—प्रबन्ध काव्य के भी गुण मिलते हैं। इन प्रेम-काव्यों की भाषा ठेठ अवधी है।

हिन्दी में रचित-काव्य एवं प्रेमाख्यान-काव्य परम्परा को समृद्ध करने में प्रेम-मार्गी सूफी कवियों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस काव्यधारा के प्रमुख कवि, 'पद्मावत' प्रेमाख्यान के रचनाकार मलिक मोहम्मद जायसी, 'मधुमालती' के रचयिता मंझन, 'चित्रावली' के रचनाकार उसमान आदि हैं।

(3) **राम-भक्ति शाखा**—रामानुजाचार्य की शिष्य-परम्परा में स्वामी रामानन्द हुए जिन्होंने 'विष्णु' के स्थान पर ईश्वर के रूप में 'राम' की सगुण उपासना-भक्ति का प्रचलन किया। अवतारवाद सगुण उपासना का एक प्रमुख अंग रहा है। सगुण भक्त कवियों का विश्वास रहा है कि असीम ब्रह्म अपनी इच्छा के अनुसार लीला के लिये अवतार ग्रहण करता है। रामानन्द ने लोक हितार्थ लीला करने वाले ब्रह्म स्वरूप राम का आश्रय लिया तथा राम के नाम को मूल-मंत्र बताया। रामानन्द ने भक्ति-आन्दोलन को समान मानवता के धरातल पर लाकर एक नया मोड़ दिया। उसके लिये वह

इैव स्मरण किये जायेंगे। उन्होंने लोक में प्रचलित हिन्दी भाषा को अपनाया था भक्ति के क्षेत्र में शूद्र और स्त्रियों को भक्ति का अधिकारी बतलाया। जाति-पाँति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई"–इस लोक-चलित उक्ति के पीछे रामानन्द की भूमिका का महत्वपूर्ण योग है। मानन्द के ही शिष्य तुलसी हुए जिन्होंने मुसलमान शासकों के समक्ष राभव का अनुभव करती जनता के समक्ष लोकरक्षक धनुर्धारी राम का ल, शक्ति एवं सौन्दर्य से समन्वित उदात्त रूप रखा। यद्यपि राम शाखा में नेक कवि हुए किन्तु उनमें एक मात्र तुलसी ही ऐसे थे जिनके काव्य में राम-क्ति साहित्य की समस्त विशेषतायें विद्यमान हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने ामचरित मानस' जैसे महाकाव्य की रचना करके भारतीय लोक-जीवन ा अत्यधिक प्रभावित किया है। उन्होंने पारिवारिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, माजिक सभी दृष्टियों से आदर्श की प्रतिष्ठा की तथा धार्मिक समन्वय द्वारा ासना पद्धति की विभिन्नता को लेकर संघर्षशील शैवों और वैष्णवों को नता के सूत्र में बाँधा, ज्ञान, भक्ति और कर्म सिद्धान्तों में समन्वय स्थापित या। भारतीय लोक-मानस की गहरी पकड़ रखने वाले तुलसी का महान् क्तित्व समन्वय की विराट् चेष्टा एवं लोक-मंगल की उदात्त भावना से नुप्राणित है।

काव्य-शैली की दृष्टि से राम-काव्य विविधता लिये हुए है। ामचरित मानस' में वीर गाथाओं की प्रबन्ध शैली, 'गीतावली' में गीतशैली, नुमान नाटक' में संवाद शैली मिलती है। राम-काव्य में दोहा, चौपाई, वित्त–सवैया, छप्पय, नाराच आदि छन्दों का प्रयोग मिलता है। राम-काव्य भाषा मुख्यतः अवधी है। कुछ रचनाओं में तुलसी ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

वस्तुतः रामकाव्य जन-जीवन में आशा और उत्साह का संचार करने ला तो है ही, साहित्य-सौष्ठव की दृष्टि से भी महान् है।

(4) **कृष्ण-भक्ति शाखा**—राम-भक्ति शाखा के कवियों ने जहाँ राम लोक-रक्षक रूप जनता के सम्मुख रखा तो कृष्ण-भक्ति शाखा के कवियों अपने आराध्य देव कृष्ण के लोक-रंजक रूप को अपनाया। कृष्ण-भक्ति यतः वल्लभाचार्य के पुष्टि मार्ग से प्रभावित है। वल्लभाचार्य के सिद्धान्त नाम शुद्धाद्वैतवाद है। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म आनन्दमय है तथा

जीव-जगत् उसी के चित्त और सत अंश हैं। कृष्ण ब्रह्म और नित्य है। कृ
को प्राप्त करने का मार्ग अदम्य प्रेम है। कृष्ण भक्त कवियों में यह प्र
वात्सल्य, सख्य और माधुर्य, तीनों रूपों में अभिव्यक्त हुआ है। उन्होंने भा
विभोर होकर लोक-रंजनकारी कृष्ण की लीलाओं का गान किया है। कृष्
भक्ति के प्रचार तथा काव्य-सृजन में वल्लभाचार्य के पुष्टि-मार्ग में दीक्षि
अष्ट छाप के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

हिन्दी काव्य को कृष्ण-भक्ति शाखा के कवियों की अपूर्व देन है
कृष्ण-भक्ति काव्य में वात्सल्य और शृंगार रस की प्रमुखता है। शृंगार-र
के दोनों ही पक्ष-संयोग और विप्रलम्भ का बड़ा हृदयग्राही वर्णन मिलता है
शान्त, वीर, अद्भुत, हास्य और कहीं-कहीं भयंकर तथा रौद्र का भी चित्र
हुआ है।

कृष्ण-भक्त कवियों ने अपना काव्य गेय मुक्तक में लिखा है। उस
प्रबन्ध-रचना नहीं मिलती है। शब्द-शक्ति, अलंकार, काव्य-गुण आदि सभ
दृष्टियों से कृष्ण-काव्य अत्यन्त सम्पन्न है। इसमें ब्रजभाषा का उत्कृष्ट रू
देखने को मिलता है। कृष्ण-भक्ति शाखा के प्रमुख कवियों में सूरदास
अतिरिक्त नन्ददास, मीरा, रसखान, हितहरिवंश आदि हैं।

हमारे देश की संस्कृति और साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल क
महत्वपूर्ण स्थान है। उसमें भारतीय धर्म और संस्कृति के विराट् रूप
दर्शन होते हैं एवं जीवन के नाना क्षेत्रों में समन्वय की विराट् चेष्टा दृष्टि
गोचर होती है। ऊँच-नीच, जाति-पाँति के भेदभाव से ऊपर उठकर मानवत
के धरातल पर धर्म की प्राण-प्रतिष्ठा मिलती है। वस्तुतः भक्तिकाल में ए
ऐसी धार्मिक भावना की उद्भावना होती है, जिसमें किसी अन्य धर्म औ
सम्प्रदायों से विरोध नहीं होता। फलस्वरूप उस युग के अनेक मुसलमान भ
भक्ति-काल के उस प्रवाह में बह गये। हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के समन्वय क
दृष्टि से भी यह काल महत्वपूर्ण है। वस्तुतः विराट् धर्म की विशा
भूमि पर आधारित भक्तिकाल की कविता महान् और उस काल के कवि
अमर हैं।

**उत्तर-मध्य-काल अथवा रीतिकाल :**

रीतिकाल का समय सम्वत् 1700 से सम्वत् 1900 वि. तक मान

जाता है। इसके नामकरण पर विद्वानों में मतभेद हैं। शृंगार-रस की प्रमुखता के कारण कुछ विद्वानों ने इसे 'शृंगार-काल' कहना उचित समझा, किसी ने कला-काल तो किसी ने अलंकार काल आदि नाम दिये। किन्तु इन सब नामों की अपेक्षा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का दिया गया 'रीति काल' नाम ही अधिक प्रचलित है। वस्तुतः इस काल में संस्कृत के काव्य-शास्त्र का अनुसरण करते हुए रीति ग्रन्थों की रचना की गई जिसमें रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द, नायक-नायिका भेद आदि काव्यांगों के भेदोपभेदों पर लक्षण-ग्रन्थ लिखे गये तथा उनके सरस उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये। रीतिकाल में शृंगार-प्रियता और बाह्य-प्रदर्शन की प्रवृत्तियाँ प्रधान थीं। भक्तिकाल की "स्वान्तः सुखाय" रचना प्रवृत्ति एवं "सन्तन कहाँ सीकरी सु काम" जैसे स्वतन्त्रताकामी एवं स्वाभिमानी प्रवृत्ति ने रीतिकाल में आकर कवियों की मनोवृत्ति ने भोग-विलास से युक्त राज्याश्रित दरबारी कवियों के रूप में पाण्डित्य-प्रदर्शन का रूप अपना लिया था। इस काल में भक्तों के आराध्य लीलावतारी राधा-कृष्ण भोग-विलास की क्रियाओं में रत सामान्य नायक-नायिका रह गये थे अतः रीतिकालीन काव्य में नायक-नायिकाओं के भेदोपभेद से युक्त शृंगार रस की प्रधानता मिलती है। अलंकारों के भी सरस और हृदयग्राही वर्णन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। प्रकृति-चित्रण प्रायः उद्दीपन रूप में ही मिलता है। रीतिकाल में ब्रजभाषा का प्रौढ़ और प्राञ्जल रूप देखने को मिलता है। वस्तुतः रीतिकाल के कवि भावुक, सहृदय और निपुण कवि थे। रीतिकाल में तीन प्रकार के कवि हुए—प्रथम, रीति-ग्रन्थकार आचार्य कवि, द्वितीय रीति-बद्ध कवि और रीतिमुक्त अथवा स्वच्छन्द धारा के कवि। प्रथम कोटि के कवि आचार्य पहले थे और कवि बाद में। उन्होंने रीति परिपाटीबद्ध लक्षण-ग्रन्थों की रचना की। इस कोटि में आचार्य केशव का नाम प्रमुख है। इनके 'रसिक प्रिया', 'कवि-प्रिया' रीति-ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध हैं। मतिराम की 'रसराज' और पद्माकर की 'जगदविनोद' रचनायें भी इसी कोटि के ग्रन्थ हैं जिनमें परिभाषा और उदाहरणों सहित रस, अलंकार, नायक-नायिका भेद आदि का साँगोपाँग सरस वर्णन मिलता है।

रीतिबद्ध कवियों ने काव्यांगों की परिभाषापरक विवेचना तो नहीं की किन्तु उनकी रचनायें रीति ग्रन्थों के विवेचित काव्यांगों पर आधारित

थीं। इस कोटि में विहारी और देव का नाम प्रमुख रूप से गिनाया
सकता है।

रीति-मुक्त कवियों के काव्य में युगपरक शृंगार-रस के चित्रण
प्रधानता मिलती है, उन्होंने रीति-ग्रन्थों का सहारा नहीं लिया। वस्तुतः ऐ
कवि प्रेम-रस निमग्न मन-मौजी और स्वच्छन्द कवि थे जिनकी गहन भाव
प्रवणता ने निगूढ़ प्रेम-रस की अजस्र भाव-धारा प्रवाहित की। ऐसे कवि
ने काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष को बिम्बग्राही प्रौढ़ और प्राञ्जल भाषा-शैली
समृद्ध किया। इस कोटि के कवियों में घनानन्द, बोधा और ठाकुर का प्रमु
स्थान है। इनके अतिरिक्त भूषण, लाल, सूदन आदि कवियों ने वीर-रस प्रधा
रचनाएँ भी प्रस्तुत कीं।

**आधुनिक काल :**

आधुनिक काल की काव्य-चेतना का इतिहास सम्वत् 1900 वि
अथवा सन् 1850 ई. से माना जाता है। मुगलकाल का अवसान और अंग्रेज
राज्य की स्थापना के साथ ही पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान के सम्पर्क के सा
आधुनिक युग का प्रारम्भ होता है। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृति
दृष्टि से यह युग एक व्यापक उथल-पुथल का युग है जिसके कारण भारती
बौद्धिक वर्ग के मानसिक बदलाव के साथ परम्परागत चली आ रही काव्य
चेतना में भी व्यापक परिवर्तन हुआ। पद्य के साथ गद्य को प्रमुखता मिली
इस काल तक रीतिकालीन कविता जड़ता और रूढ़िवादिता का शिकार होक
निस्पन्द और प्राण-विहीन हो चली थी। उसमें मौलिकता का ह्रास हो गय
था तथा कवियों की वाणी सामन्ती भोग-विलास का शिकार होकर कु
व्यक्तियों की कुत्सित रुचियों की परितृप्ति का माध्यम रह गई थी। आधुनि
युग में वैचारिक क्रान्ति और जन-चेतना के कारण काव्य-सृजन के क्षेत्र
जड़ता टूटी और गतिशीलता आई। कविता के क्षेत्र में विषय-वस्तु
विविधता के साथ-साथ अभिव्यंजना-शिल्प में भी व्यापक परिवर्तन हुआ
अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से आधुनिक युग की काव्य-चेतना के विका
को मुख्यतः तीन सोपानों में विभक्त किया जा सकता है। यथा—

(1) उन्मेष युग (भारतेन्दु-युग) सन् 1850 से 1900 तक।

(2) सुधार-युग (द्विवेदी-युग) सन् 1900 से 1920 तक।

(3) अभ्युदय-युग सन् 1920 से आज तक।

अभ्युदय युग के अन्तर्गत जो काव्य-धारायें चलीं, वे इस प्रकार हैं—(क) छायावाद (सन् 1920 से 1936 तक)। (ख) प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद (सन् 1936 से 1953 तक)। (ग) नयी कविता (सन् 1953 से 1960 तक) एवं (घ) साठोत्तरी कविता (सन् 1960 से अब तक)।

**(1) उन्मेष युग :**

उन्मेष युग का प्रारम्भ सन् 1850 ई. से माना जाता है। इसी वर्ष आधुनिक काव्य-चेतना के सूत्रधार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ। 'भारतेन्दु' इस युग की काव्य-प्रेरणा के केन्द्र थे। उन्होंने हिन्दी साहित्य की धारा को श्रृंगार कालीन परम्पराओं और रूढ़ियों के बन्धन से मुक्त कर राष्ट्रीयता और समाज-सुधार आदि की नई दिशा की ओर मोड़ा। तत्कालीन राजनैतिक चेतना, सामाजिक-सुधार-आन्दोलन धार्मिक और आर्थिक शक्तियों की नयी पृष्ठभूमि काव्य की विषय-वस्तु पर व्यापक प्रभाव डालने लगी। फलतः इस युग की कविता विषय-वस्तु की विविधता से ओत-प्रोत है। इस युग की कविता में मुख्यतः राज-भक्ति, स्वदेश एवं स्वभाषा, प्रेम सामाजिक दुरावस्था के प्रति क्षोभ, सामाजिक कुरीतियों का खण्डन, विधवाओं की शोचनीय दशा, बाल-विवाह, रूढ़ियों का खण्डन, स्त्री–स्वतन्त्रता की पक्ष-धरता आदि अनेक विषयों पर कवितायें रची गईं। इस काल की कविता में प्राचीन गौरव के प्रति लगाव और स्वतन्त्रता-प्राप्ति की झलक भी अभिव्यक्त हुई। भारतेन्दु काल की कविता में प्रकृति का आलम्बन रूप से चित्रण मिलता है। काव्य की भाषा प्रायः ब्रजभाषा रही, यद्यपि छुट-पुट रूप में खड़ी बोली में रचना प्रवृत्ति के उदाहरण मिलते हैं जो नगण्य हैं। इस युग में मुक्तक और प्रबन्ध दोनों तरह के काव्य का सृजन हुआ। गीति-काव्य की रचना को इस युग में प्रधानता मिली। भारतेन्दु युग की काव्यधारा में नवयुग की चेतना का प्रमुख रूप श्रृंगार काल की सामन्ती संस्कृति के स्थान पर जनवादी विचारधारा को अपनाना है। इस युग के कवि राज्याश्रित न होकर जन-जीवन से गहराई से जुड़े हुए थे। जन-मन की वाणी, भावों और विचारों को अभिव्यक्त करना कविता का मुख्य लक्ष्य हो गया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रताप नारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहन सिंह, राधाचरण गोस्वामी आदि इस युग के प्रमुख कवि हैं।

**(2) सुधार युग :**

सन् 1900 से 1920 तक हिन्दी का द्विवेदी युग है। इस युग के प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे जिन्होंने खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में स्थिर किया तथा भाषा की शुद्धता तथा सरलता पर बल दिया। इस युग की कविता इतिवृत्तात्मक है। स्वतन्त्रता-आन्दोलन से सम्बद्ध होने के कारण मातृभूमि-प्रेम और स्वदेशी के प्रति गौरव की भावना इस युग की कविता के प्राण तत्व कहे जा सकते हैं। मर्यादावाद और आदर्शवाद इसके प्रमुख लक्षण हैं। द्विवेदी युग की काव्य-धारा के मूल में राष्ट्र प्रेम, बुद्धिवाद और मानवतावाद की प्रवृत्तियाँ काम कर रही थीं, जिसके फलस्वरूप नारी-व्यक्तित्व के प्रति उच्च भावना प्रगट हुई और शोषित और उत्पीड़ित वर्ग के प्रति व्यापक सहानुभूति के स्वर मुखरित हुए।

काव्य की विषय-वस्तु एवं काव्य रूपों की दृष्टि से द्विवेदी युग अत्यन्त व्यापक और वैविध्यपूर्ण है। काव्य रूपों के प्रकरण में अतुकान्त रचना का प्रभाव अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क का प्रभाव है। इसी भाँति इस युग के महाकाव्य का रूप भी पाश्चात्य परम्परा के समीप है। भाषा के क्षेत्र में खड़ी बोली स्थापित हो गई तथा काव्य में उसके सरल और परिमार्जित रूप का प्रयोग होने लगा। इस युग में 'प्रियप्रवास' और 'साकेत' जैसे उच्चकोटि के महाकाव्य लिखे गये। द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', माखनलाल चतुर्वेदी, मुकुटधर पाण्डेय, सियारामशरण गुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

**(3) अभ्युदय युग :**

हिन्दी-कविता के इतिहास में अभ्युदय युग का प्रारम्भ छायावादी काव्य-धारा से होता है। सन् 1920 के आस-पास हिन्दी कविता एक युगान्तकारी मोड़ लेती है। उस पर पश्चिम की काव्य-प्रवृत्ति 'स्वच्छन्दतावाद' का व्यापक प्रभाव पड़ता दिखलाई देता है। वस्तुतः छायावाद द्विवेदी काल की वस्तुनिष्ठ स्थूल और इतिवृत्तात्मक कविता के विरुद्ध 'सूक्ष्म' का विद्रोह माना जाता है। इस काव्य में मन की आन्तरिक अनुभूतियों और रागात्मक तत्व को प्रधानता मिलती है। प्रकृति के प्रति भी कवियों का नया दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। वे प्रकृति में मानवीय संवेदना तथा

व्यक्त-सत्ता का देखने लगते हैं जिसके कारण प्रकृति का मानवीकरण ने के साथ-साथ रहस्यवादी भावना का स्फुरण होता है । प्रथम युद्ध ा विभीषिका के परिणामस्वरूप उस युग के कवियों में विषाद और निराशा ा भावना जन्म लेने लगती है और वे बहिर्मुखी न रहकर अन्तर्मुखी हो उठते हैं । इसके प्रभाव के कारण तत्कालीन काव्य-रचना में भी विषाद और रुणा के स्वर मुखरित हो उठते हैं । अलौकिक के प्रति विरहानुभूति, विषाद ार करुणा के स्वर महादेवी वर्मा के गीतों में अनुगूँजित हैं । वेदान्त, शैव एवं रविन्द दर्शन के प्रभाव के कारण सर्वात्मवाद, मानवतावाद, समन्वयवाद तथा ादर्शवाद छायावादी कविता की भाव-भूमि निर्मित करते हैं । अतिशय कोमल ल्पना, सौन्दर्य-बोध एवं सूक्ष्म भावों की अनुभूति उस युग के काव्य की शेषता है ।

छायावाद-युग की कविता की विषय-वस्तु के उक्त बदलाव का प्रभाव सकी अभिव्यंजना शैली पर भी पड़ता है । सूक्ष्म अनुभूतियों को अभिव्यक्त रने में समर्थ भाषा का तत्सम प्रधान कोमल रूप सामने आता है । भाषा-ली नये प्रतीक-विधान, बिम्ब-योजना, चित्रोपमता एवं लाक्षणिक व्यंजना युक्त होती है । अलंकार में विशेषण-विपर्यय और मानवीकरण जैसे नये लंकार आ जुड़ते हैं । काव्यरूपों की दृष्टि से भी छायावादी काव्य अत्यन्त मृद्ध है । उसमें मुक्त-छन्द और गीति-काव्य की प्रचुरता मिलती है, साथ ही ाँसू' और 'तुलसीदास' जैसे खण्ड-काव्य रचे जाते हैं । हिन्दी साहित्य ो कामायनी जैसा महत्वपूर्ण महाकाव्य छायावाद युग ही की देन है । प्रसाद, न्त, निराला महादेवी वर्मा इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं ।

**गतिवादी काव्यधारा :**

छायावाद की अत्यधिक कोमल-कान्त कल्पना, वायवी आदर्शवाद एवं यक्ति-निष्ठता के प्रतिक्रिया स्वरूप प्रगतिवादी काव्यधारा का प्रारम्भ सन् 936 से होता है । प्रगतिवाद काव्यधारा की मूल प्रेरणा 'सामाजिक चेतना' । सन् 1935–36 के आस-पास भारतीय राजनीति में समाजवादी एवं ाम्यवादी विचारधारा का समावेश होता है जिसका प्रभाव तत्कालीन काव्य-ारा में परिलक्षित होने लगता है । भारतीय चिन्तन को मार्क्सवादी विचार-ारा गहराई से प्रभावित करने लगती है जिसकी अभिव्यक्ति प्रगतिवादी काव्य

में होती है। प्रगतिवादी काव्यधारा का वैचारिक आधार कार्ल मार्क्स निरूपित द्वन्द्वात्मक भौतिवाद का सिद्धान्त है जिसके अन्तर्गत वर्ग- अनिवार्य है। प्रगतिवादी काव्य वर्ग-वैषम्य शोषण और उत्पीड़न पर आ रित पूँजीवाद एवं साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध आवाज उठाता है सामाजिक भेदभाव और आर्थिक विषमता मिटाना चाहता है। प्रगति शोषित वर्ग, किसानों एवं मजदूरों का पक्षधर है। जीवन के यथार्थ स्व का कलात्मक उद्घाटन तथा नारी-स्वातन्त्रय की पुकार प्रगतिवादी का धारा की मुख्य विशेषतायें हैं। शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध जन-साम में राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से लिखा के कारण प्रगतिवादी काव्य की भाषा-शैली सहज और सुगम है। उसके रू और प्रतीक जन-जीवन से लिये गये हैं। प्रगतिवादी कवियों में दिन 'सुमन' केदारनाथ अग्रवाल, गिरिजाकुमार माथुर, नागार्जुन, मुक्ति बं शमशेर, राँगेय राघव, नरेन्द्र शर्मा, अंचल, त्रिलोचन तथा रामविलास के नाम उल्लेखनीय हैं।

**प्रयोगवाद :**

छायावादी भावुकता, वायवी-चित्रण, आदर्शवाद के प्रतिक्रिया-स्व जिस दूसरी काव्यधारा का जन्म होता है उसे 'प्रयोगवाद' कहा जाने लग प्रगतिवादी काव्य की मूल-प्रेरणा जहाँ 'सामाजिक चेतना' थी, वहाँ प्रयो वाद के मूल में घोर वैयक्तिकता एवं अति बौद्धिकता की प्रवृत्तियाँ काम क लगीं। इस काव्य-धारा का आविर्भाव सन् 1943 ई. में अज्ञेय द्वारा सम्पा 'तार सप्तक' के प्रकाशन से माना जाता है। 'तार सप्तक' की भूमिका उल्लखित 'अज्ञेय' के मतानुसार प्रयोगवादी कवि कविता को प्रयोग विषय मानते हैं तथा वे सब अलग-अलग राहों के अन्वेषी हैं। प्रयोग प्रवृ पर अत्यधिक बल दिये जाने के कारण इस काव्यधारा की कविताओं विषय-वस्तु एवं शिल्प पक्ष पर नित-नये प्रयोग किये जाने लगे, यहाँ तक केवल 'प्रयोग के लिये प्रयोग' होने लगे। कुण्ठा, संत्रास, अजनबीपन, टूट अनास्था, अस्वीकृति आदि की मनोभावनायें इस काव्य में परिलक्षित हो लगीं। द्वितीय युद्ध की विभीषिका ने मानव-मूल्यों के विघटन, ईश्वर अविश्वास और अनास्था के स्वरों को मुखरित किया। इसमें फ्रायड़

मनोविश्लेषण के सिद्धान्त के प्रभाव के कारण काम-कुण्ठाओं का खुला चित्रण होने लगा। प्रयोगवादी काव्य में रागात्मक तत्व का अभाव, अहं की जटिल व्यक्तिगत अनुभूतियाँ एवं अति बौद्धिकता के कारण अस्पष्टता और दुरूहता आ गई तथा उलझी मानसिकता के कारण अभिव्यक्ति की सम्प्रेषणता का संकट आ खड़ा हुआ। इस काव्य-धारा ने छन्द-विधान को पूरी तरह नकार दिया और भाषा गद्य के अधिक निकट हो गई। अज्ञेय, शमशेर, गिरिजाकुमार माथुर, भारती, भारतभूषण अग्रवाल, नेमीचन्द जैन आदि इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।

**नयी कविता :**

नयी कविता काव्य-प्रवृत्ति का प्रारम्भ 'नये पत्ते' (1953 ई.) के प्रकाशन से माना जाता है। वस्तुतः यह प्रयोगवाद का ही परिवर्तित एवं विकसित रूप है। जगदीश गुप्त द्वारा सम्पादित 'नयी कविता' पत्रिका ने इस काव्य-प्रवृत्ति को आधार-भूमि प्रदान की। नयी कविता के काव्य-मूल्यों में आधुनिक भाव-बोध अनुभूति की सच्चाई, जीवन के प्रति निष्ठा और लोक-सम्पृक्ति" पर विशेष बल दिया गया है। व्यंग्यपरकता नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्ति लक्षित होती है। आधुनिक युग की असंगतियाँ और विद्रूप पर इन कवियों ने प्रतीकों के माध्यम से चुभते व्यंग्य किये हैं। विवेक-सम्मत खुले यथार्थ का चित्रण नयी कविता में प्रभावशाली ढंग से हुआ है। नये प्रतीकों एवं बिम्बों से युक्त भाषा ने नयी भंगिमा प्रदान की। जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकान्त वर्मा, अज्ञेय, मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, राजकमल चौधरी, कुंवर-नारायण साही, केदारनाथसिंह आदि इस धारा के प्रमुख कवि हैं।

सारांश में हम कह सकते हैं कि हिन्दी का लगभग एक सहस्र वर्ष का इतिहास विविध भाव-भंगिमाओं, नाना प्रकार की विचारधाराओं, काव्य-पद्धतियों से सम्पन्न अनुभूति और अभिव्यक्ति पक्ष की दृष्टि से प्रौढ़ और समृद्ध है। विश्व-काव्य के समक्ष हिन्दी काव्य की समृद्ध परम्परा पर हम निसंकोचपूर्वक गर्व का अनुभव कर सकते हैं। आशा है अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिये हिन्दी कविता के ऐतिहासिक विकास-क्रम का यह विवेचन उपादेय सिद्ध होगा।

—डॉ. रामगोपाल गोयल

# कबीर

## जन्म सं. 1455 ☐ मृत्यु सं. 1575

**जीवन-परिचय :**

भक्तिकाल की ज्ञानाश्रयी निर्गुण शाखा के कवियों में कबीर का प्रमुख स्थान है। वे एक क्रान्तिदृष्टा, युग-प्रवर्तक सन्त कवि थे जिन्होंने अपने युग की विषमता और विद्रूपता का विषपान करते हुए युग की चेतना को कबीर वाणी में अमृत-रस का पान कराके समतामूलक मानवता का सन्देश दिया था। उनके जन्म और प्रारम्भिक जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार कबीर का जन्म एक विधवा ब्राह्मणी की कोख से काशी में सम्वत् 1455 में हुआ था। लोक-लाज के भय से अपनी जन्मदात्री के द्वारा लहर तारा तालाब के किनारे फेंक दिये जाने के पश्चात् नीरू तथा नीमा नामक एक जुलाहा दम्पति ने उनका पालन-पोषण किया था। यह बात तो निश्चित है कि वे कर्म और जाति से जुलाहे थे। उनकी पत्नी का नाम लोई था तथा पुत्र का नाम कमाल था। बड़े होने पर वे स्वामी रामानन्द के शिष्य बन गये। श्रम-निष्ठा में कबीर की अटूट आस्था थी और अपने जुलाहा-कर्म पर उन्हें अभिमान था। कबीर ने 'चरखा' और उस पर सूत कातने की प्रक्रिया के प्रतीकों के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों और दर्शन के गूढ़ तत्वों को जिस प्रभावशाली ढंग से वर्णन किया है, वैसा अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। कबीर को पढ़ने-लिखने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। जो कुछ ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया वह साधु-सन्तों की संगति और अपने घुमक्कड़ जीवन से प्राप्त किया। अनुभूत सत्य ही उनके जीवन की खरी पूँजी थी। कबीर सन्त और समाजसुधारक पहले थे, कवि बाद में। वे सब धर्मों की समानता में विश्वास रखते थे तथा "राम और रहीम" की एकता प्रतिपादित करते हुए उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों की एकता पर बल दिया था। एक समाज-सुधारक के रूप में उन्होंने जन्मगत ऊँच-नीच वर्ण-भेद, जाति-पांति आदि भेदभाव पर जबर्दस्त प्रहार किया था, धार्मिक पाखण्ड और मिथ्याचारों का पर्दाफ़ाश किया था। कबीर स्वाभिमानी और निर्भीक व्यक्ति थे। हिन्दू और मुसलमान दोनों के धर्मों की भूलों पर उन्होंने समान रूप से कटाक्ष किया। वस्तुतः व

ामदर्शी थे। उन्होंने समाज, राजनीति, और धर्म, सभी में समरसता लाने की उज्ज्वल चेष्टा की तथा मानवता की सामान्य भूमि पर आधारित एक ऐसे ामान्य धर्म की प्राण-प्रतिष्ठा की जो सर्वजनीन और सहज था, जिसमें ात्व, अहिंसा, अपरिग्रह, धैर्य, दया, क्षमा आदि व्यापक प्रेम-तत्व निहित थे। ह मानव धर्म ही "कबीर वाणी" में प्रस्फुटित हुआ जो सर्व साधारण में हज ग्राह्य था। इस दृष्टि से आधुनिक सन्दर्भ में भी कबीर की प्रासंगिकता असंदिग्ध है। ऐसा माना जाता है कि उनकी मृत्यु सम्वत् 1575 में "मगहर" ां हुई।

**रचनायें :**

यद्यपि कबीर द्वारा रचित अनेक पुस्तकों का उल्लेख मिलता है तथापि उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' मानी जाती है जिसे उनके शिष्य धर्मदास ा लिपिबद्ध किया था। 'बीजक' के तीन भाग हैं—साखी, सबद और मैनी। साखी शब्द का शुद्ध रूप 'साक्षी' जो अनुभूत सत्य का परिचायक ै। इनमें गुरु अपने उपदेश शिष्य को प्रदान करता है। 'सबदी' में आध्या-त्मक प्रेम की अनुभूतियाँ गेय पदों में लिखी गई हैं तथा "रमैनी" दोहे और चौपाई में लिखी गई रचनायें हैं।

**ावगत विशेषतायें :**

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, कबीर संत पहले थे और कवि बाद में। अतः उनमें काव्य-शास्त्र के नियम–उपनियम ढूँढना बेमानी होगा। वस्तुतः कविता करना उनका उद्देश्य भी नहीं था। उन्होंने तो अपने जीवन में सहज सत्य का जिस रूप में साक्षात्कार किया, उसे बड़ी सहजता व निश्छलता से अभिव्यक्त कर दिया। अपने जीवन के अनुभूत सत्य अथवा अनुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। अनुभूति की ाहनता, तीव्रता और व्यापकता जो काव्य का प्राण-तत्व होती है और जिसके द्वारा काव्य कालजयी बनता है, वह कबीर के काव्य में गन्ने में मिठास की भाँति सर्वत्र व्याप्त है। यही तत्व कबीर के काव्य को कालजयी बनाने में सक्षम है। कबीर का काव्य जीवन की नाना प्रकार की रंग-छवियों, दर्शन गूढ़ तत्वों तथा आध्यात्मिक अनुभूतियों से अनुरंजित है। जहाँ वह अ होकर अपनी एकान्त रहस्यात्मक अनुभूतियों का चित्र

उनकी अभिव्यक्ति भी रागदीप्त हो उठती है। भाषा की कोमल क
पदावली, रूपकों और उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के माध्यम से चित्रोपम
बिम्बात्मक हो उठती है जिससे अमूर्त और निगूढ़ दर्शन तत्व और आध्यात्मि
अनुभूतियाँ पाठक के लिये सहज ग्राह्य हो जाती हैं। पत्नी के रूप में क
ने आत्मा-परमात्मा के विरह-मिलन की राग-रंजित जो छवियाँ चित्रित
हैं, वही उनका भावात्मक रहस्यवाद कहलाता है। जहाँ दर्शन के गूढ़ तत्वों
आधार पर अद्वैतवाद, जीवात्मा और परमात्मा की एकता के रूपक बाँधे
वहाँ कबीर का साधनात्मक रहस्यवादी का रूप प्रकट होता है। किन्तु ज
कबीर नाथ पंथियों के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर हठयोग की साधना इड़
पिंगला, सुषुम्ना आदि प्रतीकों के माध्यम से साधना-पद्धतियों का निरूप
करते हैं, वहाँ उनकी कविता नीरस हो जाती है। उलटबासियों के रूप
भाषा भी अनगढ़ और दुरूह हो जाती है। एक समाज-सुधारक के रूप
कबीर ने जहाँ समाज में व्याप्त नाना प्रकार की सामाजिक कुरीतियों
चित्रण किया है, वहाँ उनकी भाषा, शैली आक्रामक और ओज गुण प्रधान
उठती है। अपने युग में प्रचलित धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक विषमता त
धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि नाना प्रकार के वर्गभेद आदि प्रवृत्तियों पर अप
व्यंग्यपरक शैली में जो तीखे प्रहार किये हैं, वे यह सिद्ध करने के लिये पर्या
हैं कि कबीर एक जबर्दस्त व्यंग्य लेखक थे।

कबीर की भाषा उनके भावों की अनुगामिनी है। उनकी भाषा
"सधुक्कड़ी" कहा जाता है जिसमें ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, राजस्थानी
पंजाबी भाषाओं का विचित्र मिश्रण है, किन्तु वह सहज और प्रवाहमयी है
कबीर का मस्त मौला एवं अक्खड़ स्वभाव जिस प्रकार उनके व्यक्तित्व
विशेषता है, उसी प्रकार उनकी भाषा का सहज-स्वाभाविक "अनगढ़पन
उनके काव्य की कमजोरी नहीं वरन् विशेषता है। उनके काव्य में उपम
रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति आदि अलंकार भी अनायास और सहज रूप
आये हैं। भाषागत अनगढ़ता आदि को लेकर काव्य के मर्मज्ञ उनके कलाप
की कमजोरियाँ तलाश कर सकते हैं, किन्तु उनका भावपक्ष निस्सन्देह सम्पुष्
और समृद्ध है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

प्रस्तुत संग्रह में गुरु–महिमा, स्मरण, ब्रह्म का अस्तित्व, धार्मि

ाडम्बर का खण्डन, प्रेम, साधु की संगति, काम-क्रोध आदि की निन्दा, श्वर की एकता, ज्ञान की आँधी आदि के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण साखियों था पदों को संकलित किया गया है। भाषा की दृष्टि से सरलता का ध्यान रखा गया है। कबीर की इन रचनाओं का अध्ययन भाव-पक्ष की दृष्टि अधिक महत्वपूर्ण है। कबीर की प्रतीकात्मक शैली को समझना भी पयोगी होगा।

## कबीर

**रु-महिमा :**

सत गुर की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावण हार ॥ 1 ॥
सत गुर साँचा सूरिवां, सबद जु बाहा एक।
लागत ही मैं मिल गया, पडया कलेजे छेक ॥ 2 ॥

**मिरण :**

कबीर सुमिरण सार है और सकल जंजाल।
आदि अंति सब सोधिया, दूजा देखौ काल ॥ 3 ॥
कबीर निरभै राम जपि, जब लग दीवै बाति।
तेल घट्या बाती बुझी, सोवेगा दिन-राति ॥ 4 ॥
बहुत दिनन की जोवंती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूं, मनि नाहीं विश्राम ॥ 5 ॥
भगति भजन हरि नांव है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा, वाचा, कर्मणां, कबीर सुमिरण सार ॥ 6 ॥

**ाबद :**

कबीर सबद सरीर मैं, बिनि गुण बाजै तंत।
बाहरि भीतरि भरि रह्या, ताथै छूटि भरंति ॥ 7 ॥
सबद बराबर धन नहीं, जो कोई जानै बोल।
हीरा तो दामों मिलैं, सब्दहीं मोल न तोल ॥ 8 ॥
सीतल सब्द उच्चारिये, अहम् आनिए नाहिं।
तेरा प्रीतम तुज्झ में, सत्रू भी तुझ माहिं ॥ 9 ॥

**सीख :**

कबिरा दुनिया देहरे, सीस नवावन जाय।
हिरदे माहीं हरि बसै, तू ताही लौ लाय ॥ 10 ॥
दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की स्वांस से, लोह भसम ह्वै जाय ॥ 11 ॥

**विविध :**

बिरहनि देय संदेसरा, सुने हमारे पीव।
जल बिन मछली क्यों जिए, पानी में का जीव ॥ 12 ॥
उठा बगूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास।
तिनका-तिनका से मिला, तिनका तिनके पास ॥ 13 ॥
राम रसाइन प्रेम रस, पीवन अधिक रसाल।
कबीर पीवणं दुलंभ, है, मांगे सीस कलाल ॥ 14 ॥
कागद लिखै सो कागदी, की व्योहारी जीव
आतम दृष्टि कहां लिखे, जित देखै तित पीव ॥ 15 ॥
औगुन को तो ना गहै, गुनही को ले बीन।
घट-घट महके मधुप ज्यों, परमातम ले चीन ॥ 16 ॥
कबीर संगति साध की, कदे न निष्फल होइ।
चंदन हासी बांबना, नीब न कहसी कोइ ॥ 17 ॥
मूरखि संग न कीजिए, लोहा जलि न तिराइ।
कदली सीप भवंग मुषी, एक बूंद तिहुं भाइ ॥ 18 ॥
कागद केरी नांवरी, पांणी केरी गंग।
कहै कबीर कैसे तिरूं, पंच कुसंगी संग ॥ 19 ॥
कामी, क्रोधी, लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय ॥ 20 ॥

**पदावली :**

दुलहिन गावो मंगलाचार।
हम घरि आये हो राजा राम भरतार ॥
तन रति करि मैं मन रति करिहौं पंच तत बाराती।
रामदेव मोरे पाहुन आये, मैं जोबन मदमाती ॥

सरीर सरोवर बेदी करि हौं, ब्रह्मा वेद उचार।
रामदेव संग भांवरि लैहौं, धन–धन भाग हमार ।।
सुर तैंतीसों कौतुक आये, मनिवर सहस अठासी।
कह कबीर व्याहि चले हैं, पुरुष एक अविनासी ।।

भाई रे, दुई जगदीश कहां ते आया, बहु कौने भरमाया।
अल्लह-राम-करीमा कैसो रहो, हजरत नाम धराया ।।
गहना एक कनक ते गढ़ना, इनि महं भाव न दूजा।
कहन-सुनन को दुर करि थापे, इक निमाज इक पूजा ।।
वही महादेव, वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये।
को हिन्दू को तुरुक कहावै, एक जिमी पर रहिये ।।
बेद–किनेब पढ़े वे कुतबा, वे मौलाना वे पांडे।
बेगरि–बेगरि नाम धराबे, एक मुठिया के भांडे ।।
कहहिं कबीर वे दोनों भूले, रामहिं किनहुं न पाया।
वे खस्सी वे गाय कटावैं, वादहिं जनम गंवाया ।।

सन्तो भाई, आई ज्ञान की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ांणी, माया रहै न बांधी रे ।।
हित चित की द्वै थूंनी गिरांनी, मोह बलींडा टूटा।
त्रिस्नां छानि परी धर ऊपर कुबुद्धि का भांडा फूटा ।।
जोग जुगुति करि सन्तो बांधी, निरचू चुवै न पांणी।
कूड़ कपट काया का निकस्यां, हरि की गति सब जाणी ।।
आंधी पीछे जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीना।
कहै कबीर भान के प्रगटै, उदित भया तम पीना ।।

झीनी-झीनी वीनी चदरिया।

काहे कै ताना, काहे के भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया।
इंगला-पिंगला ताना भरनी, सुसमन तार से बीनी चदरिया।
आठ कंवल दल चरखा डोले, पाँच तत गुनी तीनी चदरिया ।।
साईं को सियत मास दस लागे, ठोक-ठोक के बीनी चदरिया।
सो चादर सुर-नर-मुनि ओढ़िन, ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़िन, ज्यों की त्यों घर दीनी चदरिया ।।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कला पक्ष :**

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप खड़ी बोली में लिखिए :
   अनंत, उपगार, निरभै, तुज्झमें, संदेसरा, भवंग, जोबन, मुनिव
   त्रिस्नां।
2. कबीर की प्रस्तुत रचनाओं में से तत्सम शब्दों की सूची बनाइए तथ
   उनके अर्थ भी लिखिए।
3. कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा क्यों कहा जाता है ?
4. "कबीर निरभै.................................सौवेगा दिन राति।"
   इस दोहे में कौन सा अलंकार है ?
   (क) उपमा (ख) उत्प्रेक्षा
   (ग) रूपक (घ) विरोधाभास
   (ङ) असंगति (
5. "झीनी झीनी बीनी चदरिया"
   इस पद पर गीति-काव्य की दृष्टि से टिप्पणी लिखिए।

**भावपक्ष—**

6. कबीर गुरु का अनन्त उपकार कैसे मानते हैं ?
7. "प्रभु-स्मरण" ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिये।
   इस सम्बन्ध में कबीर के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखिए।
8. "सीतल शब्द.........................अहम् आनिए नाहिं।"
   इस पंक्ति में "अहम् आनिए नाहिं" से क्या तात्पर्य है ?
9. कबीर के अनुसार दुर्बल को पीड़ा पहुँचाने से क्या हानि ह
   सकती है ?
10. "माँगे सीस कलाल" इस कथन का क्या आशय है ?
11. कबीर के अनुसार परमात्मा को पहचानने की क्या विधि है ?
12. "ईश्वर एक ही है" इस सम्बन्ध में कबीर ने क्या तर्क प्रस्तुत
    किये हैं ?
13. भक्ति युग में ज्ञान मार्गी शाखा की प्रमुख विशेषताएँ कौन-कौन सी है
    और उनका समावेश कबीर की रचनाओं में किस प्रकार हुआ है ?
    पठित रचनाओं के आधार पर समझाकर लिखिए।

# जायसी

## जन्म सं. 1550 □ मृत्यु सं. 1600

**जीवन-परिचय :**

भक्तिकाल की प्रेम-मार्गी सूफी काव्य-धारा के प्रमुख कवि जायसी भारत की सर्वधर्म समन्वयशील संस्कृति के मानवतावादी काव्य-सृष्टा हैं। आपने भारतीय जन-जीवन में प्रचलित लोककथाओं को लेकर प्रेम-तत्व पर आधारित सूफी-दर्शन का निरूपण किया तथा हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के समन्वय की उदात्त चेष्टा की। मलिक मुहम्मद जायसी रायबरेली जिले के जायस नामक ग्राम के रहने वाले थे, इसीलिये उनका नाम जायसी पड़ा। मलिक (नवाबों की उपाधि) उनकी पैतृक उपाधि थी। वे प्रतिभा के धनी थे किन्तु शारीरिक दृष्टि से कुरूप थे। उन्हें अपनी कुरूपता पर भी गर्व था क्योंकि वह ईश्वर की देन थी। जायसी को अपनी प्रतिभा के कारण अनेक बार राज्याश्रय प्राप्त हुआ किन्तु अन्तिम राज्याश्रय अमेठी नरेश का था। जायसी के आशीर्वाद से अमेठी नरेश को पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। अतः वे जायसी का बड़ा सम्मान करते थे।

**रचनायें :**

जायसी 20 ग्रन्थों के रचयिता माने जाते हैं किन्तु अब तक उनकी पाँच रचनाएँ ही उपलब्ध हो सकी हैं : (1) पद्मावत (2) अखरावट (3) आखिरी कलाम (4) कहरनामा (5) चित्ररेखा। इन रचनाओं में 'पद्मावत' हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है जिसे हिन्दी का प्रथम महाकाव्य कहा जा सकता है। इसमें जायसी ने रानी पद्मावती, राजा रतनसेन तथा अलाउद्दीन की ऐतिहासिक कथा को कल्पना का रंग देकर सूफी-दर्शन का प्रतिपादन किया है। यह कथा लौकिक तथा अलौकिक प्रेम का सुन्दर मिश्रण है।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि 'पद्मावत' जायसी की कीर्ति का आधार है। इसमें कवि ने लौकिक प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम का रूप दिया है। सूफी दर्शन में आत्मा को पुरुष और परमात्मा को नारी रूप में देखा गया है। 'पद्मावत' में पदमावती परमात्मा है। राजा रतनसेन आत्मा है।

रतनसेन का मंत्री, राघव चेतन शैतान अलाउद्दीन खिलजी माया है। र
रतनसेन (आत्मा), रानी पद्मावती (परमात्मा) को प्राप्त करना चाहत
किन्तु राघवचेतन (शैतान) और अलाउद्दीन (माया) उसके मार्ग में ब
पहुँचाते हैं।

जायसी "प्रेम और पीर" के कवि माने जाते हैं। इनके काव्य
शृंगार रस के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर समन्वय हुआ है
नागमती का विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रख
है। प्रेम और शृंगार के अतिरिक्त इनके काव्य में प्रकृति-वर्णन, गुरु-महिम
द्वीप, नगर, राज-भवन, दुर्ग आदि का वर्णन भी काफी आकर्षक बन पड़ा है

जायसी के काव्य की भाषा अवधी है। 'पद्मावत' दोहा-चौपाई छन्दों
मसनवी शैली पर लिखा गया महाकाव्य है। जायसी ने अपने काव्य में उपम
रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

प्रस्तुत रचना 'पद्मावत' महाकाव्य के "बन्धन मोक्ष पद्मावत
मिलन" खण्ड से ली गई है। राजा रतनसेन के आने पर विरह-पीड़ित रा
पद्मावती पर क्या प्रतिक्रिया होती है—इसका अत्यन्त सजीव वर्णन कि
गया है। राजा रतनसेन को देखकर रानी पद्मावती इस प्रकार विकसि
(प्रसन्न) होती है जैसे सूर्य को देखकर कमल विकसित होता है। रा
पद्मावती अपना शृंगार करती है और अपनी सखी सहेलियों सहित आद
पूर्वक राजा का स्वागत करती है।

"पंथ पूरि कै, दिस्टि बिछावौं
तुम्ह पग धरहु, सीस मैं लावौं।"

इन पंक्तियों में रानी पद्मावती की अपने प्रियतम के प्रति समर्पण
भावना बड़ी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुई है। प्रस्तुत पद्य में ठेठ अव
भाषा के मिठास और प्रवाह के साथ-साथ भावों की सहज कोमल अभिव्यि
अत्यन्त सराहनीय है।

## जायसी

**बन्धन-मोक्ष पद्मावती-मिलन खण्ड—**

पद्मावति मन रही जो भूरी।
सुनत सरोवर-हिय गा पूरी।।

अद्रा महि–हुलास जिमि होई।
सुख सोहाग आदर भा सोई ।।
नलिन नीक दल कीन्ह अंकूरू।
विगसा कंवल उवा जब सूरू ।।
पुरइनि पूर संवारे पाता।
औ सिर आनि धरा विधि छाता ।।
लागेउ उदय होइ जस भोरा।
रैनि गई दिन कीन्ह अंजोरा ।।
अस्ति-अस्ति कै पाई कला।
आगे बली कटक सब चला ।।
देखि चाँद अस पद्मिनी रानी।
सखी कुमोद सबै विगसानी ।।
गहन छूट दिनअर कर, ससि सौं भएउ मेराव।
मन्दिर सिंघासन साजा, बाजा नगर बधाव ।।
विहंसी चाँद देइ माँग सेंदूरू।
आरति करै चली जहं सूरू ।।
औ गौहन ससि नखत तराईं।
चितउर कै रानी जहं ताईं ।।
जनु बसन्त ऋतु पलुही छूटीं।
की सावन महं वीर बहूटी ।।
भा अनन्द बाजा घन तूरू।
जगत रात होइ चला सेंदूरू ।।
डफ मृदंग मन्दिर बहु साजे।
इन्द्र सबद सुनि सबै सौ लाजै ।।
राजा जहां सूर परगासा।
पद्मावति मुख कंवल विगासा ।।
कंवल पांय सूरज के परा।
सूरज कंवल आनि सिर धरा ।।
सेंदुर फूल तमोल सौं, सखी सहेली साथ।
धनि पूजे पिउ पाँय दुई, पिउ पूजा धन माथ ।। 2 ।।

पूजा कौनि देउं तुम्ह राजा।
सबै तुम्हार, आव मोहि लाजा॥
तन मन जोवन, आरति करऊं।
जीव काढ़ि, नेवछावरिं धरऊं॥
पंथ पूरि कै, दिस्टि बिछावौं।
तुम पग धरहु, सीस मैं लावौं॥
पाँय निहारत, पलक न मारौं।
बरुनी सेति, चरन–रज झारौं॥
हिय सो मन्दिर, तुम्हरै नाहा।
नैन-पंथ, पैठहु तेहि माहाँ॥
बैठहु पाट, छत्र नव फेरी।
तुम्हरे गरब, गरूइ मैं चेरी॥
तुम जिउ, मैं तन जौ लहि माया।
कहै जो जीव, करै सो काया।
जो सूरज सिर ऊपर, तौ रे कंवल सिरछात।
नाहिं त भरे सरोवर, सूखे पुरइन पात॥

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा तत्व एवं कलापक्ष—**

1. नीचे लिखे शब्दों को खड़ी बोली में लिखिए—
   अद्रा, हुलास, सोहाग, बिगसा, दिनअर, मेराव, नखत, चित
   नेवछावरि, दिष्टि।
2. निम्नलिखित शब्दों के प्रसंगानुकूल अर्थ लिखिए—
   कंवल, सूरू, चाँद, कुमोद, तराई।
3. प्रस्तुत रचना किस प्रबन्ध काव्य से ली गई है तथा यह किस भ
   में लिखा गया है ?
4. "जनु बसन्त ऋतु पलुही छूटी"
   उक्त पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?
   (क) रूपक (ख) उपमा
   (ग) उत्प्रेक्षा (घ) लुप्तोपमा
   (च) अन्योक्ति ( ......

**भावपक्ष :**

5. प्रस्तुत रचना जिस घटना से सम्बन्धित है, उसका संक्षेप में वर्णन कीजिए।
6. रत्नसेन के आने पर पद्मावती पर जो प्रतिक्रिया हुई उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
7. रत्नसेन तथा पद्मावती ने एक-दूसरे का स्वागत किस प्रकार किया ?
8. आशय स्पष्ट कीजिए :
   "पंथ पूरि..............................चरण रज झारौं" ।।
9. प्रस्तुत रचना में शृंगार रस के किस पक्ष की अभिव्यक्ति हुई है ? उसकी कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
10. सिद्ध कीजिये कि जायसी प्रेम-मार्गी सूफी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

---

# भक्त सूरदास

## जन्म सं. 1540 □ मृत्यु सं. 1680

**जीवन-परिचय :**

सूरदास का जन्म वल्लभगढ़ के निकट सीही ग्राम में हुआ था किन्तु उनके परिवार के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग उन्हें सारस्वत ब्राह्मण तथा कुछ लोग उन्हें चन्द्रभट्ट के वंशज ब्रह्मभट्ट मानते हैं। सूरदास का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त कष्टमय था अतः वे बाल्यकाल से ही भगवद्-भक्ति की ओर झुक गये। संगीत में उनकी बहुत रुचि थी और वे सन्तों की शैली में भक्तिपूर्ण रचनाएँ करके गाने और कीर्तन करने लगे। बाद में वे भ्रमण करते हुए मथुरा जिले के रुनुकता ग्राम में पहुँचे और वहीं पर "सूर-कुटी" बनाकर भक्ति में लीन हो गये।

कहते हैं, एक बार महाप्रभु बल्लभाचार्य ने स्वयं रुनुकता जाकर
के भक्तिपूर्ण पद सुने। उनकी रचनाओं से वे बहुत प्रभावित हुए। यहीं
सूरदास ने बल्लभाचार्य से बल्लभ सम्प्रदाय की दीक्षा ली और बल्ल
सम्प्रदाय के "अष्ट-छाप" के आठ भक्त कवियों में सूर की गणना सर्वश्रे
कवियों में की जाने लगी।

**रचनाएँ :**

सूरदास की तीन रचनाएँ स्वीकार की जाती हैं : (1) सूरसाग
(2) साहित्य लहरी (3) सूर-सारावली। इनमें सूरसागर अत्यन्त लोकप्रि
तथा प्रामाणिक रचना है। कहते हैं कि 'श्रीमद्भागवत' के आधार पर सूर
'सूरसागर' में सवालाख पदों की रचना की, किन्तु अभी उनके लगभग द
हजार पद ही उपलब्ध हैं।

**सूर की भक्ति :**

'सूर' सगुणोपासक थे और इनके उपास्य-देव बालकृष्ण थे। सू
की भक्ति के दो रूप देखने को मिलते हैं—(1) दास भाव (2) सख
भाव। दास भाव की भक्ति में आत्म-निवेदन और आत्म-समर्पण क
भावना है। सखा भाव में हरिलीला का वर्णन है जिसमें गोप-ग्वा
के प्रसंगों तथा राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंगों का वर्णन है। सूर के कृष्
अलौकिक पुरुष हैं। वे विष्णु के अवतार हैं तथा भक्त-वत्सल हैं। सूर के प
इन्हीं भावों से ओत-प्रोत हैं।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

विषय के अनुसार सूर के पदों का विभाजन पाँच प्रकार से
सकता है :—

(1) विनय और महिमा के पद (2) अवतार सम्बन्धी प
(3) कृष्ण-लीला सम्बन्धी पद (4) दार्शनिक विचारधारा पर आधारि
पद एवं (5) भ्रमर-गीत।

सूर की रचनाओं में बाललीला वर्णन, राधा-कृष्ण-प्रेम और भ्रम
गीत के गोपी-उद्धव प्रसंग अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय हैं।

कृष्ण की बाल लीलाएँ वात्सल्य रस से ओत-प्रोत हैं। सूर की काव्
प्रतिभा यहीं दर्शनीय हैं। कृष्ण के जन्म से तरुणावस्था तक जो शब्द-चि
उतारे हैं उनका विश्व-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ स्थान है। रूप-सौन्दर्य-चित्रण

सूर बेजोड़ हैं। इसी प्रकार सूर ने कृष्ण की प्रेम-लीला का वर्णन कर गार रस का एक नवीन रूप प्रस्तुत किया है। बाल्यावस्था का आकर्षण णावस्था में किस तरह प्रेम में परिणित हो जाता है, -यह सूर से अधिक ई मनोवैज्ञानिक भी क्या जान सकेगा। राधा प्रेम की साकार प्रतिमा है। हीं के द्वारा ब्रज के कण-कण में कृष्ण का प्रेम और भक्ति की बेलि रित, पल्लवित और पुष्पित होती है। वास्तव में सूरवात्सल्य और शृंगार के सम्राट हैं।

'भ्रमर-गीत' काव्य-परम्परा हिन्दी साहित्य को सूर की एक पम देन है। गोपियों की विरह-वेदना के माध्यम से वियोग शृंगार-वर्णन की अद्भुत काव्य-प्रतिभा का द्योतक है।

सूर की शैली गीति-काव्य की शैली है और इनका प्रत्येक पद किसी किसी राग-रागिनी पर आधारित है। अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा और क का सफल प्रयोग इनकी रचनाओं में देखने को मिलता है।

सूर की भाषा ब्रज भाषा है। उस पर ब्रज के स्वाभाविक वातावरण प्रभाव है। सूर ब्रजभाषा के परिमार्जक कवि हैं, उनके काव्य का स्पर्श कर ब्रजभाषा व्यवस्थित और विकसित हुई है।

**तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

प्रस्तुत पदों में से कुछ पद सूर की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति के चायक हैं। मिथ्या सांसारिक आसक्ति, अविद्या से छुटकारा, अपने उद्धार करुण पुकार, इन पदों की प्रमुख विशेषता है। कुछ पद कृष्ण के सौन्दर्य-र्णन, रूप-आकर्षण एवं बाल-लीला से सम्बन्धित हैं। भ्रमर-गीत से बन्धित पदों में गोपियों के वियोग, उनकी व्यंग्य उक्तियों तथा कृष्ण के प्रति गाढ़ प्रेम की एक झलक प्रस्तुत की गई है।

## सूरदास

**नय :**

( 1 )

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल।
काम-क्रोध को पहिरि चोलना, कंठ-विषय की माल॥
महा मोह के नूपुर बाजत, निन्दा शब्द रसाल।
भरम भरयो मन भयो पखावज, चलत कुसंगति चाल॥

तृस्ना नाद करत घट भीतर, नाना विधि दै ताल
माया को कटि फेंटा बान्ध्यो, लोभ-तिलक दै भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल-थल सुधि नहिं काल ।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नन्दलाल ।।

( 2 )

अबके नाथ मोहि उधारि ।
मगन हौं भव-अम्बु-निधि में, कृपा-सिन्धु मुरारि ।।
नीर अति गम्भीर माया, लोभ लहरति रंग ।
लिये जात अगाध जल में, गहे, ग्राह अनंग ।।
मीन इन्द्रिहिं अतिहिं काटति, मोट अघ सिर भार ।
पग न इत उत धरन पावत, उरझि मोह सेवार ।।
काम-क्रोध समेत तृष्णा, पवन अति झकझोर ।
नाहिं चितवन देत तिय सुत, नाम नौका ओर ।।
थक्यो बीचि बिहाल विह्वल, सुनौ करुना मूल ।
स्याम भुज गहि काढ़ि लीजै, सूर ब्रज के कूल ।।

**सौन्दर्य वर्णन :**

( 1 )

सोभा सिन्धु न अन्त रही री ।
नन्द-भवन भरि पूरि उमंगि चलि ब्रज की बीथिनु फिरति बही
देखि जाइ आजु गोकुल में, घर-घर बेचति फिरति दही
कहं लगि कहौं बनाइ बहुत बिधि, कहत न मुख सहसहु निबही
जसुमति उदर अगाध उदधि तें, उपजी ऐसी सबनि कही
सूर स्याम प्रभु इन्द्र नीलमनि, ब्रज बनिता उरलाइ गुही

( 2 )

सोभित कर नवनीत लिये ।
घुटुरन चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये ।।
चारु कपोल लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिये ।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुपगन, मादक मदहिं पिये ।।
कठुला-कंठ, वज्र केहरि नख, राजत रुचिर हिये ।
धन्य सूर एकौ पल या सुख, का सत कल्प जिये ।।

( 3 )

चितवनि रोकैंहू न रही ।
स्याम सुन्दर सिंधु सन्मुख सरित उमंगि बही ।।
प्रेम,सलिल प्रवाह भंवरनि मिलिन थाह लही ।
लोल लहर, कटाच्छ घूँघट पट करार ढही ।।
थके पल-पथि नाव-धीरज परत नाहिन गही ।
मिली सूर स्वभाव स्यामहि, फेरिहूँ न चही ।।

( 4 )

मैं मन बहुत भाँति समुझायौ ।
कहा करौं दरसन-रस अटक्यो बहुरि नहीं घट आयौ ।।
इन नैननि के भेद रूप-रस, उर में आनि दुरायौ ।
बरजत ही बेकाज सुपन ज्यौं, पलट्यौ ना जौ सिधायौ ।।
लोक-वेद कुल निदरि निडरि ह्वै, करत आपनौं भायौ ।
मुख-छवि निरखि चौंधि, निसि-खग ज्यों हठि आपुनाई वंधायौ ।।
हरि कौं दोष कहा कहि दीजे, वह अपने बल छायौ ।
अति त्रिपरीत भई सुनि सूरज, मुरझायौ मदन जगायौ ।।

भ्रमर-गीत :

( 1 )

ऊधौ कोकिल कूंजत कानन ।
तुम हमको उपदेश करत हौ, भस्म लगावत आनन ।।
औरौ सींगी सखी संग लै, टेरत चढ़े पबानन ।
बहुरौ आय पपीहा के मिस मदन दहत निज बानन ।।
हमनौ निपटि अहीरि बावरी, जोग दीजिए जानन ।
कहा कहत मौसी के आगे, जानत नानी नानन ।।
तुम तौ हमें सिखावन आये, मुक्ति होम निर्वानिन ।
सूर मुक्ति कैसे सूझति है, वा मुरली की तानन ।।

( 2 )

ऊँधौ ! जाहु तुम्हें हम जाने ।
स्याम तुम्हें ह्याँ नाहि पठाये, तुम हौं बीच भुलाने ।।
ब्रज-बासिन सौं जोग कहत हौं, बातहु कहत न जाने ।

बड़ लागाइ विवेक तुम्हारौ, ऐसे नये अयाने ।।
हम सौं कहि लई सौ सहिकै, जिय गुनि लेहु सयाने ।
कहं अबला, कहं दसा दिगम्बर, समुझ करी पहचाने ।।
साँच कहौं तुमको अपनी सौं, बूझति बात निदाने ।
'सूरदास' जब तुम्हें पठाये, तब नैकहु मुसुकाने ।।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कला-पक्ष :**

1. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिये और बताइए कि इ
कौन-सा समास है :—
काम-क्रोध, जल-थल, अम्बु-रस, कृपा-सिंधु, मुख-छवि ।
2. 'चोलना' 'जहाज को पंछी', 'फेंटा', 'लट-लटकनि', 'लोल-लह
इन शब्दों के प्रयोग की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए ।
3. इस पाठ में आये तत्सम, तद्भव तथा देशज शब्दों की सूची बन
यथा—
काम, भरम, फेंटा, नूपुर, पंछी, मबार आदि ।
4. इस पाठ की भाषा कौन-सी है ?
(क) अवधी (ख) ब्रज
(ग) भोजपुरी (घ) मैथिली
(च) खड़ी बोली (.....
5. विनय के प्रथम पद में सूर ने सांग रूपक का बहुत सुन्दर उदाह
प्रस्तुत किया है । इस रूपक के अंग-प्रत्यंग को स्पष्ट कीजिए ।
6. गीति-काव्य की क्या विशेषताएँ हैं ? इन पदों पर इन विशेषत
को घटित करके देखिए ।

**भाव-तत्व :**

7. 'अब मैं नाच्यौ बहुत गोपाल' यह पंक्ति सूर के किस मानसिक
की ओर संकेत करती है ?
8. इन पदों में कृष्ण के प्रति सूर की अन्यतम भक्ति को प्रकट करने व
पद कौन-सा है और सूर ने अपनी अनन्यता के समर्थन में क्या-
कहा है, संक्षेप में लिखिए ।

9. 'सोभित कर नवनीत लिए' इस पद के आधार पर कृष्ण के रूप-सौन्दर्य का चित्रण कीजिए।
10. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—
(क) लोल-लहर, कटाच्छ घूँघट-पट करार ढही।
(ख) मुख-छवि निरखि चौंधि निसि खग ज्यौं हठि आपुनहिं बँधायौ।
11. कोयल का बोलना और उद्धव का ज्ञानोपदेश, ये दोनों गोपियों को विरोधी क्यों प्रतीत हो रहे थे? स्पष्टतापूर्वक टिप्पणी लिखें।
12. 'ऊधौ! जाहु तुम्हैं हम जाने' इस पद से गोपियों के वाक्चातुर्य के कुछ उदाहरण प्रस्तुत कीजिये।

अन्य क्रियाएँ—हिन्दी में भ्रमर–गीत–परम्परा का अध्ययन अपने विषय-अध्यापक के निर्देशन में पुस्तकालय से कीजिए।

---

# तुलसीदास

## जन्म सं. 1554 □ मृत्यु सं. 1680

**जीवन-परिचय :**

अधिकांश विद्वानों का मत है कि तुलसीदास का जन्म बांदा जिले के राजापुर नामक स्थान पर हुआ था। तुलसी सरयूपारी ब्राह्मण थे। उनके बचपन का नाम रामबोला था। उनके पिता का नाम आत्माराम तथा उनकी माता का नाम हुलसी था। कहते हैं कि तुलसीदास का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था, अतः बचपन में उन्हें माता-पिता ने त्याग दिया था और इस प्रकार उन्हें माता-पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा।

पाँच वर्ष की अवस्था में वे सोरों के विद्वान् महात्मा नरहर्यानन्द के सम्पर्क में आये। नरहर्यानन्द ने ही उनमें राम-कथा में रुचि पैदा की तथा उनका नाम तुलसीदास रक्खा। इसके बाद काशी में जाकर उन्होंने शेष सनातन नामक विद्वान् से साहित्य, इतिहास, वेद, पुराण, काव्यशास्त्र आदि

का गम्भीर अध्ययन किया। शिक्षा समाप्त कर लेने के बाद वे राजापुर और वहीं पर दीनबन्धु पाठक की रूपवती कन्या रत्नावली से उन्होंने वि किया। गृहस्थ जीवन के पाँच वर्ष बाद उनकी विदुषी पत्नी के व्यंग्य से उ सदैव के लिये वैराग्य हो गया। अतः उन्होंने गृह-त्याग के बाद अनेक ती स्थानों की यात्राएँ कीं, विद्वान् साधुओं का सत्संग तथा पुनः शास्त्रों अध्ययन किया। अधिकांश रूप से अयोध्या तथा काशी में रहकर उन्हे भक्तिपूर्ण काव्य की रचनाएँ कीं।

**रचनाएँ :**

तुलसीदास की रचनाओं को हम तीन भागों में विभाजित क सकते हैं :—

(1) महाकाव्य–रामचरित मानस।

(2) खण्डकाव्य–रामलला नहछू, जानकी-मंगल, पार्वती-मंगल।

(3) मुक्तक–गीतावली, कृष्ण गीतावली, दोहावली, वैराग्य संदीपनी कवितावली, वरवै–रामायण, रामाज्ञा प्रश्न, विनय-पत्रिका।

**तुलसी की भक्ति का स्वरूप :**

तुलसी राम के अनन्य भक्त थे। राम को उन्होंने परब्रह्म, विष्णु और दशरथ पुत्र राम के रूप में देखा है जो शील, सौन्दर्य एवं शक्ति के प्रतीक है उनकी भक्ति दास्य भाव की थी।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

तुलसीदास भक्त कवि हैं। उनकी भक्ति और काव्य-कला को पृथक पृथक् करना कठिन है। राम का पवित्र जीवन उनके काव्य का प्रमु विषय है।

तुलसी की कीर्ति का आधार उनका 'रामचरित मानस' है। यह ए महाकाव्य है जिसमें रामचरित के मार्मिक प्रसंगों का उत्कृष्ट वर्णन किया ग है। इस महाकाव्य मे जीवन की व्यावहारिक समस्याओं ने ही काव्य का रू धारण किया है। सुर-असुर, ऊँच-नीच, मित्र-शत्रु, सास-बहू, पिता-पुत्र, राज प्रजा, पति-पत्नी, गुरु-शिष्य आदि सभी मानवीय सम्बन्धों की अत्यन्त सूक्ष्म व्याख्या तुलसी की बहुमुखी प्रतिभा की द्योतक है।

तुलसी की काव्य प्रतिभा भी बहुत व्यापक थी। उन्होंने महाकाव्य खण्ड-काव्य तथा मुक्तक काव्य सभी प्रकार के काव्यों की रचना की है। छन्द

दृष्टि से दोहा-चोपाई, कवित्त, छप्पय, सवैया, बरवै, सौहर, गेय पद ग्रादि प्रचलित शैलियों पर सफल काव्य-रचना की है। इस दृष्टि से तुलसी रसों के रस-सिद्ध कवि थे। तुलसी का छन्द-विधान ग्रौर भी अधिक व्यापक उपमा, उत्प्रेक्षा ग्रौर रूपक ग्रलंकार के तो वे सम्राट कहे जा सकते हैं।

भाषा की दृष्टि से ब्रज ग्रौर ग्रवधी दोनों भाषाग्रों पर तुलसी का न ग्रधिकार था।

संक्षेप में तुलसी एक युग-द्रष्टा कवि थे तथा उनका काव्य हिन्दी त्य की ग्रमूल्य निधि है।

**त काव्य के सम्बन्ध में :**

इस संकलन के प्रथम तीन पद 'विनय-पत्रिका' से लिये गये हैं। ये पद के प्रति तुलसी की ग्रनन्य भक्ति के प्रतीक हैं। राम का गुण-गान की कृपा, संत जीवन की उपलब्धि, इन पदों के मुख्य विषय हैं। वली' के पद राम के भ्रातृ-प्रेम, उदारता तथा शरणागत-वत्सलता को करते हैं।

ग्रन्तिम रचना 'रामचरितमानस' के पुष्प-वाटिका प्रसंग से ली गई काव्य की दृष्टि से यह रचना सर्वोष्कृष्ट है। राम ग्रौर सीता का प्रथम , प्रथम ग्राकर्षण, राम के मन की पवित्रता इस रचना की प्रमुख विशेषता उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक ग्रलंकारों का सफल प्रयोग तुलसी की काव्य-ना के प्रमाण हैं। माधुर्य-गुण-युक्त ग्रनुप्रास की छटा सराहनीय है।

## गोस्वामी तुलसीदास

**-पत्रिका :**

काहे न रसना रामहि गावहि ?
निसि-दिन पर ग्रपवाद वृथा कत रटि-रटि राग बढ़ावहि ॥
नर-मुख सुन्दर मन्दिर पावन, बसि जनि ताहि लजावहि।
ससि-समीप रहि त्यागि सुधा कत रविकर जल कहँ धावहि ॥
काम-कथा कलि-कैरव चन्दिनि सुनत स्रवन दै भावहि।
तिनहिं हटकि कहि हरि-कल कीरति करन कलंक नसावहि ॥
जान-रूप मनि जुगुति रुचिर मनि, रचि-रचि हार बनावहि।
सरन-सुखद रविकुल-सरोज-रवि, राम नृपहि पहिरावहि ॥

वाद विवाद स्वाद तजि भजि हरि सरस चरित चित लावहि
तुलसीदास भव तरहि तिहूं पुर तू पुनीत जस गावहि

( 2 )

यहि ते मैं हरि ! ज्ञान गंवायो ।
परिहरि हृदय-कमल रघुनाथहि, बाहर फिरत बिकल भयो धायो
ज्यों कुरंग निज अंग रुचिर मद अति मति हीन मरम नहिं पायो
खोजत गिरि, तरु-लता, भूमि-बिल परम सुगन्ध कहाँ धौं आयो
ज्यों सर विमल वारि परिपूरन ऊपर कछु सिवार तृन छायो
जारत हियो कहि तजिहौं सठ, चाहत यहि विधि तृषा बुझायो
व्यापत त्रिविध ताप तनु दारुन, तापर दुसह दरिद्र सतायो
अपनेहि धाम नाम सुर-तरु तजि, विषय-बबूर-बाग मन लायो
तुम सम ज्ञान-निधान मोहि सम मूढ़ न आन पुराननि गायो
तुलसीदास प्रभु यहि विचारि जिय कीजै नाथ उचित मन भायो

( 3 )

कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो ।
श्री रघुनाथ कृपाल कृपा तें संत–स्वभाव गहौंगो ।।
यथा लाभ सन्तोष सदा काहू सौं कछु न चहौंगो ।
पर-हित निरत निरन्तर मन-क्रम-वचन नेम निबहौंगो ।।
परुप बचन अति दुसह स्रवन-सुनि तेहि पावक न दहौंगो ।
विगत मान, समसीतल मन, परगुन, नहिं दोष कहौंगो ।।
परिहरि देह–जनित चिंता दुख-सुख समबुद्धि सहौंगो ।
तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि अविचल हरि भक्ति लहौंगो ।।

**गीतावली :**

( 1 )

विलोके दूरि तें दोउ वीर ।
उर आयत, आजानु सुभग भुज, स्यामल गौर सरीर ।।
सीस जटा, सरसीरुह लोचन, बने परिधन मुनिचीर ।
निकट निपंग, संग सिय सोभित, करनि धुनत धनु-तीर ।।
मन अगहुँउ, तनु पुलक सिथिल भयो नलिन नयन भरे नीर ।
गड़त गौड़ मानो सकुच-पंक महं, बढ़त प्रेम-बल धीर ।।

तुलसीदास दसा देखि भरत की, उठि धाये अतिहि अधीर ।
लिये उठाइ उर लाइ कृपानिधि, विरह-जनित हरि पीर ॥

( 2 )

राघौ गीध गोद करि लीन्हों ।
नयन-सरोज सनेह सलिल सुचि मनहु अरघ जल दीन्हों ॥
सुनहु लखन ! खगपतिहिं मिले बन में पितु मरन न जान्यौ ।
सहि न सक्यो सो कठिन विधाता, बड़ों पछु आजुहि भान्यौ ॥
बहुविधि राम कह्यो तन राखन परम धीर नहिं डोल्यो ।
रोकि प्रेम अवलोकि बदन विधु वचन मनोहर बोल्यो ॥
तुलसी प्रभु झूठे जीवन लगि, समय न धोखो लैहों ।
जाको नाम मरत मुनि दुर्लभ तुमहिं कहाँ पुनि पैहों ॥

( 3 )

मेरो सब पुरुषारथ थाको ।
विपति बंटावनि बंधु-बाहु बिनु करौं भरोसो काको ॥
सनु सुग्रीव साँच हूँ मो पर फेर्यो वदन विधाता ।
ऐसे समय समर-संकट हौं तज्यो लखन सो भ्राता ॥
गिरि-कानन जैहैं साखामृग, हौं पुनि अनुज-संघाती ।
ह्वै है कहा विभीषन की गति, रही सोच भरि छाती ॥
तुलसी सुनि प्रभु-बचन भालु कपि सकल बिकल हिय हारे ।
जामवंत हनुमन बोलि तब, औसर जानि प्रचारे ॥

**प्रथम दर्शन (पुष्प-वाटिका प्रसंग)**

चौपाई—कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि, कहत लखन सन राम हृदय गुनि ॥
मानहुं मदन दुंदभी दीन्हीं, मनसा विस्व विजय कहं कीन्हीं ॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा, सिय मुख ससि भये नयन चकोरा ॥
भये विलोचन चारु अचंचल, मनहुं सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥
देखि सीय सोभा सुख पावा, हृदय सराहत बचनु न आवा ॥
जनु विरंचि सब निज निपुनाई, विरचि विस्व कहं प्रकट देखाई ॥
सुन्दरता कहं सुन्दर करई, छवि गृह दीपसिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी, केहि पटतरौं विदेह-कुमारी ॥

दोहा– सिय–सोभा हिय बरनि प्रभु, आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन, बचन समय अनुहारि॥

चौपाई–तात ! जनक तनया यह सोई, धनुष-जग्य जेहि कारण होई॥
पूजन गौरि सखी ले आईं, करत प्रकास फिरइ फुलवाईं॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा, सहज पुनीत मोर मन छोभा॥
सो सबु कारन जान बिधाता, फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता॥
रघुवंसिन्ह कर सहज सुभाऊ, मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी, जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी॥
जिनके लहहिं न रिपु रन पीठी, नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी॥
मंगल लहहिं न जिन्ह कै नाहीं, ते नरवर थोरे जग माहीं॥

दोहा– करत बतकही अनुज सन, मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान॥

चौपाई–चितवति चकित चहूँ दिसि सीता, कहं गये नृपकिसोर मन चीन्ता॥
जहं बिलोकि मृग सावक नैनी, जनु तहं बरसि कमल सित श्रेनी॥
लता ओट तब सखिन्ह लखाए, स्यामल गौर किसोर सुहाये॥
थके नयन रघुपति छबि देखें, पलकन्हिहूं परिहरीं निमेषें॥
अधिक सनेह देह भै भोरि, सरद ससिहि जनु चितव चकोरी॥
लोचन-मग रामहि उर आनी, दीन्हें पलक कपाट सयानी॥
जब सिय सखिन्ह प्रेम बस जानी, कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी॥

दोहा– लता भवन तें प्रगट भे, तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु, जलद पटल बिलगाइ॥

चौपाई–सोभा सीवं सुभग दोउ बीरा, नील-पीत जलजात सरीरा॥
मोर पंख सिर सोहत नीके, गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के॥
भाल तिलक श्रम-बिन्दु सुहाए, श्रवन सुभग भूषन छबि छाये॥
बिकट भृकुटि कच घूघरवारे, नव सरोज लोचन रतनारे॥
चारु चिबुक नासिका कपोला, हास बिलास लेत मनु मोला॥
मुख छबि कहि न जाहि मोहि पाहीं, जो बिलोकि बहु काम लजाहीं॥
उर मनि माल कंबु कल गीवा, काम कलभ कर भुज-बलसींवा॥
सुमन समेत बाम कर दोना, सांवर कुंवर सखी सुठि लोना॥

हा– केहरि कटि पट पीत धर, सुषमा सील निधान ।
देखि भानुकुल–भूषनहिं, बिसरा सखिन्ह अपान ।।

पाई–धरि धीरजु एक आलि सयानी, सीता सन बोली गहि पानी ।।
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू, भूपकिसोर देखि किन लेहू ।।
सकुचि सीय तब नयन उघारे, सनमुख दोउ रघुसिंह निहारे ।।
नख-सिख देखि राम के सोभा, सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा ।।
परबस सखिन्ह लखी जब सीता, भयउ गहरु सब कहिहिं सभीता ।।
पुनि आाउब एहि बेरिआं काली, असि कहि मन बिहसी एक आली ।।
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी, भयउ बिलंबु मातु भय मानी ।।
धरि बड़ि धीर राम उर आने, फिरी अपनपउ पितु बस जाने ।।

हा– देखन मिस मृग विहग तरु, फिरहि बहोरि बहोरि ।
निरखि निरखि रघुबीर छवि, बाढ़इ प्रीति न थोरि ।।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**षा-तत्व एवं कलापक्ष :**

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—
स्रवन, कीरत्ति, सरन, मरम, परिपूरन, तृन, दारुन, अरधजल, विपति, औसर ।

2. नीचे कुछ शब्द ब्रज भाषा की भूतकालिक क्रियाओं और उनके खड़ी बोली रूपान्तर दिये जा रहे हैं । आप ब्रज भाषा को ऐसी क्रियाओं के रूप चयन कर उन्हें खड़ी बोली में रूपान्तरित कीजिए :

| जैसे— | **ब्रज भाषा** | **खड़ी बोली** |
|---|---|---|
| | गंवायो | गंवाया |
| | पायो | पाया आदि । |

3. 'विनय पत्रिका' एवं 'गीतावली' से उद्धृत पदों एवं 'रामचरित मानस' से उद्धृत 'पुष्प वाटिका' प्रसंग में प्रयुक्त भाषा में क्या अन्तर है ?

4. गीतिकाव्य की दृष्टि से तुलसी के पदों में कौन-कौनसी विशेषताएँ प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं ?

5. दोहा तथा चौपाई के लक्षणों के आधार पर तुलसी के दोहा-चौपाइयों

में से कुछ का परीक्षण करके देखिये कि मात्राएँ पूर्णतः छन्द के अनुसार हैं।

6. निम्नलिखित पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?
"निकसे जनु जुग बिमल बिधु, जलद पटल बिलगाइ'
(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अन्योक्ति
(च) व्यतिरेक (

**भाव पक्ष :**

7. तुलसी के अनुसार राम-गुण गान क्यों आवश्यक है ?
8. किन पंक्तियों से यह प्रगट होता है कि 'ईश्वर हमारे अति के निक और हम उसे व्यर्थ ही खोजते फिरते हैं।
9. तुलसी किस प्रकार की 'रहनि' (जीवन पद्धति) की कामना करते
10. आशय स्पष्ट कीजिये :
(क) गड़त गोड़ मानो सकुच पंक महं, कढ़त प्रेम बलधीर।
(ख) भये विलोचन चारु अचंचल, मनहुं सकुचि निमि तजे दृगं
(ग) सुन्दरता कहं सुन्दर करई, छबि-गृह दीप-सिखा जनु ब

---

# मीरा

## जन्म : सं. 1560 वि. ☐ मृत्यु : सं. 1603 वि.

**जीवन-परिचय :**

कृष्ण-भक्ति की सुदीर्घ परम्परा में, अपने गिरधर के प्रेम में रंग मीरा का दर्द-भरा-आतुर स्वर अपनी एक अलग पहचान रखता है। राज की धरती और कण-कण ही नहीं, वरन् समस्त भारत उस 'दरद दि माधुर्य भक्ति से ओत-प्रोत रस-भक्ति वाणी से आप्लावित है। अपने व्यक्तित्व की स्वतन्त्र पहचान निर्मित करने वाली तथा युग की विभीषि

के विरुद्ध संघर्षशील विद्रोहणी मीरा के जन्म के विषय में विद्वानों में परस्पर गहरा मत-भेद है, फिर भी अधुनातन शोध के आधार पर उनका जन्म श्रावण सुदी 1, शुक्रवार सं. 1560 वि. में राजस्थान के मेड़ता कस्बे के कुड़की ग्राम में हुआ था। मीरा मेड़ता के राव रत्नसिंह की पुत्री थी तथा उनका विवाह राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ किन्तु सात-आठ वर्ष बाद ही भोजराज की मृत्यु हो गई।

भोजराज के सौतेले भाई विक्रमादित्य ने मीरा को असहनीय कष्ट पहुँचाये और उन्हें विष देकर उनकी हत्या का भी प्रयास किया किन्तु मीरा का पालन-पोषण उनके परम वैष्णव पितामह राव दूदा जी की छत्रछाया में हुआ था। अतः अपनी आस्तिकता के बल पर उन्होंने सभी यातनाओं को हँसते-हँसते सहन किया और उनकी भक्ति-भावना दिनोंदिन विकसित होती चली गई। अन्त में द्वारिका में अपने आराध्य देव रणछोड़ दास के मन्दिर में जल समाधि ले ली। विद्वानों के अनुसार उनका निधन सं. 1603 और 1613 वि. के बीच माना जाता है।

**रचनाएँ :**

मीरा कृष्ण की अनन्य उपासिका थी। भक्ति-भावना के आवेश में उन्होंने जिन पदों का गान किया है वे निम्नलिखित ग्रन्थों में संकलित है—(1) गीत गोविन्द की टीका, (2) राग गोविन्द (3) नरसी जी को माहरो।

**मीरा की भक्ति :**

कृष्ण भक्तों में मीरा का प्रमुख स्थान है। मीरा की भक्ति-भावना माधुर्य भाव की है। लौकिक दृष्टि से भोजराज उनके पति हैं किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से गिरधर गोपाल उनके परम पति हैं। उन्होंने अपने परम पति को कहीं सगुण रूप में और कहीं निर्गुण रूप में चित्रित कर अपनी भक्ति-भावना का परिचय दिया है।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

मीरा अपने कृष्ण की प्रेम दीवानी हैं। उन्होंने अपनी इस प्रेम-बेलि को आँसुओं के जल से सींचा है। मीरा का सम्पूर्ण काव्य अनुभूति का काव्य है। मीरा का काव्य शृंगार-रस प्रधान है किन्तु उनका प्रेम लौकिक न होकर अलौकिक है। संयोग शृंगार में वे कृष्ण के रूप पर आसक्त है। गिरिधर के प्रेम में रंगी मीरा कभी उन्हें रिझाती है तो कभी उनके प्रेम में तन्मय होकर

उनके सामने नाचने लगती है। मीरा का वियोग श्रृंगार भी अत्यन
स्पर्शी है। मीरा का वियोग वर्णन नारी-हृदय की सम्पूर्ण अनुभूति
चीत्कार है। नारी-हृदय की विरह-वेदना ने मीरा के काव्य में मूर्तरूप
कर लिया है।

कृष्ण-प्रेम के अतिरिक्त मीरा के काव्य में गुरु-महिमा,
संसार की निस्सारता तथा तत्कालीन समाज के अनेक चित्र दे
मिलते हैं।

मीरा के काव्य में भाव-पक्ष की ही प्रधानता है। कलापक्ष
गौण है क्योंकि मीरा तो प्रेम-वियोगिनी थी। कविता करना उनक
नहीं था। काव्य के गुण उनकी रचनाओं में स्वतः आ गये हैं। उनके
की भावुकता ने विविध राग-रागिनियों पर आधारित गेय पदों की र
लिये उन्हें विवश और आतुर बनाया है। इनकी रचनाओं में छन्द
तथा संगीत-शास्त्र की दृष्टि से कहीं-कहीं त्रुटियाँ पाई जाती हैं किन्तु ये
उनकी अनुभूतियों के सामने नगण्य हैं।

भाषा की दृष्टि से इनकी रचनाएँ राजस्थानी मिश्रित ब्रज भा
आधारित हैं। इसके अतिरिक्त इनकी रचनाओं के गुजराती, पूर्वी तथ
बोली के रूप भी मिलते हैं।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

मीरा के प्रस्तुत पदों में प्रेम, विरह, प्रतीक्षा, नाम-महिमा, आदि
भावों की अभिव्यक्ति हुई है। गिरधर के रंग में रंगी मीरा 'दरद-दि
होकर अपने प्रियतम के दर्शनों के लिये कितनी आतुर और कितनी अध
प्रियतम के वियोग में मीरा को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। हो
है। गाँव, देश और सेज सब कुछ शून्य है—निरर्थक है।

भाव-पक्ष की इस सबलता के साथ ही ध्यान देने योग्य बात
कि ये सभी पद गेय हैं। इनका आनन्द गेयता के आधार पर ही लि
सकता है।

## मीरा

( 1 )

मन रे परस हरि के चरण।
सुभग सीतल कंवल कोमल जगत ज्वाला हरण।

इण चरण प्रह्लाद परस्याँ इन्द्र पदवी धरण।
इण चरण ध्रुव अटल करस्यां सरण असरण सरण।
इण चरण ब्रह्माण्ड भेंटयां नख सिखां सिरि भरण।
इण चरण कालियां णाथ्यां गोप लीला करण।
इण चरण धार्यां गोवरधण गरब मघवा हरण।
दासि मीरां लाल गिरधर अगम तारण तरण।

( 2 )

म्हां गिरधर रंग राती।
पचरंग चोला पहेर्या सखि म्हा झरमट खेलण जाती।
वा झरमट मां मिलयो सांवरो देख्यां तण मण राती।
जिणरा पियां परदेस बस्यां री लिख लिख भेज्यां पाती।
म्हारा पियां म्हारे हीयड़े बसतां ना आवां ना जाती।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर मग जोवां दिण राती।

( 3 )

हेरी म्हां तो दरद दिवाणी म्हारां दरद णा जाण्यां कोय।
घायल री गत घायल जाण्यां हिवड़ो अगण संजोय।
जौहर कीमत जौहरां जाण्यां क्या जाण्यां जिण खोय।
दरद री मार्या दर दर डोलयां वैद मिल्यां णा कोय।
मीरां री प्रभु पीर मिटांगा जद बेद सांवरो होय।

( 4 )

दरस बिण दूखां म्हारा नैण।
सबदा सुणतां छतियां कापां मीठों थारो बैण।
बिरह बिथा कांसू री कह्या पेठां करवत एण।
कल णां पड़तां हरि मग जोवां भय छमासी रैण।
थें बिछड्या म्हां कलपां प्रभुजी म्हारो गयो सब चैण।
मीरा रे प्रभु कबरे मिलोगां दुःख मेटण सुख दैण।

( 5 )

पिया थारे नाम लुभाणी जी।
नाम लेता तिरतां सुण्यां जग पाहण पाणी जी।

कीरत काई ग्गा कियां घणां करम कुमाणी जी ।
गणकी कीर पढ़ावतां बैकुण्ठ बसाणी जी ।
अरध नाम कुंजर लयां दुख अवध घटाणी जी ।
गरुण छांड़ पग धाइयां पसु जूण पटाणी जी ।
अजामेल अध ऊधरे जम त्रास नसाणी जी ।
पूत नाम जस गाइयां जग सारा जाणी जी ।
सरणागत थे बर दियां परतीत पिछाणी जी ।
मीरां दासी रावली अपणी कर जाणी जी ।

( 6 )

होली पिया बिण लागां री खारी ।
सूणो गांव देस सब सूणो सूणी सेज अटारी ।
सूणो बिरहण पिव बिण डोलां तज गयां पीव पियारी ।
विरहा दुख भारी ।

देस विदेशा णा जायां म्हारो अणेशा भारी ।
गणतां गणतां घिस गयां रेखां आंगरियां री सारी ।
आयां ना री मुरारी ।

बाज्यां झांझ मिरदंग मुरलियां बाज्या कर इकतारी ।
आया बसंत पिया घर नारी म्हारी पीड़ा भारी ।
स्याम मण क्यां री बिसारी ।

ठाड़ी अरज करां गिरधारी राख्यां लाज हमारी ।
मीरां रे प्रभु मिलश्यो माधो जणम जणम री क्वारी ।
मण लागी दरसण तारी ।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कला-पक्ष :**

1. राजस्थानी भाषा में 'न' के स्थान पर प्रायः 'ण' का प्रयोग कि जाता है । जैसे—विण (बिना), ए इण (इन) आदि । मीरा के म से ऐसे शब्दों की सूची तैयार कीजिये तथा उन्हें खड़ी बोली रूपान्तरित कीजिए ।

2. नीचे लिखे तद्भव तथा देशज शब्दों को खड़ी बोली में लिखिए—
परस, कंवल, सीतल, गरव, म्हां, पियां, पाती, हीयड़े, बैंद, जद, अरध, अवध, शूणो, शारी, मिलश्यो।
3. मीरा की रचनाओं का मुख्य विषय क्या है ? इनकी रचनाओं की तुलना किस कवि की रचनाओं से करना उपयुक्त होगा और क्यों ?
4. (क) प्रबन्ध काव्य (ख) खण्ड काव्य
(ग) मुक्तक काव्य (घ) गीति काव्य
(च) मुक्तक गीति काव्य ( )

**ाव-तत्व :**

5. हरि-चरणों के प्रभाव को बताने के लिये मीरा ने किन उदाहरणों से पुष्टि की है ?
6. मीरा कृष्ण की भक्ति किस रूप में करती थीं और इस रूप की सर्वाधिक अभिव्यक्ति किस पद में हुई है ?
7. मीरां की विरह-व्यथा को अपने शब्दों में लिखिए।
8. आशय स्पष्ट कीजिए।
(क) दरद मार्‌यां..............................सांवरो होय ।।
(ख) होली पिया विण........ ...........विरहा दुख भारी ।।
9. अन्य–अन्तर्कथाएँ लिखिए—
प्रहलाद, ध्रुव, गोवर्धन धारण, अजामिल, गणिका।

---

# बिहारी

## जन्म सं. 1652 ☐ मृत्यु सं. 1720

**जीवन-परिचय :**

बिहारी का जन्म ग्वालियर राज्य में बसुआ गोविन्दपुर में हुआ था। वे माथुर चतुर्वेदी थे। कहते हैं कि बिहारी कवि ने हिन्दी के प्रसिद्ध कवि

केशवदास से काव्यशास्त्र, संस्कृत तथा प्राकृत आदि भाषाओं का अ
किया। वृन्दावन में रहकर भी उन्होंने संगीत और साहित्य का अच्छा अ
किया।

यह भी माना जाता है कि बिहारी ने अपनी काव्य-प्रतिभा के आ
पर अनेक राजाओं का राज्याश्रय प्राप्त किया जिसमें ओरछा नरेश, शाह
जोधपुर नरेश, अब्दुल रहीम खानखाना और जयपुर नरेश के वे विशे
से कृपा-पात्र रहे।

सम्वत् 1692 में जब वे जयपुर नरेश जयसिंह के यहाँ वार्षिक भें
गये तो उन्होंने पाया कि जयपुर नरेश अपनी नवोढ़ा पत्नी के प्रेम के व
राज-काज में रुचि नहीं रखते। बिहारी ने किसी मालिन के माध्यम
दोहा लिखकर उनके पास पहुँचा दिया—

'नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बंध्यो, आगे कौन हवाल।।'

कहते हैं, महाराज ने इस दोहे को अनेक बार पढ़ा और वे
इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने बिहारी कवि को स्थायी रूप से अपना र
श्रय एवं सम्मान प्रदान किया।

**रचनाएँ :**

बिहारी की एक मात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। इसमें बिह
719 दोहे संकलित हैं। इस एक रचना के आधार पर बिहारी ने जो
अर्जित की और हिन्दी साहित्य में जो स्थान पाया वह अन्यतम है
अँग्रेजी लेखक का यह कथन कि 'संक्षिप्तता काव्य-चातुर्य और कला की
है' बिहारी कवि पर बड़ा खरा उतरता है। बिहारी के दोहों के सम्बन्ध
यह कहा जाता है कि—

सतसैया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करे गम्भीर।।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

बिहारी कला-प्रधान तथा भाव-प्रधान दोनों प्रकार की रचन
वाले सिद्धहस्त कवि हैं। जहाँ वे शब्द-चमत्कार प्रदर्शित करना चाहते
वे किसी सुन्दर अलंकार का प्रयोग करते हैं किन्तु जहाँ वे रस-पर

लिखते हैं तो पाठक को इसमें ऊपर से नीचे तक रसमग्न ही कर डालते हैं। सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति तथा कल्पनाओं की उड़ान में बिहारी कवि बेजोड़ है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से बिहारी के दोहों को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है—(1) नीति सम्बन्धी दोहे (2) दर्शन सम्बन्धी दोहे (3) रूप-सौन्दर्य वर्णन सम्बन्धी दोहे (4) नायिका-भेद सम्बन्धी दोहे (5) भक्ति और विनय सम्बन्धी दोहे (6) संयोग और वियोग-वर्णन सम्बन्धी दोहे (7) ऋतु-वर्णन सम्बन्धी दोहे।

बिहारी की काव्य-शैली-मुक्तक है जो नीति तथा शृंगार-वर्णन के बहुत अनुकूल है। बिहारी की सभी रचनाएँ दोहों में हैं जिनमें समास पद्धति का सहारा लिया गया है। बिहारी रीतिकाल के शृंगारी कवि हैं और इन्होंने अपनी रचनाओं में रीतिकाल की सभी विशेषताओं का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। शृंगार रस के संयोग पक्ष वर्णन में नायिका-भेद-वर्णन में वे अपना सानी नहीं रखते।

बिहारी ने अपनी रचना में यमक, श्लेष, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा रूपक आदि अलंकारों का बहुत ही सुन्दर प्रयोग किया है। अधिकांश रूप से इनकी अलंकार-योजना भाव-व्यंजना में सहायक हुई है।

बिहारी ने अपनी रचनाओं का माध्यम ब्रज भाषा को बनाया है जो 'शुक्ल' जी के अनुसार चलती होने पर भी साहित्यिक हैं। उनकी वाक्य-रचना व्यवस्थित तथा शब्द प्रयोग अत्यन्त उपयुक्त है।

**प्रस्तुत दोहे :**

प्रस्तुत दोहों में सौन्दर्य, प्रेम, नीति, भक्ति और प्रकृति आदि का वर्णन है। इन दोनों से कवि की काव्य-कुशलता का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। अधिकांश दोहों में अलंकार का सुन्दर प्रयोग दर्शनीय है। अनुप्रास, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास आदि अलंकारों का प्रयोग विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। भाषा-सौष्ठव तथा सार्थक शब्दों का प्रयोग भी अत्यन्त सराहनीय है।

## बिहारी

मोर-मुकुट की चन्द्रिकनु, यों राजत नन्द-नन्द।
मनु ससिसेखर की अकस, किय सेखर सत चन्द ।।1।।

तजि तीरथ हरि-राधिका-तन-दुति करि अनुरागु ।
जिहि ब्रज-केलि-निकुंज-मग, पग-पग होतु प्रयागु ॥2॥
तन्त्री-नाद, कबित-रस, सरस राग, रति-रंग ।
अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग ॥3॥
अजौं तर्योना हीं रह्यो स्रुति सेवत इक रंग ।
नाक-बास बेसरि लह्यो, बसि मुकुतनु के संग ॥4॥
मकराकृति गोपाल के कुण्डल सोहत कान ।
धस्यो मनो हिय-घर समर, ड्यौढ़ी लसत निसान ॥5॥
या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय ।
ज्यों ज्यों बूड़ै स्याम-रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होय ॥6॥
कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ ।
जगतु तपोबन सौ कियौ, दीरघ दाघ निदाघ ॥7॥
कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाय ।
वा खाये बौरात जग, या पाये बौराय ॥8॥
दूरि भजत प्रभु पीठि दै, गुन बिस्तारन काल ।
प्रगटत् निर्गुन निकट ही, चंग-रंग गोपाल ॥9॥
करौं कुबत जग कुटिलता, तजौं न दीनदयाल ।
दुखी होहुगे, सरल चित, बसत त्रिभंगी लाल ॥10॥
जात-जात बित होत है, ज्यों जिय में सन्तोष ।
होत-होत जो होइ तौ, होइ घरी में मोष ॥11॥
समै-समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोइ ।
जाकी रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ ॥12॥
दीरघ सांस न लेहि दुख, सुख साईंहि न भूलि ।
दई-दई ! क्यों करत है, दई दई सु कबूलि ॥13॥
इही आस अटक्यो रह्यो अलि गुलाब के मूल ।
ह्वै हैं बहुरि बसन्त रितु, इन डारन वे फूल ॥14॥
नर की अरु नल नीर की, गति एकै करि जोइ ।
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊँचो होइ ॥15॥
करि फुलैल को आचमन, मीठो कहत सराहि ।
रे गंधी ! मति अंध तू, इतर दिखावत काहि ॥16॥

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा तत्त्व एवं कला पक्ष**

1. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली में क्या रूप होंगे ?
   अजौं, हिय-धर, जात-जात, होत-होत, समैं-समैं, जाकी, जेती, जितै, वित, तेती ।
2. निम्नलिखित शब्दों के प्रसंगानुसार अर्थ स्पष्ट कीजिए ।
   अनबूड़े बूड़े, तर्योना, नाक, निदाघ, गुन-विस्तारन, त्रिभंगीलाल ।
3. 'अकस', 'कबूलि', 'फुलैल,' 'इतर' ये शब्द किस भाषा के हैं ? बिहारी को इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग अपनी कविता में क्यों करना पड़ा ?
4. करौं कुबत……………त्रिभंगीलाल ।।
   इस दोहे में अर्थ चमत्कार किस कथन में है ?
   (क) कवि के कुवृत (बुरे आचरण) में ।
   (ख) कवि की न त्यागने की प्रार्थना में ।
   (ग) उपास्य के दुःखी होने की धमकी में ।
   (घ) सरल हृदय में बसने में ।
   (च) तीन जगह से टेड़े (त्रिभंगीलाल) कृष्ण के सरल हृदय में बसने में ।
   (……………)
5. कनक-कनक…………………पाये बौराय ।
   उक्त दोहे में कौन-सा अलंकार है ?
   (क) श्लेष (ख) यमक
   (ग) वक्रोक्ति (घ) लाटानुप्रास
   (च) वत्यानुप्रास
   (……………)
6. अन्योक्ति अलंकार किसे कहते हैं ? बिहारी के दोहों में से उन दोहों को छाँटिए जिनमें अन्योक्ति अलंकार का प्रयाग किया गया है ।

**भाव पक्ष ।**

7. (क) तन्त्री नाद…………………………सुब अंग ।
   (ख) या अनुरागी…………………………उज्जलु होय ।
   उक्त दोहों में किस अलंकार के प्रयोग से कवि ने भावोत्कर्ष

(भाव स्पष्टता) का प्रयास किया है ? इस अलंकार की व
परिभाषा होगी ?

8. श्लेष तथा यमक अलंकार में क्या अन्तर है। विहारी के दो द
लेकर अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
9. कवि के अनुसार सारा संसार तपोवन के रूप में किस कारण
परिवर्तित हो गया है ?
10. भौंरा गुलाब में मूल में किस आशा से अटका रहता है ?
11. होत-होत..................................मोष।
नर की..................................ऊँचो होय।
उक्त दोहों में आये बिहारी के नीति कथनों को स्पष्ट कीजिए।
12. पठित दोहों के आधार पर बिहारी की काव्यगत विशेषताओं
वर्णन कीजिए।

**अन्य**—अतिरिक्त अध्ययन कर यह जानने का प्रयास कीजिये
बिहारी रीतिकालीन कविता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कवि है।

---

# राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

## जन्म : सं. 1886 □ मृत्यु : सं. 1964

**जीवन-परिचय :**

चिरगांव जिला झाँसी के श्रेष्ठि प्रवर श्री रामचरण के पाँच पुत्रों
एक थे श्री मैथिलीशरण गुप्त। नवम् कक्षा तक अंग्रेजी की स्कूली शिक्षा
बाद गुप्त जी का सारा अध्ययन स्वाध्याय से हुआ है। 'हे भक्त' कविता
प्रसन्न होकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें प्रोत्साहित किया। सी
सरल जीवन; सहज भावों का **काव्य और गांधीवादी अहिंसा-सत्याग्रह**

ास्थाएँ गुप्त जी को सभी का श्रद्धा-भाजन बना सकी। राज्य सभा के नोनीत सांसद के रूप में भी गुप्त जी की हित-चिन्ता हिन्दी को समृद्ध बनाने ो रही। उनका जीवन पूर्णतः हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रने के लिए समर्पित रहा। उन्होंने उपेक्षित नारी जीवन के प्रति करुणा एवं हानुभूति जाग्रत कर उसे जनमानस में प्रतिष्ठित किया। उर्मिला, कैकयी ोर यशोधरा उनके काव्य के अमर चरित्र हैं। 344

**चनाएँ :**

गुप्त जी की रचनाएँ दो भागों में बाँटी जा सकती हैं—मौलिक, नूदित। मौलिक रचनाओं में रंग में भंग, भारत-भारती, जयद्रथ वध, चवटी, पद्य-प्रबन्ध, शकुन्तला, पत्रावली, वैतालिक, किसान, स्वदेश संगीत, रुकुल, हिन्दू, शक्ति, सैरन्ध्री, बन-संहार, बन-वैभव, साकेत, यशोधरा, ापर, सिद्धराज, नहुष, मौर्यविजय, मंगलघट, मेघनाथ वध, हिडिम्बा, दक्षिणा, कुणाल-गीत, अर्जन और विसर्जन और अजित, जय भारत ादि हैं। अनूदित रचनाओं में बिरहनी ब्रजांगना, वीरांगना, प्लासी-युद्ध, ामर-खैयाम, स्वप्न-वासवदत्ता, पृथ्वी-पुत्र, चन्द्रहास, अनघ और तिलोतमा ादि रचनाएँ हैं।

**ाव्यगत विशेषताएँ :**

राष्ट्रीय संस्कृति का समन्वय और उन्नयन गुप्त जी की रचनाओं का ूल स्वर है। इनकी रचनाओं के माध्यम से खड़ी बोली का परिष्कार हुआ ै। मानवतावादी संस्कृति इनके काव्य का आदर्श है।

शैली की दृष्टि से प्रबन्धात्मक गीतात्मकता इनकी अनूठी देन है। ुप्त जी की रचनाओं में लगभग सभी रसों का वर्णन मिलता है। अलंकारों के प्रयोग में गुप्त जी ने परम्परा का पालन किया है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि परम्परागत अलंकारों का उन्होंने यथा स्थान प्रयोग किया है। उनकी प्रवृत्ति शब्द-चमत्कार की ओर नहीं रही।

भारतीय संस्कृति और अन्तर्राष्ट्रीयता की अन्तर्धारा उनके समूचे काव्य को जनमानस को छूने वाला बनाती है और खड़ी बोली को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय गुप्त जी को ही है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

'चित्रकूट में सीता' नामक कविता गुप्त जी के 'साकेत' महाकाव्य से

ली गई है। राजवधू सीता राम और लक्ष्मण के साथ वन में भी किस प्र
आनन्दित रहती हैं, स्वावलम्बी बनकर सुख का अनुभव करती हैं।
वर्ण्य विषय है। 'परीक्षा' नामक कविता गुप्त जी के 'यशोधरा' खण्ड-क
से ली गई है। इसमें यशोधरा के माध्यम से नारी स्वाभिमान का चि
किया गया है।

दोनों रचनाएँ सरल तथा सुबोध हैं। दोनों रचनाओं में प्रबन्धात्म
के साथ-साथ गीति तत्व भी उनकी काव्य-शैली का प्रतिनिधित्व करता
इन रचनाओं में द्विवेदी युगीन खड़ी बोली का परिष्कृत रूप देखने
मिलता है।

## मैथिलीशरण गुप्त

**चित्रकूट में सीता :**

"निज सौध सदन में उटज पिता ने छाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

सम्राट स्वयं प्राणेश, सचिव देवर हैं,
देते आकर आशीष हमें मुनिवर हैं।
धन तुच्छ यहाँ,—यद्यपि असंख्य आकर हैं,
पानी पीते मृग-सिंह एक तट पर हैं।
सीता रानी को यहाँ लाभ ही लाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

क्या सुन्दर लता-वितान तना है मेरा,
पुंजाकृति गुंजित कुंज घना है मेरा।
जल निर्मल, पवन पराग-सना है मेरा,
गढ़ चित्रकूट दृढ़-दिव्य बना है मेरा।
प्रहरी निर्झर, परिखा प्रवाह की काया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।

औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ।
श्रमवारि बिन्दु फल स्वास्थ्य शुक्ति फलती हूँ,
अपने अंचल से व्यंजन आप झलती हूँ।

तनु-लता सफलता-स्वादु आज ही आया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
जिनसे ये प्रणयी प्राण त्राण पाते हैं,
जी भरकर उनको देख जुड़ा जाते हैं।
जब देव कि देवर विचर-विचर आते हैं,
तब नित्य नये दो-एक द्रव्य लाते हैं।
उनका वर्णन ही बना विनोद सवाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
किसलय-कर स्वागत–हेतु हिला करते हैं,
मृदु मनोभाव-सम सुमन खिला करते हैं।
डाली में नवफल नित्य मिला करते हैं,
तृण-तृण पर मुक्ता-भार झिला करते हैं।
निधि खोले दिखला रही प्रकृति निज माया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
कहता है कौन कि भाग्य ठगा है मेरा ?
वह सुना हुआ भय दूर भगा है मेरा।
कुछ करने में अब हाथ लगा है मेरा,
वन में ही तो गार्हस्थ्य जगा है मेरा।
वर वधू जानकी बनी आज यह जाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
फल-फूलों से है लदी डालियाँ मेरी,
वे हरी पत्तलें, भरी थालियाँ मेरी।
मुनि बालाएँ हैं यहाँ आलियाँ मेरी,
तटिनी की लहरें और तालियाँ मेरी।
क्रीड़ा-सामग्री बनी स्वयं निज छाया।
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
मैं पली पक्षिणी विपिन-कुंज-पिंजर की,
आती है कोटर-सदृश मुझे सुध घर की।
मृदु-तीक्ष्ण वेदना एक एक अन्तर की।
बन जाती है कल-गीति समय के स्वर की।

कब उसे छेड़ यह कण्ठ यहाँ न अघाया ।
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया ।

गुरुजन–परिजन सब धन्य ध्येय हैं मेरे,
औषधियों के गुण–विगुण श्रेय हैं मेरे ।
वन-देव-देवियाँ आतिथेय हैं मेरे,
प्रिय–संग यहाँ सब प्रेय श्रेय हैं मेरे ।
मेरे पीछे ध्रुव-धर्म स्वयं ही धाया ।
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया ।

नाचो मयूर, नाचो कपोन के जोड़े,
नाचो कुरंग, तुम लो उड़ान के तोड़े ।
गाओ दिवि, चातक, चटक, भृंग भय छोड़े,
वैदेही के वनबास–वर्ष हैं थोड़े ।
तितली, तूने यह कहाँ चित्रपट पाया ?
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया ।

आओ कलापि, निज चन्द्रकला दिखलाओ,
कुछ मुझसे सीखो और मुझे सिखलाओ ।
गाओ पिक, मैं अनुकरण करूँ, तुम गाओ,
स्वर खींच तनिक यों उसे घुमाते जाओ ।
शुक पढ़ो,–मधुर फल प्रथम तुम्ही ने खाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया ।

आये राजहंसि, तू तरस-तरस क्यों रोती,
तू शक्ति-वंचिता कहीं मैथिली होती ।
तो श्यामल तनु के श्रमज-बिन्दुमय मोती,
निज व्यंजन-रूप से तू अंकोर सुध खोती,
जिन पर मानस ने पद्म-रूप मुँह बाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया ।

ओ निर्झर, झर झर नाद सुनाकर झड़ तू,
पथ के रोड़ों से उलझ-सुलझ, बढ़-अड़ तू ।
ओ उत्तरीय, उड़, मोद-पयोद, घुमड़ तू,
हम पर गिरि-गद्गद भाव, सदैव उमड़ तू ।

जीवन को तूने गीत बनाया, गाया।
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
ओ भोली कोल-किरात-भिल्ल-बालाओ,
मैं आप तुम्हारे यहाँ आ गई, आओ।
मुझको कुछ करने योग्य काम बतलाओ,
दो अहो! नव्यता और भव्यता पाओ।
लो, मेरा नागर भाव भेंट जो लाया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
सब ओर लाभ ही लाभ बोध-विनिमय में,
उत्साह मुझे है विविध वृत्त–संचय में।
तुम अर्द्ध नग्न क्यों रहो अशेष समय में,
आओ, हम कातें-बुनें गान की लय में।
निकले फूलों का रंग, ढंग से ताया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।"

('साकेत' से)

## परीक्षा

रे मन, आज परीक्षा तेरी।
विनती करती हूँ मैं तुझसे, बात न बिगड़े मेरी।
अब तक जो तेरा निग्रह था,
बस अभाव के कारण वह था।
लोभ न था, जब लाभ न यह था,
सुन अब स्वागत भेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।
दो पग आगे ही वह धन है,
अवलम्बित जिस पर जीवन है
पर क्या पथ पाता यह जन है
मैं हूँ और अंधेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।
यदि वे चल आये हैं इतना,

तो दो पग उनको है कितना
क्या भारी वह, मुझको जितना
पीठ उन्होंने फेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।
सब अपना सौभाग्य मनावें,
दरस-परस निःश्रेयस पावें।
उद्धारक चाहें तो आवें,
यहीं रहे यह चेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

[ 'यशोधरा' से

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कला पक्ष :**

1. निम्नलिखित समस्त पदों में आये समास बताइए :
राज-भवन, मृग-सिंह, लता-वितान, मुक्ता-भार, मृदु-तीक्ष्ण, व
संचय।
2. निम्नलिखित वाक्यांशों का प्रसंगानुसार अर्थ लिखिए :
पुंजकृति गुंजित कुंज, श्रमवारि विन्दु-फल स्वास्थ्य, तनु-लता सफल
स्वादु, गुण-विगुण गेय हैं, विविध वृत्त संचय।
3. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए
उनका अर्थ स्पष्ट हो जाय—औरों के हाथों पलना, अपने पैरों
खड़ा होना, प्राण जुड़ाना, मुँह बाना, सुध-खोना।
4. 'बात बिगड़ना' मुहावरे का सही अर्थ कौन सा है ?
(क) बात गलत हो जाना (ख) बात को तोड़ना-मरोड़ना
(ग) प्रतिष्ठा का गिरना (घ) बात का उलझना
(च) नाम बिगड़ जाना (
5. प्रस्तुत रचनाओं में गुप्त जी ने बहुत सुन्दर तत्सम शब्दावली
प्रयोग किया है। उनकी एक सूची तैयार कीजिये और उनके अ
लिखिए।

**भाव पक्ष :**

6. सीता की कुटिया में राज-भवन की कौन-कौनसी विशेषताएँ किस प्रकार विद्यमान हैं ?
7. किन कारणों से सीता यह अनुभव करती है कि वन में आना उनके लिये लाभदायक ही रहा है ?
8. निधि खोले..............................निज माया ।
   उक्त कथन से कवि का क्या तात्पर्य है ?
9. 'चित्रकूट में सीता' कविता की अन्तिम चार पंक्तियों में गाँधीवादी विचारधारा की जो झलक है—उस पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।
10. 'परीक्षा' कविता 'यशोधरा' खण्ड-काव्य की किस घटना पर आधारित है ?
11. बहुत दिनों से बिछुड़े हुए अपने पति सिद्धार्थ के लौटने पर भी यशोधरा स्वयं मिलने नहीं जाना चाहती और प्रतीक्षा ही करती रहती हैं । इसके पीछे उनका क्या मनोभाव था ?
12. पठित कविताओं के आधार पर 'गुप्त' जी की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

---

# जयशंकर प्रसाद

**जन्म : सं. 1946 □ मृत्यु : सं. 1994**

**जीवन-परिचय :**

जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के 'सुघनी साहु' श्री देवीप्रसाद जी के प्रतिष्ठित परिवार में हुआ । उनके पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्हें अपने पैतृक व्यवसाय के कारण अपनी दुकान सम्भालनी पड़ती थी अतः सातवीं कक्षा के बाद मे ही उनकी शिक्षा घर पर ही होने लगी । पं. दीनबन्धु उन्हें वेद-उपनिषद् पढ़ाते थे । घर पर ही अंग्रेजी शिक्षा के अध्ययन की व्यवस्था

थी। उन्होंने इतिहास, पुराण, स्मृति आदि का भी गहन अध्य
किया था।

प्रसाद जी ने अपनी काव्य-रचना समस्या-पूर्ति के माध्यम से प्रा
की। दुकान पर बैठे-बैठे अवकाश के क्षणों में वे यही कार्य करते थे। ध
धीरे इनकी समस्या-पूर्तियों की चर्चा वाराणसी के विद्वानों में होने ल
'इन्दु' नामक मासिक पत्रिका में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थी और
पत्रिका ने उन्हें कबि के रूप में लोकप्रिय बनाया।

राजयक्ष्मा रोग से पीड़ित होकर इनके असामयिक निधन से हि
साहित्य प्रेमियों को बड़ा आघात लगा।

**रचनाएँ :**

प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने साहित्य के वि
क्षेत्रों में अपना स्वतन्त्र मार्ग बनाया। उन्होंने नाटक, उपन्यास, काव्य, नि
आदि सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उनकी प्रमुख क
रचनाएँ निम्न प्रकार हैं—

कामायनी, करुणालय, कानन-कुसुम, चित्राधार, झरना, लहर, अ
प्रेम-पथिक आदि।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

प्रसाद जी छायावाद तथा रहस्यवाद के युगप्रवर्तक कवि माने
हैं। हिन्दी काव्य को द्विवेदी युगीन नीतिवादी इतिवृत्तिमूलक भावनाअ
मुक्त कर उसे एक स्वतन्त्र प्रौढ़ भाव-भूमि पर अग्रसर करने वाले वे हिन
प्रथम कवि हैं।

प्रसाद जी मूलतः कल्पना और भावना के कवि हैं। भावना वे
में भी वे प्रधानतः प्रेम और सौन्दर्य के कबि हैं। प्रसाद जी राष्ट्र-प्रेमी ह
साथ मानवतावादी भी हैं। प्रसादजी के काव्य में नारी श्रद्धा के महत्व
गौरव की प्रतिष्ठा पायी जाती है। 'कामायनी' में नारी का प्रतीक है। प्र
चित्रण में प्रसाद जी ने अपनी छायावादी तथा रहस्यवादी दोनों प्रवृत्ति
परिचय दिया है।

प्रसाद जी की शैली ठोस, स्पष्ट तथा परिष्कृत है। छोटे-छोटे
गम्भीर भाव भर देना और फिर उनमें गेयता का विधान करना उनकी
की प्रमुख विशेषता है। वे मुक्तक तथा प्रबन्ध-काव्य दोनों रचनाओं में
धिक पटु थे। उनकी रचनाओं में शृंगार, वीर, करुण, शान्त आदि का

परिपाक हुआ है। प्रसाद जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। उसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य रहता है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

प्रथम रचना 'चन्द्रगुप्त' नाटक से उद्धृत की गई हैं। यह रचना एक ओर भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम पृष्ठों की ओर संकेत करती है तो दूसरी ओर उनके मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय देती है।

दूसरी कविता 'उषा सुनहले तीर बरसती' प्रसाद जी के 'कामायनी' महाकाव्य से ली गई है। जल-प्रलय के पश्चात् प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई पड़ने लगे ? इन परिवर्तनों का कारण क्या है ? इस सतत् परिवर्तन-शीलता के सामने देव-संस्कृति भी कितनी दुर्बल सिद्ध हुई, यही इस काव्यांश का वर्णय विषय है।

दोनों कविताएँ प्रसाद जी के भाषा-सौष्ठव अभिव्यक्ति की सहजता तथा उनकी निजी काव्य-शैली का प्रतिनिधित्व करती हैं।

## जयशंकर प्रसाद

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरस तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरु शिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल-कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किये, समझ नीड़ निज प्यारा।।
बरसाती आँखों के बादल बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनन्त की, पाकर जहाँ किनारा।
हेम-कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे।।
मन्दिर ऊँघते रहते जब, जग कर रजनी भर तारा।"

(चन्द्रगुप्त नाटक से)

## 'उषा सुनहले तीर बरसती'

उषा सुनहले तीर बरसती
जय-लक्ष्मी सी उदित हुई।
उधर पराजित काल रात्रि भी
जल में अन्तर्निहित हुई।

वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का
आज लगा हँसने फिर से;
वर्षा बीती, हुआ सृष्टि में
शरद विकास नये सिर से।

नव कोमल आलोक बिखरता
हिम संसृति पर भर अनुराग;
सित सरोज पर क्रीड़ा करता
जैसे मधुमय पिंग पराग।

धीरे-धीरे हिम – आच्छादन
हटने लगा धरातल से।
जगीं वनस्पतियाँ अलसाई
मुख धोती शीतल जल से।

नेत्र निमीलन करती मानो
प्रकृति प्रबुद्ध लगी होने;
जलधि लहरियों की अंगड़ाई
बार-बार जाती सोने।

सिंधु सेज पर धरा बधू अब
तनिक संकुचित बैठी सी;
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में
मान किये सी ऐंठी सी।

देखा मनु ने वह अति रंजित,
विजन विश्व का नव एकान्त;
जैसे कोलाहल सोया हो
हिम शीतल जड़ता सा श्रान्त।

इन्द्रनील मणि महा चषक था
सोम-रहित जलटा लटका;
आज पवन मृदु साँस ले रहा
जैसे बीत गया खटका।

वह विराट था हेम घोलता
नया रंग भरने को आज;
कौन ? हुआ यह प्रश्न अचानक
और कुतूहल का था राज।
विश्वदेव, सविता या पूषा
सोम, मरुत, चंचल, पवमान;
वरुण आदि सब घूम रहे हैं
किसके शासन में अम्लान !
किसका था भ्रू-भंग प्रलय सा
जिसमें यह सब विकल रहे;
अरे ! प्रकृति के शक्ति-चिह्न ये
फिर भी कितने निबल रहे !
विकल हुआ सा काँप रहा था,
सकल भूत चेतन समुदाय;
उनकी कैसी बुरी दसा थी
वे थे विवश और निरुपाय।
देव न थे हम और न ये हैं,
सब परिवर्तन के पुतले।
हाँ, कि गर्व-रथ में तुरंग सा
जितना जो चाहे जुत ले।

(कामायनी से)

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा तत्व एवं कला पक्ष :**

1. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह करके बताइये कि इनमें कौन-सा समास है :—
हेम-कुम्भ, शरद-विकास, हिम-आच्छादन, जलधि-लहरियों, गर्व-रथ।
2. निम्नलिखित शब्दों के प्रसंगानुसार अर्थ लिखिए—
क्षितिज, तामरस-गर्भ-विभा, मंगल-कुंकुम, कालरात्रि, हिम-संसृति,

पिंगपराग, नेत्र-निमीलन, अनिरंजित, महाचपक, भ्रू-भंग, अम्ला

3. 'अन्तर्निहित' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?

(क) अन्तर+निहित (ख) अन्तर+निहित

(ग) अन्तः+निहित (घ) अन्तः+निहित

(च) अन्तः+निहीत ( ......

4. निम्नलिखित वाक्यांशों से निकलने वाले व्यंग्यार्थ को कीजिए—

(क) नाच रही तरु-शिखा मनोहर।

(ख) उषा सुनहले तीर बरसती।

(ग) वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का, आज लगा हँसने फिर

(घ) इन्द्रनील मणि महाचपक था।

5. निम्नलिखित पंक्तियों में कवि ने किन अलंकारों का प्रयोग किया

(क) लघु सुरधनु..........................पंख पसारे।

(ख) उषा सुनहले..........................उदित हुई।

(ग) सिन्धु....................................बैठी सी।

**भाव पक्ष :**

6. 'अरुण यह....................................हमारा' 'इस कविता प्रेम तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का आकर्षक मिश्रण है।' इस क पुष्टि कीजिए।

7. 'उषा सुनहले तीर बरसती' इस कविता में किस घटना का वर्ण

8. 'प्रलय-त्रास से मुक्त होने पर प्राकृतिक दृश्यों में क्या-क्या प होने लगे,' यह अपने शब्दों में लिखिए।

9. उन पंक्तियों को छांटकर लिखिए जिनमें प्रसाद जी ने प्र मानवीकरण किया है।

10. आशय स्पष्ट कीजिए—

(क) वह विराट..............................को आज।

(ख) किसका था..............................निबल रहे।

(ग) देव न थे...................................जुतले।

11. पठित कविताओं के आधार पर प्रसाद जी की काव्यगत बि का वर्णन कीजिए।

——

# सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

**जन्म : सं. 1953, ☐ मृत्यु : सं. 2016**

**ीवन-परिचय :**

गढ़कोला जिला उन्नाव के श्री रामसहाय त्रिपाठी के घर उनका जन्म आ। महिषादल राज्य में बंगला के माध्यम से उनकी शिक्षा हुई। संस्कृत था अंग्रेजी का उन्होंने विशेष अध्ययन किया। हिन्दी की ओर उनका झुकाव पनी पत्नी मनोहरा देवी के कारण हुआ। यद्यपि परिजनों की मृत्यु से नराला जी विरक्त से हो गये थे तथापि भारतीय दर्शन उनके हृदय को ाशा से आलोकित करता रहा निराला जी संगीत के गहरे जानकार थे ातः स्वरलय की पकड़ से उन्होंने काव्यात्मा को सजाया सँवारा। राम-कृष्ण रमहंस तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर से वे अत्यधिक प्रभावित थे।

**चनाएँ :**

अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, हवामहल, बेला, अणिमा, नये पत्ते, अपरा, अर्चना, आराधना, गीतगुंजन, साध्य काकली उनकी मौलिक रचनाएँ हैं। सभी गीतियों में दर्शन की अन्तर्धारा निराला को शाश्वत ीतिकार बनाती है। 'तुलसीदास' उनका प्रबन्ध-काव्य है जो भाषा के ओज से आलोकित है।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

छायावाद से नई कविता तक निराला जी हिन्दी कविता के मार्ग-दर्शक तथा क्रान्तिकारी कवि रहे हैं। नये काव्य के वे प्रणेता और शिल्प की दृष्टि से वे प्रयोग पटु रहे हैं। काव्य भाषा को जहाँ उन्होंने नया कलेवर दिया, वहाँ मुक्त छन्द की लय-गीत एवं संगीत से उन्होंने छन्द-रचना को एक नया रूप दिया। दलित वर्ग के वे अप्रतिम अभिवक्ता हैं। उनका काव्य व्यंग्य, आक्रोश से रिक्त और बड़ा मर्म-भेदी है। वेदान्त-दर्शन उनके काव्य का मूल स्वर है। भक्ति, कर्म और ज्ञान का समन्वय जिस चारुता से उन्होंने किया, वह अन्यत्र दुर्लभ है। छायावाद में रहस्यवाद का संस्पर्श, मानवतावादी भावना प्रगतिशील चिन्तन, देश-भक्ति और राष्ट्रीयता से इनका काव्य ओत-प्रोत है। उनकी गीति-पद्धति नाद-सौन्दर्य के कारण बहुत ही आकर्षक एवं प्रभावशाली बन पड़ी है। वे अपने काव्य में संस्कृत-गर्भित शब्दावली तथा बोलचाल की

भाषा के प्रयोग में सिद्धहस्त माने जाते हैं। निराला ने भाषा, भाव, छन्द शैली सभी दृष्टियों से अपने युगान्तकारी महाकवि रूप को हिन्दी साहि प्रतिष्ठित किया है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

उनकी 'बसन्त' नामक कविता निराला जी की प्रकृति-सौन्दर्य चि पटुता को प्रकट करती है। भाषा का प्रवाह, उसकी कोमलता तथा भावाभिव्यक्ति अत्यन्त प्रभावशाली है। यह कविता छायावादी के अ मानवीकरण का एक अच्छा उदाहरण है। अतुकान्त छन्द की लय उ संगीत मर्मज्ञता को उजागर करती है।

'राम की शक्ति-पूजा' नामक कविता से उनकी प्रबन्धात्मक क शैली का अनुमान लगाया जा सकता है। भावानुसार भाषा इस कवित दूसरी विशेषता है। ओजमयी भाषा का प्रवाह अत्यन्त सराहनीय है। कविता भारतीय संस्कृति की एक झलक प्रस्तुत करती है।

## सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

### बसंत

सखी बसंत आया।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया।
किसलय-वसना, नवलय लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,
मधुप-वृन्द बन्दी
पिक-स्वर नभ सर साया।
लता-मुकुल-हार-गन्ध-भार भर
बही पवन बन्द मन्द मन्दतर,
जागी नयनों में बन
यौवन की माया।
आवृत सरसी-उर-सरसिज उठे
केशर के केश कली के छुटे,
स्वर्ण - शस्य - अंचल
पृथ्वी का लहराया।

## राम की शक्ति-पूजा

"कहती थी माता मुझे सदा राजीव नयन !
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण,
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"
कह कर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक;
ले लिया हस्त, लक-लक करता वह महाफलक,
ले अस्त्र बाम कर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गए सुमन।
जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय–
"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम !"
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने—"सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर–स्कन्ध पर रहा दक्षिण हरि पर;
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध–अस्त्र–सुज्जित;
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित,
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बाँयें रण–रंग–राग,
मस्तक पर शंकर !" पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्रीराघव हुए प्रणत मन्दस्वर वन्दन कर।
"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।"
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

('राम की शक्ति पूजा' का अंश। 'अनामिका' से)

### अभ्यासार्थ प्रश्न

**(भा)षा-तत्त्व एवं कला पक्ष :**

1. प्रसंगानुसार अर्थ लिखिए—
   किसलय–वसना; मधुप–वृन्द वन्दी, मन्द–मन्दतर, यौवन की माया;
   पुरश्चरण, मन्द–स्मित।
2. अतुकान्त कविता की क्या विशेषताएँ हैं ? निराला जी की कविताओं पर इस दृष्टि से टिप्पणी लिखिए।

3. 'नवोत्कर्ष' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
   (क) नव + उत्कर्ष (ख) नवो + उत्कर्ष
   (ग) नव + ऊत्कर्ष (घ) नव + उत्कर्ष
   (च) नवो + अत्कर्ष (
4. "भाषा-प्रवाह तथा भावानुसार भाषा के प्रयोग में निराला जी बे
   हैं।" 'बसंत' कविता के आधार पर उक्त कथन की सार्थकता
   अपने विचार प्रकट कीजिए।

**भाव पक्ष :**

5. मानवीकरण से क्या तात्पर्य है ? निराला जी की किस कवित
   मानवीकरण हुआ है और कैसे ?
6. वर्णनात्मकता और भावात्मकता की दृष्टि से 'बसन्त' तथा '
   की शक्ति पूजा' कविता की तुलना कीजिए।
7. आशय स्पष्ट कीजिए—
   (क) किसलय वसना............................नभ सरसाया।
   (ख) जगी नयनों............................माया।
8. राम ने दुर्गामाता को क्या समर्पित करने का निश्चय किया ?
9. कवि ने दुर्गा का क्या स्वरूप बताया है ?
10. महाशक्ति दुर्गा प्रकट होकर कहाँ लीन हो गई ?

---

# महादेवी वर्मा

## जन्म : सन् 1907

**जीवन-परिचय :**

महादेवी वर्मा का जन्म फरूखाबाद के एक सम्पन्न परिवार में
उनके पिता गोविन्द प्रसाद वर्मा और उनकी माता हेमरानीदेवी दोनों
प्रेमी थे। श्रीमती हेमरानी भी कभी-कभी कविता करती थीं तथा स

ी के नाना ब्रज भाषा के कवि थे। सं. 1973 में उनका विवाह डॉ. रूपनारायण वर्मा से हुआ। महादेवी वर्मा की वास्तविक शिक्षा का ारम्भ उनके विवाह के पश्चात् हुआ। उनका विद्यार्थी-जीवन अत्यन्त सफल ा। सं. 1990 में संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा की। उन्होंने दर्शन शास्त्र र विशेषतया भारतीय दर्शन शास्त्र का गम्भीर अध्ययन किया है।

महादेवी जी का जीवन अब तक शिक्षा से सम्बन्धित रहा है। प्रयाग हिला-विद्यापीठ की प्राचार्या के रूप में उन्होंने उक्त संस्था का सफल संचालन ा नेतृत्व किया है।

**नाएँ :**

महादेवी जी की निम्नलिखित काव्य-कृतियाँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य धि हैं—नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य-गीत और दीप-शिखा। इन रचनाओं : उन्हें अनेक बार सम्मानित और पुरस्कृत किया जा चुका है।

**हादेवी जी के काव्य की विशेषताएँ :**

महादेवी जी छायावादी युग की प्रसिद्ध कवयित्री हैं। इन्हें छायावादी वि प्रसाद, पंत और निराला से काफी प्रेरणा मिली किन्तु इन्होंने इस प्रेरणा छायावाद-काव्य प्रेरणा को) को आत्मसात कर अपने ढंग से उसे अपनाया। नकी कविता में प्रकृति के विविध सौन्दर्यपूर्ण अंगों पर चेतन-सत्ता का आरोप र उनका मानवीकरण किया गया है।

महादेवी जी के काव्य की दूसरी विशेषता है रहस्यवाद। इन रचनाओं आत्मा-परमात्मा के भावात्मक सम्बन्धों के जितने सुन्दर चित्र महादेवी जी ी कविताओं में मिलते हैं, उतने अन्यत्र दुर्लभ हैं। आत्मा और परमात्मा के म्बन्धों के लिये महादेवी जी ने प्रकृति को बड़ा सशक्त माध्यम बनाया है किन्तु महादेवी जी का रहस्यवाद कबीर, मीरा आदि की तरह साधनात्मक न ोकर भावात्मक है।

महादेवी जी ने अपनी रचनाएँ गीति-काव्य की शैली में लिखी हैं। नकी गहन अनुभूतियाँ संगीत के माध्यम से अभिव्यक्त हुई हैं। नाद-सौन्दर्य ा अतिरिक्त कोमल और मधुर पद-विन्यास इनके काव्य की अतिरिक्त विशेषता है।

महादेवी जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। उसमें संस्कृत क तत्सम शब्दों के साथ-साथ नैन, बैन, ब्यार आदि बोलचाल की भाषा के

शब्द भी प्रयुक्त हुए है। इनकी भाषा अत्यन्त कोमल और मधुर है और पर उनका पूर्ण अधिकार है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

प्रस्तुत दोनों रचनाएँ क्रमशः 'नीरजा' और 'नीहार' नामक क संग्रहों से ली गई हैं। प्रथम कविता 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' छायावादी कविता का प्रतिनिधित्व करती है। महादेवी जी ने 'ब रजनी' को नारी के रूप में चित्रित कर प्रकृति के मानवीकरण का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

दूसरी कविता 'निशा को धो देना राकेश' इनकी रहस्यवादी क शैली का सुन्दर उदाहरण है। यह रहस्यवाद की चरम सीमा है कि अ चेतन सत्ता कवयित्री को प्रत्यक्ष रूप से जीवन-संगीत की शिक्षा देती होती है और कवयित्री अपने स्वर को उस विराट् की विश्ववीणा के स्वरों में लीन कर देना चाहती है।

## महादेवी वर्मा

धीरे–धीरे उतर क्षितिज से
आ वसन्त रजनी !

तारकमय नव वेणीबन्धन
शीश-फूल कर शशि का नूतन,
रश्मि-वलय सित घन-अवगुण्ठन,
मुक्ताहल अभिराम बिछा दे
चितवन से अपनी !
पुलकती आ वसन्त-रजनो !

मर्मर की सुमधुर नूपुर-ध्वनि,
अलि-गुंजित पद्मों की किंकिणि,
भर पदगति में अलस तरंगिणि,
तरल रजत की धार बहा दे
मृदु स्मित से सजनी !
विहँसती आ वसन्त-रजनी !

पुलकित स्वप्नों की रोमावलि,
कर में हो स्मृतियों की अंजलि,
मलयानिल का चल दुकूल अलि !
घिर छाया सी श्याम, विश्व को
आ अभिसार बनी !
सकुचती आ वसन्त-रजनी !

सिहर सिहर उठता सरिता-उर,
खुल खुल पड़ते सुमन सुधा-भर,
मचल मचल आते पल फिर फिर,
सुन प्रिय की पद-चाप हो गई
पुलकित यह अवनी !
सिहरती आ वसन्त-रजनी !

—नीरजा

## निशा को, धो देता राकेश

निशा को, धो देता राकेश
चाँदनी में जब अलकें खोल,
कली से कहता था मधुमास,
"बता दे मधुमदिरा का मोल";
झटक जाता था पागल वात
धूल में तुहिन-कणों के हार,
सिखाने जीवन का संगीत
तभी तुम आये थे इस पार ।।

बिछाती थी सपनों के जाल,
तुम्हारी वह करुणा की कोर,
गई वह अधरों की मुस्कान
मुझे मधुमय पीड़ा में बोर;
भूलती थी मैं सीखे राग
बिछलते थे कर बारम्बार,
तुम्हें तब आता था करुणेश !
उन्हीं मेरी भूलों पर प्यार

गए तब से कितने युग बीत,
हुए कितने दीपक निर्वाण !
नहीं पर मैंने पाया सीख
तुम्हारा सा मनमोहन गान ।

नहीं अब गाया जाता देव !
थकी अंगुली, हैं ढीले तार
विश्ववीणा में अपनी आज
मिला लो यह अस्फुट झंकार !

( 'नीहार' से )

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा तत्व एवं कला पक्ष :**

1. निम्नलिखित शब्दों का प्रसंगानुसार अर्थ स्पष्ट कीजिए—
रश्मिवलय, अवगुण्ठन, मृदु-स्मिति, अभिसार, अवनी, तुहिन-कण, निर्वाण अस्फुट ।
2. 'पुलकित' शब्द में कौन सा प्रत्यय है ? इस प्रत्यय का उपयोग करते हुए पाँच नये शब्दों की रचना कीजिए ।
3. 'सरिता–उर' षष्ठी तत्पुरुष समास का उदाहरण है । महादेवी जी की दोनों रचनाओं में से इसी प्रकार के अन्य उदाहरणों की सूची बनाइये ।
4. "भूलती थी..........................भूलों पर प्यार ।"
इस पंक्ति के अनुसार भूल क्या थी ?
(क) राग न सीखना (ख) हाथों का बार-बार फिसलना
(ग) सीखे हुए राग को भूलना (घ) बार-बार भूल को दोहराना
(च) भूलों से प्यार करना
5. 'विहँसती, सिहरती, सकुचती' शब्दों में से मूल क्रिया तथा प्रत्यय को अलग-अलग करके बताइये ।

**भाव तत्व :**

6. महादेवी जी ने 'वसन्त-रजनी' को एक नारी के रूप में चित्रित किया है । नारी के इस रूपक को भलीभाँति स्पष्ट कीजिए ।

7. "तभी तुम आये थे इस पार" इस पंक्ति में 'तुम' शब्द किसके लिये आया है ?
8. "भावों की कोमलता अभिव्यंजना में महादेवी जी अद्वितीय हैं।" पठित कविताओं के उदाहरण देकर उक्त कथन की पुष्टि कीजिए।
9. आशय स्पष्ट कीजिए—
(क) निशा की..............................इस पार।
(ख) सिहर सिहर..........................था वसन्त-रजनी।
10. महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा क्यों कहा जाता है ?

---

# हरिवंशराय 'बच्चन'

## जन्म : सन् 1907 ई.

**जीवन-परिचय :**

श्री प्रताप नारायण के पुत्र श्री हरिवंशराय 'बच्चन' का जन्म प्रयाग में हुआ। वहीं प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम. ए. कर कैंम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शोध कार्य के लिये इंग्लैण्ड चले गये। वहाँ से उन्होंने पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रयाग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ व राज्य सभा के मनोनीत सदस्य रहते हुए उन्होंने हिन्दी की अहर्निश सेवा की है। 1923 में 'रूबाइयात उमर खैयाम' के अनुवाद के साथ उन्होंने मधु काव्य की हिन्दी में परम्परा डाली। वह हिन्दी काव्य में 'हालावाद' के प्रवर्तक माने जाते हैं।

**रचनाएँ :**

'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा-निमंत्रण', 'आकुल अन्तर', 'हलाहल', 'आरती और अंगारे' उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। मधुशाला में मानव-जीवन की क्षणभंगुरता और मधु-आमंत्रण से उसे बहलाने का प्रयास है। 'मधुबाला' और 'मधुकलश' प्रेम में रस-विभोर करने वाली

रचनाएँ हैं। 'निशा निमंत्रण' में एकान्त संगीत तथा 'आकुल अन्तर' और 'हलाहल' में एकाकी जीवन की आकुलता फूट पड़ी है।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

बच्चन का काव्य सहज एवं सरल अभिव्यक्ति का जीवन्त उदाहरण है। छायावादी व्यक्तिपरक काव्य-धारा में निराश प्रेम, राष्ट्रीय चेतना व मानवतावादी दृष्टिकोण इसकी लगभग सभी रचनाओं में परिलक्षित होता है। उनके गीत का एक अपना अलग काव्य-संगीत है जो जन-मानस को कोमल स्पर्श प्रदान करता है। अभिधा-प्रधान अभिव्यक्ति, जीवन-सत्यों का यथार्थ ज्ञान उनको जनप्रिय बनाता है। वे अनावश्यक अलंकरण और काव्यशिल्प से कविता के भावपक्ष को दुर्बल बनाना नहीं जानते।

एक अखण्ड पूर्ण भाव को वे खण्ड-खण्ड कर गीतों में सजाते-संवारते हैं। भाव की यह अखण्डता उनके गीत-समूह में प्रबन्धत्व का निर्वाह करती है। सहृदय पाठक उनकी कविताओं में अपने हृदय की धड़कन सुनकर मंत्रमुग्ध सा हो जाता है।

उनके काव्य ने भाषा की दृष्टि से खड़ी बोली की काव्य-अभिव्यक्ति को सहज, सशक्त तथा परिमार्जित बनाया है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

'सन्ध्या सिन्दूर लुटाती है' कविता उनकी गीत शैली का सुन्दर उदाहरण है। संध्या पक्षियों, सरिता आदि पर कितना सुन्दर प्रभाव अंकित करती है किन्तु कवि को किस प्रकार निराशा में डुबो जाती है—यह कवि का कथ्य है। भाषा का प्रवाह, भावों की सहज अभिव्यक्ति दर्शनीय है।

'मेरा संबल' कविता कवि के आशावादी रचनात्मक दृष्टिकोण तथा आत्मविश्वास को प्रकट करती है। इतनी लघु कविता में कवि ने जो महान सन्देश दिया है वह उनकी काव्य-प्रौढ़ता का द्योतक है।

## हरिवंशराय 'बच्चन'

**संध्या सिंदूर लुटाती है :**

संध्या सिंदूर लुटाती है!
रंगती स्वर्णिम रज से सुंदर
निज नीड़-अधीर खगों के पर,
तरुओं की डाली-डाली में कंचन के पात लगाती है।

संध्या सिंदूर लुटाती है !
करती सरिता का जल पीला,
जो था पल भर पहले नीला,
नावों के पालों को सोने की चादर-सा चमकाती है।
संध्या सिंदूर लुटाती है !
उपहार हमें भी मिलता है,
शृंगार हमें भी मिलता है,
आँसू की बूँद कपोलों पर शोणित की-सी बन जाती है।
संध्या सिंदूर लुटाती है !

('निशा-निमंत्रण' से)

## मेरा संबल

मैं जीवन की हर हलचल से
कुछ पल सुखमय
अमरण-अक्षय
चुन लेता हूँ।
मैं जग के हर कोलाहल में
कुछ स्वर मधुमय,
उन्मुक्त-अभय
सुन लेता हूँ।
हर काल कठिन के बंधन से
ले तार तरल
कुछ मुद-मंगल
मैं सुधि-पट पर
बुन लेता हूँ।

('जाल-समेटा' 73 से)

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्त्व एवं कला-पक्ष :**

1. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाय—स्वर्णिम, अधीर, उपहार, शोणित, उन्मुक्त।

2. 'अमरण, अक्षय' शब्दों में किस उपसर्ग का प्रयोग किया गया है
इस उपसर्ग का प्रयोग करते हुए पाँच शब्दों की रचना कीजिए ।
3. 'संध्या सिन्दूर लुटाती है', इस पंक्ति में 'सिन्दूर लुटाने' का वास्तवि
अर्थ क्या है ?
4. "निज नीड़–अधीर" से क्या तात्पर्य है ?
(क) अपने नीड़ में चंचल (ख) अपने नीड़ में अशान्त
(ग) अपने नीड़ में व्याकुल (घ) अपने नीड़ के लिये व्याकु
(च) अपने नीड़ के लिये निराश (
5. 'बच्चन' जी की भावानुकूल भाषा तथा सहज अभिव्यक्ति पर संक्षि
टिप्पणी लिखिए ।

**भावपक्ष :**

6. संध्या के स्वर्णिम वातावरण का निम्नलिखित पर क्या प्रभाव पड़
है ?
पक्षियों के पंखों पर, सरिता के जल पर, नावों की पालों पर ।
7. 'मेरा संबल' शीर्षक से कवि का क्या तात्पर्य है ?
8. 'मेरा संबल' कविता में कवि के आशावादी दृष्टिकोण का आभास कि
किन बातों से मिलता है ?
9. आशय स्पष्ट कीजिए—
(क) आँसू की बूँद..............................लुटाती है ।
(ख) हर काल..............................बुन लेता हूँ ।
10. 'बच्चन' की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

---

# श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

**जन्म : 1908 ई. □ मृत्यु : 1974 ई.**

**जीवन-परिचय :**

मुंगेर के सिमरिया ग्राम में दिनकर जी का जन्म हुआ । उ
पटना विश्वविद्यालय से बी. ए. आनर्स परीक्षा उत्तीर्ण की । गुप्त जी एवं राम

त्रिपाठी के इतिवृत प्रधान काव्य से अनुप्रेदित होकर वह इतिहास की ओर झुके। माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं से उन्होंने राष्ट्रीयता की प्रेरणा ली। सन् 1935 में उन्होंने बिहार प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन का सभापतित्व किया। उन्होंने समय-समय पर देश-विदेश में हिन्दी-साहित्य का प्रतिनिधित्व किया तथा राज्य- सभा के मनोनीत सदस्य के रूप में भी उन्होंने हिन्दी भाषा के सजग प्रहरी के रूप में अपनी सेवाएँ अर्पित कीं।

**रचनाएँ :**

इनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं—प्रणय-भंग, द्वन्द्वगीत, रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, बापू, धूप-छाँह, उर्वसी, मिट्टी की ओर, परशुराम की प्रतीक्षा आदि। उनकी रचनाओं में भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरवगान, क्रान्ति का प्रखर स्वर तथा राष्ट्रीयता का सिंहनाद है। 'रसवन्ती' शृंगार की अन्तः ससिला है तो 'कुरुक्षेत्र' में हृदय और बुद्धि का समन्वय है। 'उर्वसी' काम और आध्यात्म का संगम है।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

भारतीय संस्कृति का उन्नयन तथा राष्ट्रीयता की भावना 'दिनकर' जी के काव्य का मूल स्वर है। उनकी रचनाओं में सहज-सरल अभिव्यक्ति तथा अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग सर्वत्र देखने को मिलता है। 'रसवन्ती' तथा उर्वसी में कला-पक्ष तथा भाव-पक्ष का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। वे भाषा तथा भावों के ताल-मेल से जो काव्य सृजित करते हैं वह वांछित सन्देश को पाठक तक पहुँचाने में समर्थ है। शब्द तथा छन्द चयन में वे अत्यन्त पटु हैं। उनकी भाषा संस्कृत-निष्ठ होते हुए भी उर्दू के बहु-प्रचलित शब्दों तथा आँचलिक शब्दावली से प्रभावित है। प्रगतिशील, राष्ट्रीय चेतना-युक्त ओजस्वी काव्य 'दिनकरजी' के काव्य की अतिरिक्त विशेषता है।

**प्रस्तुत काव्य के सम्बन्ध में :**

'युद्ध और शान्ति' कविता 'दिनकरजी' के ओजस्वी काव्य 'कुरुक्षेत्र' से ली गई है। 'युद्ध और शान्ति' मानव-समाज की चिर-चिन्तित समस्या है। इस सम्बन्ध में कवि का तर्क है कि समाज में बलपूर्वक शान्ति स्थापित नहीं की जा सकती। शान्ति केवल समता तथा न्याय के आधार पर ही सम्भव है। साथ ही शान्ति केवल शक्तिशाली पुरुषों का ही आभूषण है। कायर और

क्लीव शान्ति के अधिकारी नहीं हो सकते। कवि की ओजस्वी काव्यशैली अत्यन्त सराहनीय है।

'भारत' कविता कवि के राष्ट्रीय-प्रेम की परिचायक है। कवि भारत के भौगोलिक मानचित्र अथवा उसके नाम को महत्वपूर्ण नहीं मानता। भारत की महान् संस्कृति ही सम्मान के योग्य है। कवि के अनुसार भारत एक भव्य स्वप्न, सुन्दर विचार तथा गम्भीर भाव है। निष्कामोयोग तथा आत्म-उदय इस भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी देन है।

प्रस्तुत कविता की भाषा-शैली सरल, सुबोध, प्रौढ़ तथा प्राञ्जल है। अभिव्यक्ति पक्ष प्रभावकारी है।

## रामधारीसिंह 'दिनकर'

**युद्ध और शान्ति :**

शान्ति नहीं तब तक जब तक, सुख-भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो, न हीं किसी को कम हो,
ऐसी शान्ति राज्य करती है, तन पर नहीं, हृदय पर,
नर के ऊँचे विश्वासों पर, श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर,
न्याय शान्ति का प्रथम न्यास है, जब तक न्याय न आता,
जैसा भी हो महल शान्ति का, सुदृढ़ नहीं रह पाता।
कृत्रिम शान्ति सशंक, आप अपने से ही डरती है,
खड्‌ग छोड़ बिश्वास किसी का कभी नहीं करती है।
और जिन्हें इस शान्ति व्यवस्था में सुख-भोग सुलभ है,
उनके लिये शान्ति ही जीवन-सार, सिद्धि दुर्लभ है।
पर जिनकी अस्थियाँ चबाकर, शोणित पीकर तनका,
जीती है वह शान्ति, दाह समझो कुछ, उसके मन का।
स्वत्व माँगने से न मिले, संङ्घत पाप हो जायें,
बोलो धर्मराज, शोषित जियें या कि मिट जायें।
न्यायोचित अधिकार, माँगने से न मिलें तो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर को, जीत या कि खुद मर के।
किसने कहा, पाप है समुचित, स्वत्व-प्राप्ति हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्‌ग समर में अभय मारना-मरना ?

क्षमा, दया, तप, तेज, मनोबल की दे वृथा दुहाई,
धर्मराज, व्यंजित करते तुम मानव की कदराई।
हिंसा का आघात तपस्या ने कब यहाँ सहा है?
देवों का दल सदा दानवों से हारता रहा है।
मनः शक्ति प्यारी थी तुमको यदि पौरुष ज्वलन से,
लोभ किया क्यों भरत-राज्य का, फिर आये क्यों वन से?
पिया भीम ने गरल, लाक्षगृह जला, हुए वनवासी,
केशकर्षिता प्रिया सभा-सम्मुख कहलायी दासी।
क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल, सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र सुयोधन तुमसे कहो, कहाँ कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु समक्ष तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको कायर समझा उतना ही।
अत्याचार सहज करने का कुफल यही होता है,
पौरुष का आतंक मनुज कोमल होकर खोता है।
क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो
उसको क्या दन्तहीन, विष रहित, विनीत सरल हो?
तीन दिवस तक पन्थ माँगते रघुपति सिन्धु-किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छन्द अनुनय के प्यारे प्यारे!
उत्तर में जब एक बार भी उठा नहीं सागर से
उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि' करता आ गिर शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की बँधा मूढ़ बन्धन में।
सच पूछो तो शर में ही बसती है, दीप्ति विनय की,
संधि वचन से पूज्य, उसी का जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।
जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की, क्षमा वहाँ निष्फल है।
गरल-घूँट पी जाने का मिस है, वाणी का छल है,
फलक क्षमा की ओर छिपाते जो अपनी कायरता,
वे क्या जाने ज्वलित-प्राण नर की पौरुष-निर्भरता?

(कुरुक्षेत्र)

## भारत

वृथा मत लो भारत का नाम ।
मानचित्र में जो मिलता है, नहीं देश भारत है,
भू पर नहीं, मनों में ही, बस कहीं शेष भारत है ।
भारत का स्वप्न, भू को ऊपर ले जाने वाला,
भारत एक विचार, स्वर्ग को भू-पर लाने वाला ।
भारत एक भाव, जिसको पाकर मनुष्य जगता है,
भारत एक जलज, जिस पर जल का न दाग लगता है ।
भारत है संज्ञा विराग की, उज्ज्वल आत्म-उदय की,
भारत है, आभा मनुष्य की सबसे बड़ी विजय की ।
भारत है, भावना दाह, जन-जीवन का हरने की ।
भारत है, कल्पना मनुज को राग-मुक्त करने की ।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, वहाँ प्रेम का स्वर है,
देश देश में खड़ा वहाँ भारत, जीवित भास्वर है ।
भारत जहाँ, वहाँ जीवन-साधना नहीं है भ्रम में,
धाराओं का समाधान मिला हुआ संगम में,
जहाँ त्याग माधुर्यपूर्ण हो, जहाँ भोग निष्काम,
समरस हो कामना, वहीं भारत को करो प्रणाम ।
वृथा मत लो भारत का नाम ।

(चक्रव

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा तत्व एवं कला पक्ष :**

1. 'युद्ध और शान्ति' कविता में से तत्पुरुष समास के उदाह
छाँटिये ।
2. निम्नलिखित शब्दों का प्रसंगानुसार अर्थ लिखिए—
प्रथम न्यास, कृत्रिम शान्ति; स्वत्व, व्यंजित, केशकर्षिता, अ
अनुनय, दर्प, शोध ।
3. 'उज्ज्वल' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
(क) उज + ज्वल (ख) उज् + ज्वल

(ग) उत्+ज्वल (घ) उत+ज्वल

(च) उत्ता+ज्वल (…………)

4. 'कुफल' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है ? इसी उपसर्ग से बनने वाले पाँच नये शब्द लिखिए।

5. 'ओजगुण' से क्या तात्पर्य है ? 'दिनकरजी' की प्रस्तुत रचनाओं में से ओजगुण के उदाहरण देकर समझाइये।

वपक्ष :

6. कवि के अनुसार शान्ति किस प्रकार सम्भव है ?
7. समाज में शान्ति किन कारणों से स्थिर नहीं रहती ?
8. 'युद्ध और शान्ति' कविता के वक्ता और श्रोता कौन हैं ?
9. कवि के अनुसार क्षमा किसे सुशोभित करती है ?
10. शक्ति और पौरुष को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये कवि ने कौन-कौन से उदाहरण दिये हैं ?
11. कवि के अनुसार 'भारत' की क्या विशेषताएँ हैं ?
12. भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता क्या है ?
13. 'दिनकरजी' की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

---

# नागार्जुन

## जन्म : सन् 1911 ई.

**ीवन-परिचय :**

प्रगतिशील चेतना से युक्त जनवादी काव्य-धारा के प्रमुख कवि 'बाबा' ागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र है। आपका जन्म बिहार राज्य के जिला दरभंगा में स्थित तरौनी ग्राम में जेष्ठ मास की पूर्णिमा सन् 1911 में ुआ। बचपन में ही माँ के स्वर्गवास हो जाने तथा पिता के लापरवाह स्वभाव के कारण बाबा को बचपन से ही कठिन संघर्ष करना पड़ा और वे

घुमक्कड़ स्वभाव के हो गए। किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय में इन्हें अध्
करने का सुअवसर नहीं मिला, वरन् जीवन की खुली पाठशाला में ही
अनुभव-ज्ञान को समृद्ध बनाया। सन् 1945 के आस-पास आपने लि
प्रारंभ किया था, तब से आप निरन्तर रचना-कर्म में संलग्न हैं। 'य
नाम से आपने मैथिली भाषा में भी काव्य-सृजन किया है और इन दिनों
बंगला में भी कविताएँ लिख रहे हैं। बाबा नागार्जुन ने कथाकार के रू
भी ख्याति अर्जित की है।

**रचनाएँ :**

कविता संग्रह : युगधारा, प्रेत का बयान, सतरंग पंखों वाली भस्म
(1971), हजार-हजार बाहों वाली (1981) आदि। मैथिली भाष
रचित 'पत्र-हीन नग्न गाछ, कविता-संग्रह पर आप साहित्य-अकादमी
पुरस्कृत (1968) भी किये जा चुके हैं। उपन्यास-रतिनाथ की चाची,
बटेश्वर नाथ, बलचनमा, नई पौध, उग्रतारा, इमरतियाँ इत्यादि।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

नागार्जुन की कविताओं का क्षेत्र बड़ा व्यापक और विस्तृत
अपने समय की सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाओं पर बाबा की
निरन्तर बनी रहती है, जिससे उनकी रचनाएँ उनके समय की घटनाओं
प्रामाणिक दस्तावेज़ हो गई हैं। उनकी दृष्टि मार्क्सवादी चिन्तन से जुड़ी
के कारण समाज के शोषित और दलित वर्ग के प्रति गहन सहानुभू
अभिव्यक्त करती हैं। आधुनिक हिन्दी कविता में शिष्ट गम्भीर हास्
चुटीले व्यंग्य की दृष्टि से बाबा की कविताएँ बेजोड़ हैं। बाबा के व्यंग
परिधि से शासन, समाज एवं निकट का कोई व्यक्ति नहीं बच पाया है।

'साहित्य सबके लिये हो' इस संकल्प को लेकर लिखने वाले नाग
की भाषा लोकभाषा के निकट होने के कारण सहज, सुबोध और प्र
गुणमयी है। तद्भव और देशज शब्दों के सार्थक प्रयोग से उनकी कवि
में एक विशेष प्रकार की ताजगी के दर्शन होते हैं। इस कथन में कोई अ
नहीं होगी कि 'नागार्जुन' के रचना-कर्म द्वारा आधुनिक हिन्दी कविता
और विकसित हुई है।

**प्रस्तुत कविताओं के सम्बन्ध में :**

'पीपल के पीले पत्ते' नागार्जुन की प्रतीकात्मक रचना है

ल के पीले पत्ते' 'मरणासन्न पुरानी पीढ़ी के प्रतीक हैं, जबकि 'लाल-बी पत्ते' नये स्वप्न संजोये, नये युग की तलाश में संघर्षरत नयी-युवा के प्रतीक हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने यह सन्देश देना चाहा है अपनी आयु में परिपक्व बूढ़े लोगों को नये रक्त से सम्पन्न युवा-पीढ़ी को रतापूर्वक अपना स्थान देकर उन्हें नये जमाने की चुनौतियों का विला करने में मूल्यावान् सहयोग करना चाहिये। अपने पूर्वजों की रता के अवदान को प्राप्त करके युवापीढ़ी सदैव उनके प्रति कृतज्ञ रहेगी। तिक प्रतीकों के माध्यम से आंचलिक शब्दों से युक्त सहज और सुबोध ा में महत् सन्देश अभिव्यक्त करनेवाली उक्त कविता कवि की प्रौढ़ ात्मक क्षमता की परिचायक है।

'उजली हँसी के छोर पर' कविता में कवि का देश के उज्ज्वल भविष्य ाति आस्थावाद स्वर मुखरित हुआ है। कवि की कामना है कि श्रमनिष्ठ ज-रचना के कारण राष्ट्र में नव-निर्माण की प्रक्रिया तीव्र गति से ालित होगी, जिसके कारण देश समृद्ध होगा। श्रम की प्रतिष्ठा के कारण के श्रमिक एवं दमित वर्ग की उदासीनता नई किरणों की उजली हँसी में न जायगी।

## नागार्जुन

**पीपल के पीले पत्ते :**

खड़-खड़ खड़ करने वाले
ओ पीपल के पीले पत्ते !
अब न तुम्हारा रहा जमाना
शकल पुरानी रंग पुराना
सीख पुरानी ढंग पुराना
अब न तुम्हारा रहा जमाना
आज गिरो कल गिरो कि परसों
तुमको तो अब गिरना ही है
बदल गयी ऋतु राह देखती लाल-लाल पत्तों की दुनिया
हरे-हरे कुछ भूरे-भूरे टूसों से लद रही टहनियाँ !
इनका स्वागत करते जाओ
पतझर आया झरते जाओ

ओ पीपल के पीले पत्ते !
लाल गुलाबी पत्ते कैसे
लह-लह-लह-लह-लहा रहे हैं
कैसी सुन्दर रात, चाँद की
किरनों में ये नहा रहे हैं
छलका रहा इनमें जीवनरस
दौड़ रही है इन पर लाली
बुनने लगे आँख खुलते ही
ये स्वर्णिम सपनों की जाली
यह इनका युग, ये इनके दिन
रहे अंत की घड़ियाँ तुम गिन
हट जाओ, इनको अवसर दो
छोटे हैं, बढ़ने का वर दो
पूर्ण हो रही आयु तुम्हारी
तुम हलके, इनका दिल भारी
राह रोक कर खड़े न होना
झूठ-मूठ के बड़े न होना
सारा श्रेय तुम्हें ही देंगे
अपने पूर्वज की उदारता
जीवन भर ये याद रखेंगे
ओ पीपल के पीले पत्ते !

## उजली हँसी के छोर पर

टंग गयीं वीरानियाँ उजली हँसी के छोर पर
टंग गया तमतोम विद्युत-रश्मियों के जोर पर
मशीनें विश्राम लेती हैं घड़ी आधी घड़ी
क्वाटरों की वीथियों में लोक लक्ष्मी हँस पड़ी
टंग गयीं वीरानियाँ उजली हँसी के छोर पर
पूर्णता को प्राप्त होगी सृष्टि-संरचना-कथा
विश्व-मानव जान ले यदि तरुण भारत की व्यथा
राष्ट्रतन में स्नायुओं की रक्तवाही जालियाँ

धरा के उर में बिछी त्यों तेलवाही नालियाँ
पूर्णता को प्राप्त होगी सृष्टि-संरचना-कथा
कोटि-कोटि करों को सक्रिय रखेंगे मित्र हम
उधारी अंगूर अब तो क्यों चखेंगे मित्र हम
खत्म होंगे विलासी गढ़ मिटेगी अंधी गली
निजी श्रम-शीकर बनेंगे मौलि की मुक्तावली
कोटि-कोटि करों को सक्रिय रखेंगे मित्र हम

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**ाषातत्व एवं कलापक्ष :**

1. 'खड़-खड खड़ 'शब्द को आप किस श्रेणी में रखना चाहेंगे ?
   (क) तत्सम (ख) तद्भव
   (ग) देशज (घ) अनुरणनात्मक
   (च) विदेशी (............)
2. 'लह-लह-लह-लह-लहा रहे हैं' इस पंक्ति में रेखाँकित शब्दों का क्या अर्थ है ?
3. 'अन्तिम घड़ी गिनना' मुहावरे का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिये कि उसका अर्थ स्पष्ट हो जाय।
4. कवि ने 'स्वर्णिम' शब्द की रचना में किस प्रत्यय का उपयोग किया है ? इसी अर्थ में 'स्वर्ण' शब्द में अन्य कौन-सा प्रत्यय लग सकता है ?
5. निम्नलिखित प्रतीकों का वास्तविक अर्थ स्पष्ट कीजिए—
   पीपल के पीले पत्ते, लाल-गुलाबी पत्ते, स्वर्णिम सपनों की जाली, उजली हँसी, उधारी अँगूर ।
6. भाषा के प्रवाह तथा प्रभाव की दृष्टि से पठित कविताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

**ावपक्ष -**

7. 'पीपल के पीले पत्ते' कविता के माध्यम से कवि किसे और क्या सीख देना चाहता है ?
8. कवि के अनुसार यदि पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी के मार्ग से हट जाय तो पुरानी पीढ़ी को क्या लाभ होगा ?

9. टंग गईं वीरानियाँ.......................छोर पर 'इस पंक्ति का क्या आशय है ?
10. कवि के अनुसार तरुण भारत की व्यथा क्या है ?
11. 'विलासी गढ़' कह कर कवि समाज के किस वर्ग के खत्म होने की बात सोच रहा है ?
12. मानव-श्रम और यांत्रिक शक्ति में से कवि ने किसे श्रेयस्कर माना है ?

---

# जगदीश गुप्त

**जीवन-परिचय :**

जगदीश गुप्त नयी कविता के सशक्त कवि होते हुए भी मूलतः गीतात्मक संवेदना के कवि हैं। उन्होंने अपनी रचना-यात्रा ब्रजभाषा के छन्दों से प्रारम्भ करके नयी कविता और नवगीत के सृजन पर अग्रसर होते हुए प्रयोग-धर्मी कवि एवं गीतकार के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की है। इलाहाबाद से निकलने वाली 'नयी कविता' पत्रिका के वे यशस्वी सम्पादक रहे और उसके माध्यम से 'नयी कविता' के आन्दोलन को आधार-भूमि प्रदान की। उन्होंने साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में 'नयी कविता की शक्ति और सामर्थ्य', 'नयी कविता और गीत शैली' आदि लेख लिखकर तथा नयी कविता के आलोचकों को तर्क-संगत उत्तर देकर नयी कविता के आधुनिक भाव-बोध एवं संवेदनात्मक मूल्यों की बड़ी विद्वत्ता के साथ प्राण-प्रतिष्ठा की है। जगदीश गुप्त ने 'नयी कविता' के काव्य-शास्त्र में अनुभूत क्षण की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति पर तो बल दिया है, साथ ही कविता में संगीतात्मकता के स्थान पर 'अर्थलय' नामक एक तत्व और जोड़ दिया है।

जगदीश गुप्त की कविताओं में आधुनिक मन का तनाव और विघटन प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। उनकी कविताओं का लक्ष्य आधुनिक चेतना एवं संवेदना से सम्पन्न व्यक्तित्व की प्राण-प्रतिष्ठा करना है। उनके

काव्य की अभिव्यंजना-सामर्थ्य उत्तरोत्तर परिवृद्ध और लोकानुवर्तिनी रही है।

"जहाँ मानव-मन किसी सौन्दर्य, राग, सत्य के प्रति किसी कोण से छू जाता है, वहाँ गीत की भूमि होती है।" निराला ने अपनी काव्य-कृति 'गीतिका' में गीत को "हृद-छन्द" कहा है। जगदीश गुप्त के गीतों में उक्त विशेषताएँ समाहित हैं। उनके गीत आधुनिक संवेदना से ओत-प्रोत हैं। जगदीश गुप्त एक कुशल रेखा-चित्रकार हैं अतः वे अपनी कविता और गीतों में किसी एक रूप, किसी एक दृश्य की बारीक रेखा को पूर्णतः उभार कर रख देते हैं। उनके काव्य में आधुनिक युग की बौद्धिक विचारणा के साथ भाव-स्पन्दन का सुन्दर समन्वय मिलता है।

जगदीश गुप्त की भाषा-शैली चित्रोपम बिम्ब-प्रधान तथा नये प्रतीक विधान से सुसज्जित है।

**रचनाएँ :**

काव्य-कृतियाँ—'नाँव के पाँव' (1955), 'शब्द-दंश' (1959), 'हिमविद्ध' (1964), 'युग्म' तथा 'आदिम एकान्त'। 'नयी कविता : स्वरूप और समस्यायें' नामक समीक्षा–ग्रन्थ ने नयी कविता के आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

**प्रस्तुत गीतों के सम्बन्ध में :**

प्रस्तुत संकलन में जगदीश गुप्त के दो गीत समाविष्ट हैं। प्रथम गीत 'भटकनों में अर्थ होता है' में कवि के मन का आस्थामय स्वर मुखरित हुआ है। वह जीवन के विषमतापूर्ण संघर्षमय पथ पर आशा और दृढ़ता के साथ अग्रसर होने का पक्षपाती है। उसे जीवन की भटकन और टूटन के बीच विशेष अर्थ लिये आशावादी स्वर सुनाई पड़ता है। प्रस्तुत कविता में जीवन की विषम परिस्थितियों में कवि के अपराजित रहने वाले मन का बिम्ब एवं उसका जुझारू व्यक्तित्व बड़े प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। दूसरे गीत में करुणा और लोकहित की कामना से ओत-प्रोत, विवेक के प्रकाश से आलोकित नूतन मानवता के प्रति कवि की गहन निष्ठा अभिव्यक्त हुई है। सात्विक गुणों एवं शाश्वत नैतिक मूल्यों से विभूषित हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा के धरातल पर बुद्धि-वैभव-युक्त नये युग के निर्माण के प्रति कवि के

मन की आस्था सरल, सुबोध पर ऐतिहासिक-सांस्कृतिक प्रतीकों से समृद्ध भाषा-शैली में प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुई है। वस्तुतः प्रस्तुत गीत हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा और विज्ञानसम्मत आधुनिक युग के बीच रागात्मक और बौद्धिक विचारणा का सेतु निर्मित करती है।

## जगदीश गुप्त

### भटकनों में अर्थ होता है :

भटकनों में अर्थ होता है।
टूटना कब व्यर्थ होता है।
जिन्दगी कच्चे घड़े – सी है,
आँच देकर हर विषम अनुभव पकाता है,
सतह से सम्पर्क रख कर भी,
व्यक्ति-मन गहराइयों में डूब जाता है।
शक्ति की खोई हुई पहचान जगती है,
आदमी जब बेतरह असमर्थ होता है।
भटकनों में अर्थ होता है;
टूटना कब व्यर्थ होता है।
दूब की हर एक पत्ती पर,
ओस-मोती जब अँधेरा छोड़ जाता है,
राजपथ की ओर क्यों सूरज,
गाँव की पगडंडियों को मोड़ जाता है।
एक टूटे-भटकते कवि की शिराओं में,
पार्वती-परमेश्वरी वागर्थ होता है।
भटकनों में अर्थ होता है।
टूटना कब व्यर्थ होता है।

('आदिम एकान्त' से)

### जिसके सन्मुख युग-युग का मस्तक झुक जाये

जिसके सन्मुख युग-युग का मस्तक झुक जाये।
जिसकी गति के आगे जग की गति रुक जाये।
जिसकी व्यापकता में ईश्वर खो जाये स्वयं,
जिसकी रचना में विधि का वैभव चुक जाये।

जो अपनी मुसकानों से प्राणों को बल दे,
मैं मानवता के उसी रूप का पूजक हूँ।

जिसके अन्तर में बसे तथागत अस्थिशेष।
जिसकी विशालता में पावनता हो अशेष।
जिसकी ईंटों में करुण हृदय का स्पंदन हो।
जो विश्वासों को दे अपने-सा सुदृढ़ वेश।

जिसकी महानता अडिग रहे झंझावत में,
मैं बुद्धि-बुद्ध के उसी स्तूप का पूजक हूँ।

जिसकी गहराई में हो जीवन की मिठास।
जो बुझा सके युग के राही की असह प्यास।
जिसके पनघट पर नूतनता के घट छलकें।
जिसमें गूँजे तरुणाई का नित नवल ह्रास।

फिर जो सुदूर नभ का प्रतिबिम्ब छिपाये हो,
मैं परम्परा के उसी कूप का पूजक हूँ।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कलापक्ष :**

1. 'टूटना कब व्यर्थ होता है' इस पंक्ति में 'टूटना' शब्द का लक्ष्यार्थ क्या है ?
2. 'भटकनों' शब्द व्याकरण की दृष्टि से किस रूप में प्रयुक्त हुआ है ?
   (क) संज्ञा (ख) क्रिया
   (ग) क्रिया-विशेषण (घ) सर्वनाम
   (च) विशेषण ( )
3. "जिन्दगी कच्चे घड़े सी है" इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?
4. "पार्वती-परमेश्वरी" तथा "वागर्थ" शब्द संस्कृत के किस ग्रन्थ का स्मरण कराते हैं ? इन शब्दों का प्रसंगानुसार अर्थ भी बताइये।
5. निम्नलिखित शब्दों के प्रसंगानुसार अर्थ बताइए—
   सतह, तथागत, स्पंदन, झंझावत, स्तूप।

**भाव-पक्ष :**

6. जिन्दगी का घड़ा किस प्रकार परिपक्व होता है ?

7. मनुष्य अपनी शक्ति को किन परिस्थितियों में पहचान पाता है ?
8. कवि की प्रथम कविता का मूल सन्देश क्या है ?
9. 'जिसके सन्मुख युग-युग का मस्तक झुक जाये' इस कविता में कवि ने अपनी आस्थाओं को किन-किन मूल्यों से जोड़ा है ?
10. आशय स्पष्ट कीजिए—
    (क) मतह..............................डूब जाता है।
    (ख) जो अपनी मुस्कानों..............................बल दे।
    (ग) जिसके पनघट..............................घट छलकें।
11. श्री जगदीश गुप्त की काव्य-शैली पर प्रकाश डालिये।

---

# सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

## जन्म : सन् 1927 ई □ मृत्यु : सन् 1983 ई.

**जीवन-परिचय :**

आधुनिक कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के व्यक्तित्व में ग्रामीण संस्कार इस प्रकार घुले-मिले हैं कि जिनके कारण उनका रचना-कर्म भी उतनी ही सहजता और सादगी लिये है। एक के रूप में सर्वेश्वरदयाल ने तीसरे सप्तक के कवियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया। पेशे से वे पत्रकार रहे और 'दिनमान' जैसे साहित्यिक-साप्ताहिक का उन्होंने सम्पादन कार्य किया। साप्ताहिक दिनमान में 'चरचे और चरखे' शीर्षक से प्रकाशित उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक टिप्पणियाँ बहुचर्चित रहीं। सामाजिक यथार्थ एवं प्रगतिशील चेतना से जुड़े होने पर भी वह किसी वाद-विशेष से आबद्ध नहीं रहे। उन्होंने साहित्यिक की विविध विधाओं में यथा-नाटक, उपन्यास, कहानी, समालोचना, बाल-साहित्य आदि में अपने रचना-कर्म की सार्थकता सिद्ध की। वे एक सशस्त्र व्यंग्यकार थे। राजनीति और समसामयिक सामाजिक विद्रूपताओं पर उन्होंने तीखे व्यंग्य किये हैं। अपने जीवन के

अन्तिम दिनों में बच्चों की 'पराग' पत्रिका के वे यशस्वी सम्पादक रहे हैं। सन् 1983 ई. में हृदय-गति रुक जाने से उनका निधन हो गया। सर्वेश्वर आजीवन शोषित और दलित मानव के पक्षधर बनकर अपने रचना-कर्म के माध्यम से मानवता-विरोधी, शोषक वर्ग, सत्ता और साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध संघर्षरत रहे। वे उच्चतर मानव-मूल्यों के सजग प्रहरी थे।

**रचनाएँ:**

काव्य कृतियाँ–'काठ की घण्टियाँ' (1959), 'बाँस का पुल' (1963), 'एक सूनी नाव' (1966), 'कुआनो नदी' और 'जंगल का दर्द' आदि। उन्हें 'खूँटियों पर टँगे लोग' कविता-संग्रह पर साहित्य अकादमी ने पुरस्कार प्रदान किया था।

गद्य-कृतियाँ–नाटक : बकरी, लड़ाई, अब गरीबी हटाओ। उपन्यास : सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, सूने चौखटे, कहानियाँ : कच्ची सड़क, अँधेरे पर अँधेरा। कुछ रंग, कुछ गंध। (अनूदित कविताएँ, सोवियत यात्रा संस्मरण) एवं बाल-साहित्य महँगू की टाई, भों-भों–खो-खो, 'लाख की नाक' आदि।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का काव्य विषय-वस्तु की विविधता लिये हुए है। उनकी अनुभूति सरल और निश्छल है। सामयिक प्रश्नों पर उन्होंने जो अपनी संवेदनात्मक प्रक्रियायें व्यक्त की हैं, उनमें उनके चिन्तन की गहराई परिलक्षित होती है। उनकी कविताओं में रागात्मक तत्व और विचार-तत्व का सुन्दर समन्वय मिलता है। संक्षिप्तता उनके काव्य का एक विशिष्ट गुण है। सर्वेश्वर-स्वयं का मानना है कि "कला का सबसे बड़ा प्रयोजन यह होता है कि कितने थोड़े दायरे में आप कितना बड़ा परिवेश नाप लेते हैं।" वे 'जन-कविता' के पक्षधर हैं। उनके काव्य की मूल प्रवृत्ति व्यंग्य है। राजनीतिक छल, सामाजिक, असंगतियाँ और विद्रूप तथा धार्मिक-पाखण्ड पर उन्होंने तीखे व्यंग्य लिखे हैं। अपने कथन को सहज सम्प्रेष्य और प्रभावशील बनाने के लिये उन्होंने लोक-धर्मी एवं पैराणिक नये बिम्बों और प्रतीकों का सृजन किया है तथा लोक-भाषा तथा लोक-शैलियों का सार्थक प्रयोग किया है। सरकंडे की गाड़ी, पैगोड़ा पोस्टर आदि इसी प्रकार की कवितायें हैं।

**प्रस्तुत कविताओं के सम्बन्ध में :**

'मृत्यु-दण्ड' कविता में कवि का कथन है कि कोई व्यक्ति किसी पर अत्याचार करता है, हिंसात्मक दमन करता है तो उसका प्रत्युत्तर हिंसा के बदले हिंसा नहीं होनी चाहिये। हिंसा के बदले हिंसा करने से तो हिंसा का कभी खत्म न होने वाला क्रम चल पड़ता है जो मानवता के लिये घातक है। कवि के मतानुसार मनुष्य को हिंसात्मक वृत्ति का प्रतिरोध अपने में आत्म-विश्वास उत्पन्न करके, निडरतापूर्वक एवं एक संगठित समाज शक्ति के रूप में उभर कर करना चाहिये जिससे अत्याचारी व्यक्ति, वर्ग या सत्ता का अत्याचारी कृत्य स्वयं समाप्त हो जायेगा। यही उसके लिये मृत्यु-दण्ड है। किसी भी व्यक्ति, वर्ग को अपने प्रतिशोध के लिये किसी भी व्यक्ति के प्राण-हरण का अधिकार नहीं है। प्रस्तुत कविता की भाषा-शैली सरल और सादगीपूर्ण है, जो 'सपाट बयानी' सी लगती है, किन्तु इस 'सपाट बयानी' में भी विशिष्ट अर्थ की लय से युक्त एक आन्तरिक बुनावट है जो सर्वेश्वर की विशिष्ट भाषा-शैली की परिचायक है।

दूसरी कविता 'अन्त में' में कवि सर्वेश्वर को वर्ग-वैषम्य पर आधारित शोषण और अन्याय के विरुद्ध उठने वाली एक समर्थ शक्तिशाली आवाज की तलाश है। कवि नहीं चाहता है कि उसका कथन और रचना-कर्म आज के आत्म-केन्द्रित, निजी स्वार्थ में लिप्त, बहरे-गूँगे समाज में बेअसर, प्रभावहीन प्रमाणित हो। अपने रचना-कर्म को बेअसर देखने की यातना सहने की अपेक्षा कवि बिना कुछ कहे ही मृत्यु के मुख में समा जाने को तत्पर है। प्रस्तुत कविता में कवि का अपने रचना-कर्म की सार्थकता के साथ 'जुझारू' व्यक्तित्व परिलक्षित हुआ है। कविता की भाषा-शैली प्राञ्जल और ओजगुण प्रधान है।

## सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

### मृत्यु-दण्ड :

यदि तुम्हें साँप काटता है
तो तुम साँप को मार सकते हो,
यदि आदमी काटता है
तो तुम आदमी को नहीं मार सकते।

जहरीले आदमी पर तुम थूक सकते हो
यही उसकी मौत है
लेकिन उसे लाश बनाकर
किसी एक को भी थूकने का हक उस पर नहीं है
क्योंकि इससे जहर नहीं मरता
आदमी मरता है
और उसके साथ-साथ तुम भी मरते हो—
तुम जिसने उसे मारा है
जो खुद को समाज का अंश कहते हो।
साँप को मारते हो
तुम साँप में नहीं बदलते
आदमी को मारते हो तुम
साँप में बदल जाते हो
जहर खत्म करने के नाम पर
जहर फैलाते हो।
समाज का एक बहुत बड़ा अंश
सीखता है दंश, दंश, केवल दंश
और एक तुमसे
करोड़ों साँप बिलबिलाने लगते हैं।
बढ़ने लगता है उसका वंश
वंश, वंश, केवल उनका वंश
जहरीले आदमी से छुटकारे के लिये
फिर तुम क्या करोगे ?
पहली बात, उससे मत डरो,
खुद में आत्मविश्वास भरो,
सबके साथ एक समुद्र बन उभरो, उभरो !
ऊभ-चूभ उभरो।
जब तुम इस तरह लहराओगे,
तब उसे खुद अपनी पूँछ पर घूमता हुआ देखोगे
और उसका जहर मरा हुआ पाओगे।

## अन्त में

अब मैं कुछ कहना नहीं चाहता,
सुनना चाहता हूँ
एक समर्थ सच्ची आवाज
यदि कहीं हो ।
अन्यथा
इससे पूर्व कि
मेरा हर कवच
हर मंथन
हर अभिव्यक्ति
शून्य से टकरा कर फिर वापस लौट आए,
उस अनन्त मौन में समा जाना चाहता हूँ
जो मृत्यु है ।
"वह बिना कहे मर गया,
यह अधिक गौरवशाली है
यह कहे जाने से—
कि वह मरने के पहले
कुछ कह रहा था
जिसे किसी ने सुना नहीं ।

### अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कलापक्ष :**

1. "जहरीले आदमी पर तुम थूक सकते हो" यहाँ 'थूकने' शब्द का लाक्षणिक अर्थ क्या है ?
2. निम्नलिखित उर्दू शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए—
लाश, जहर, खुद, आवाज, हर ।
3. "समाज का एक बहुत बड़ा अंश,
सीखता है दंश, दंश केवल दंश ।"
उपर्युक्त पंक्तियों में एक प्रभावशीलता है । इस प्रभावशीलता का कारण क्या हो सकता है ?

(क) अनुप्रास　　(ख) श्लेष
(ग) यमक　　(घ) वक्रोक्ति
(च) सहज अभिव्यक्ति　　(　　)

4. श्री सक्सेना की दोनों रचनाएँ छन्दहीन होते हुए भी भाव-व्यंजना की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। इस श्रेष्ठता के कोई दो कारण बताइये।

**भाव-पक्ष :**

5. 'साँप' के काटने पर उसे मारा जा सकता है, आदमी को नहीं। कवि के इस तर्क की समीक्षा कीजिये।
6. "साँप को मारते हो आदमी साँप में बदल जाता है" कवि की इस उक्ति का आशय क्या है ?
7. जहरीले आदमी से छुटकारा पाने का कवि ने क्या उपाय बताया है ?
8. 'अन्त में' कविता के आधार पर बताइये कि कवि किस प्रकार की आवाज सुनना चाहता है ?
9. 'अन्त में' कविता के अनुसार कवि की अन्तिम इच्छा क्या है ?
10. श्री सक्सेना की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

---

# नारायणसिंह भाटी

**जन्म : सन् 1930 ई.**

**जीवन-परिचय :**

राजस्थानी के समर्थ कवि डॉ. नारायणसिंह भाटी का जन्म जोधपुर के निकट मालूंगा ग्राम में सन् 1930 ई. में हुआ। उनकी शिक्षा जोधपुर में ही सम्पन्न हुई। डॉ. भाटी ने राजस्थानी साहित्य और संस्कृति पर महत्वपूर्ण शोध-कार्य किया है। वे राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी के निदेशक

पद पर बहुत वर्षों से कार्यरत हैं तथा उन्होंने राजस्थानी भाषा की प्राचीन दुर्लभ पाण्डुलिपियों की सुरक्षा के साथ प्राचीन राजस्थानी साहित्य को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। 'परम्परा' नामक शोध-पत्रिका निकाल कर आपने अनेक राजस्थानी दुर्लभ ग्रन्थों का सम्पादन-कार्य किया है तथा उक्त पत्रिका के माध्यम से राजस्थानी संस्कृति को उजागर करने के साथ ही राजस्थानी भाषा और साहित्य पर कई समीक्षात्मक लेख लिखे हैं। 'मीरा-काव्य 'पर उनको साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार भी मिल चुका है।

**रचनाएँ :**

काव्य-कृतियाँ:ओलूं, साँझ, दुर्गादास, जीवण धन, परमवीर, कलप एवं मीरा।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

डॉ. नारायणसिंह भाटी ने न केवल शोध के क्षेत्र में ही महत्वपूर्ण कार्य किया वरन् मौलिक साहित्य सृजन में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। वे राजस्थानी भाषा के एक प्रौढ़ एवं समर्थ कवि हैं। राजस्थानी काव्य को उन्होंने विविध भाव-भंगिमाओं से अनुरंजित किया है। उनके काव्य में विषय-वस्तु की विविधता मिलती है। 'ओलूं' काव्य में जहाँ विप्रलंभ शृंगार का सहज अनुभूतिजन्य चित्रण मिलता है, वहाँ 'साँझ' नामक काव्य-कृति में प्रकृति अपने नाना मनोरम रंगों में अभिव्यक्त हुई है। उनके काव्य में राष्ट्र-प्रेम के साथ आधुनिक युग बोध की संघर्षमयी परिस्थितियों का बड़ा सटीक चित्रण मिलता है।

डॉ. भाटी ने शिल्प के क्षेत्र में राजस्थानी काव्य को नूतन मोड़ दिया है। मुक्त छन्द प्रयोग में वे विशेष रूप से सफल हुए हैं। उनकी रचनाओं में स्थानीय रंगत की छाप विशेष रूप से दृष्टव्य हैं।

**प्रस्तुत कविता के सन्दर्भ में :**

'नाच-नाच नाची मीरा' डॉ. भाटी द्वारा रचित 'मीरा प्रबन्ध काव्य' से उधृत है जिसमें गिरधर के प्रेम में रंगराती मीराँ द्वारका जाकर अपने आराध्य की भाव-मूर्ति में सम्पूर्ण आत्म-समर्पण के साथ लीन हो जाती है। उसका रोम-रोम नृत्य की लय में रम जाता है जो 'सुरत समाधि' की स्थिति ग्रहण कर लेता है। वह कृष्ण से अपना जन्मजन्मान्तर का रिश्ता बतलाती हुई अपना मनुष्य-जीवन सफल बनाने के लिये मुरली की तान को अपनी

वांस-प्रश्वाँस में भर लेना चाहती है। राजस्थानी भाषा की स्थानीय प्रगाढ़ गत में रंगी उक्त रचना कवि की बिम्बात्मक व्यंजना शैली का सम्बल प्राप्त करके मीराँ के मन के गहन भावों को एक चित्र के समान पाठकों के समक्ष रख देती है। छन्द-मुक्त रचना होने पर भी इसकी आन्तरिक लय पाठक का मन झंकृत करने में पूर्णतया सक्षम है।

**नारायणसिंह भाटी**

**नाच-नाच नाची मीराँ**

नाच-नाच-नाची मीराँ
पखवाड़ा अर मास
भावाँ रा भिदियोड़ा मोती
बरसता अमाप
गीताँ रा गरणाटाँ में
आतम री उझाल
गूंधर ठमकाराँ साथे
रोस री उतार
अंग भंगियाँ भागी
मोहाँ मतवाल
निसाँसाँ निसाँसाँ
छूटै अहम उमाव
निरत में सुरत समाव,
रोम रोम राची अेक रणकार
अगरू घटावाँ में
मन मोर नचाव
पांखड़ी पांखड़ी
मुकट सजाव
आँखड़ी आँखड़ी
वारणा।
सेवट
हाथाँ री मुरली हिय लाय
हाँफती कह्यो—

'रे हठी काना बोल
म्हारो हियौ भँवारा खावे
जूनी जमना रे पाट में,
म्हें इण मुरली खातर
त्रण ज्यूं तोड़ी ऊँचे रणवासाँ री कार
तागे ज्यूँ तोड़्या सुगणी सासू रा ओलभा
जुग जुग रा काँमण कियोड़ा काँकण तोड़
तोड़ी अडाँगी साँसाँ री जंतर डोरड़ी,
के के तिरिया अजूभा मैराँण
थारा अणियाला नैणाँ री पोई माछली
एक तान सूँ भरदै प्राँणों में लीला प्राँण
जिण सूँ मिनख जमारौ हुवै मोवनौ।'

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कलापक्ष** :

1. राजस्थानी भाषा के निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी के तत्सम रूप लिखिए—
   आतम, रोस, जूनी, मिनख, मोवनौ।
2. 'रोम-रोम राची एक रणकार' पंक्ति में कवि ने किस अलंकार का प्रयोग किया है। उस अलंकार के ऐसे अन्य स्थल भी बतलाइये।
3. प्रस्तुत कविता में ध्वनि-सौन्दर्य को प्रदर्शित करने वाले स्थलों का उल्लेख कीजिए।
4. "छन्द मुक्त होते हुए भी प्रस्तुत कविता में एक आन्तरिक लय विद्यमान है।" प्रस्तुत कविता के आधार पर उक्त कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

**भावपक्ष** :

5. "भावाँ रा भिदियोड़ा मोती" पंक्ति के आधार पर बतलाइये कि मीराँ का हृदय किस भावना से ओत-प्रोत था ?
6. मीराँ किसके मोह में उमंगित (मोहाँ मतवाल) हो नृत्य कर रही थी ? उसके नृत्य को 'सुरत समाध' क्यों बतलाया गया है ?
7. 'त्रण ज्यूँ तोड़ी ऊँची रणवासाँ री कार' पंक्ति के आधार पर स्पष्ट

कीजिए कि मीराँ ने रणवास की मर्यादा क्यों और किस प्रकार भंग की ?

8. प्रस्तुत कविता में राजस्थानी संस्कृति की रंगत की छाप जिस रूप में परिलक्षित होती है, उसे अपनी भाषा में लिखिए ।
9. प्रस्तुत कविता के भाव-सौन्दर्य पर विस्तृत प्रकाश डालिए ।
10. नारायणसिंह भाटी के 'मीराँ' खण्ड-काव्य को पढ़कर उसके भाव-सौन्दर्य का रसास्वादन कीजिए ।

---

# सुब्रह्मण्य भारती

**जन्म : 11 दिसम्बर, 1882 □ मृत्यु : 12 सितम्बर 1921**

**वन-परिचय :**

तमिल भाषा के महाकवि सुब्रह्मण्य भारती का जन्म 11 दिसम्बर, 1882 ई. में मद्रास के एट्टयपुरम् कस्बे में हुआ। उनके पिता चित्रा ामी अय्यर विद्वान् पण्डित थे जिन्हें बालक सुब्बैया से बड़ी आशायें थीं। च वर्ष की आयु में ही 'भारती' की माता का देहान्त हो गया था जिससे नका बचपन बड़ी कठिनाई में बीता। यद्यपि मामा ने 'तिरूनेलवेलि' गाँव स्कूल में उन्हें भर्ती करा दिया था, किन्तु उनका पढ़ने में मन नहीं लगा र वे कविता लिखने लगे। एट्टयपुरम् के जमींदार उनकी काव्य-प्रतिभा से हुत प्रभावित हुए। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् भारती-बनारस चले गये र वहाँ के सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण । अंग्रेजी भाषा का अध्ययन करते समय शैली, कीट्स आदि कवियों की चनाओं से प्रभावित होकर उन्होंने तमिल साहित्य को समृद्ध बनाने का कल्प ले लिया। उस समय गाँधी जी के नेतृत्व में मुक्ति आन्दोलन चल हा था। वे पूरे तन-मन से स्वतन्त्रता-संग्राम में जुट गये और अपनी ओजस्वी विताओं से जन-मानस में देश-प्रेम और उत्सर्ग की भावना जाग्रत करने गे। भारती जाति-पाँति के विरोधी, नारी-मुक्ति के हिमायती और राष्ट्रीयता

के परिपोषक थे । पत्रकार के रूप में' 'स्वदेश मित्रम्' में देश-भक्ति से पूर्ण अपने ओजस्वी लेखों के कारण उन्हें प्रदेश से निर्वासित होना पड़ा तथा वे फ्रांस अधिकृत पाण्डिचेरी चले गये । वहाँ पहुँच कर वे 'इण्डिया' पत्र से जुड़ गये तथा इसी वर्ष सन् 1909 में उनका गीत-संग्रह 'जन्मभूमि' प्रकाशित हुआ । वहाँ भी अँग्रेजों ने उनका पीछा किया । इसके कारण उनका जीवन बड़ा कष्टमय बीता । वे पुनः मद्रास लौट आये और अँग्रेजों द्वारा बन्दी बना लिये गये । जेल से छूटने के पश्चात् पुनः 'स्वदेश मित्रम्' निकालना शुरू किया, किन्तु कठिन संघर्ष के कारण उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था । अन्त में 12 सितम्बर 1921 ई. को 'राष्ट्र के चारण' तमिल के इस महाकवि की जीवन-लीला समाप्त हो गई ।

**रचनाएँ।**

**काव्य-कृतियाँ**-शक्ति-गीत, पाँचाली शब्दम्, कुइलपुट्टो, कान्ह पुट्टो आदि ।

**काव्यगत-विशेषताएँ :**

तमिल भाषा के महाकवि सुब्रह्मण्य भारती 'राष्ट्र के चारण' कहे जाते हैं । वे तमिल साहित्य में आधुनिकता के जनक हैं । उनके गीतों में देश-प्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है । उनकी कवितायें ओज गुण से ओत-प्रोत हैं । उन्होंने ओजपूर्ण राष्ट्र भाषा में राष्ट्र-गीतों की रचना करके तथा उन्हें स्वर और लय में मुखरित करके सहस्र-सहस्र जन-मन को देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में विदेशी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करने एवं उत्सर्ग-भावना भरने का उदात्त कार्य किया । उनके काव्य में विषय-वस्तु की विविधता मिलती है । 'कुइल पुट्टो' में जहाँ उनका प्रकृति-प्रेम मुखरित हुआ है, वहाँ 'पंचाली शब्दम्' में शक्ति-साधना के साथ नारी के स्वाभिमानी गरिमायुक्त व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की गई है । पौराणिक आख्यानों पर आधारित उनकी काव्य-कृतियाँ आधुनिक भाव-बोध से अनुप्राणित हैं । भारती की रचनाओं में भाव-प्रवणता के साथ कल्पना की विविधता दृष्टव्य है । उनकी भाषा सरल, सुबोध और प्रसाद गुण से युक्त है । वस्तुतः 'भारती' ने तमिल भाषा और उसके साहित्य को एक नया मुहावरा प्रदान किया और उसे मध्ययुगीन सामन्ती-संस्कारो से मुक्त कर

वतन्त्रता, समता एवं प्रगतिशील चेतना का आधुनिक परिवेश प्रदान किया है।

**स्तुत कविता के सम्बन्ध में** :

'स्वतन्त्रता' गान' भारती का तमिल भाषा से हिन्दी में अनूदित गीत है जिसमें कवि ने विदेशी दासता से मुक्त, जाति-वर्गविहीन समता पर आधारित सुखी-समृद्ध समाज-रचना से युक्त स्वतन्त्र भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में प्राण-पण से जुटने के लिये कवि समस्त देशवासियों का आह्वान कर रहा है और उन्हें प्रेरणा दे रहा है कि वर्ग-विषमता, गरीबी और गुलामी के दिन बीत गये हैं। स्वतन्त्र भारत में शोषक वर्ग समाप्त हो जायेगा, श्रम की प्रतिष्ठा होगी तथा श्रमिक एवं किसानवर्ग का आदर-अभिनन्दन होगा। प्रस्तुत कविता में कवि का उदात्त देश-प्रेम, राष्ट्रीय एकता की भावना, समतायुक्त जीवन दृष्टि अपनी सम्पूर्ण गरिमा के साथ अभिव्यक्त हुई है। गीत की भाषा-शैली प्रौढ़ एवं प्राञ्जल है तथा आन्तरिक लय से युक्त है।

## सुब्रह्मण्य भारती

### स्वतन्त्रता का गान :

आओ, नाचें-गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे।
आनंद-छन्द-मय स्वतन्त्रता पर मोद मनायेंगे।
ब्रह्मन ऐयर के रौब दबदबों के दिन बीत गये।
गौरांग फिरंगी लाट-साहबों के दिन बीत गये।
भिक्षा, दानों के दिन, भिखमंगी के दिन बीत गये।
कपटी जन-सेवा, चाल दुरंगी के दिन बीत गये।
आओ, नाचें-गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे।
आनन्द-छन्द-मय स्वतन्यता पर मोद मनायेंगे।।
अब स्वतन्त्रता की ही चर्चा सब कहीं हो रही है।
अब सिद्ध हम,सभी की समता सब कहीं हो रही है।
अब शंखनाद, जय डंकों के स्वर प्रतिनादित कर दें।
अब यह मंगल-संवाद विश्व भर प्रतिनादित कर दें।
आओ, नाचे-गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे।
आनन्द-छन्द-मय स्वतन्त्रता पर मोद मनायेंगे।

हम सब समान हैं, समानता का आया युग, आया ।
मिट रहा, कपट, निश्चल जनता का आया युग आया ।
जो सच्चे हैं, वे बड़े !—उन्हीं का आया युग आया ।
यह प्रलय काल दुर्जन कपटी का !—आया युग आया ।
आओ, नाचें-गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे ।
आनन्द-छन्द-मय स्वतन्त्रता पर मोद मनायेंगे ।
हो श्रमिक-कृषक जनता का सादर बंदन अभिनंदन ।
हो परजीवी का घोर निरादर, तोदन, अपनोदन ।
अब निष्फल निरुद्देश्य श्रम कर हम श्रांत नही होंगे ।
बनकर अयोग्य-जन के परिचर हम क्लांत नहीं होंगे ।
आओ, नाचें-गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे ।
आनन्द-छन्द-मय स्वतन्त्रता पर मोद मनायेंगे ।।
हैं इसी देश के वासी हम सब, इसका बोध मिला ।
यह देश हमारा ही तो है, अब इसका बोध मिला ।
इस पर अधिकार हमारा है ! हम नहीं किसी के दास ।
बस एक पूर्ण-प्रभू जग का है ! हम एक उसी के दास ।
आओ, नाचें-गायेंगे जी-भर, मोद मनायेंगे ।
आनन्द-छन्द-मय स्वतन्त्रता पर मोद मनायेंगे ।।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

**भाषा-तत्व एवं कलापक्ष :**

1. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए—
   निश्छल, दुर्जन, निष्फल, निरूद्देश्य ।
2. 'स्वतन्त्रता' शब्द की रचना को स्पष्ट कीजिए ।
3. निम्नलिखित शब्दों का सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
   समता, शंखनाद, प्रतिनादित, प्रलयकाल ।
4. 'भिखमंगी' शब्द में से संज्ञा, क्रिया और प्रत्यय को पृथक्-पृथक् करके लिखिए ।
5. 'श्रमिक-कृषक' शब्द में कौन-सा समास है :
   (क) बहुव्रीहि (ख) तत्पुरुष

(ग) द्वन्द्व (घ) कर्मधारय

(च) द्विगु (............)

**भाव-पक्ष :**

6. यह स्वतन्त्रता-गान किस ऐतिहासिक घटना से सम्बन्ध रखता है ?
7. कवि ने स्वतन्त्रता और समानता के जिन भावों की अभिव्यक्ति की है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए ।
8. कवि के अनुसार अब किन लोगों के लिये प्रलयकाल उपस्थित हो गया है ?
9. कवि के अनुसार अब श्रमिक तथा कृषकों को किस दृष्टि से देखा जाना चाहिये ?
10. अन्य अहिन्दी भाषी कवियों की रचनाओं का एक संग्रह तैयार कीजिए ।

---

# परिशिष्ट

## शब्दार्थ एवं टिप्पणियां

**(1) कबीर :**

उपगार=उपकार, भलाई, अनत=अनन्त (असंख्य), सूरिमा=शूरवीर, सबद=शब्द, छेक=छिद्र, सोधियत=शोधा, खोज लिया, दीवै=दीपक में, जोवती=प्रतीक्षा करती, जिव=जीव (आत्मा), नाँव=नाम, गुण=रस्सी, तंत=तंत्र (वाद्य), भरति=भ्रम, देहरे=देवालय, बगूला=बवंडर (चक्रवात), रसाल=रसीला (मधुर), कलाल=मदिरा बेचने वाला, कागदी=कागज लिखने वाला (ज्ञानी), व्यौहारी=व्यवसाय करने वाला, नींव=नीम, भवंग=भुजंग (सर्प), तिरू=तरू, पंच-कुसंगी=पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, भरतार=भर्ता (पति) परमात्मा से तात्पर्य है। जोबन=यौवन, सुर-तैंतीस=तेतीस करोड़ देवता, मनिवर=मुनिवर, बेगारि-बेगारि=भिन्न-भिन्न बादहि=व्यर्थ ही, टोटी=टाटी, थूनी=छप्पर को सहारा देने वाली लकड़ी, त्रिस्ना=तृष्णा, जोग-जुगुति=योग की युक्ति, भान=भानु (सूर्य), तम पीना=गहन अंधकार, इंगला-पिंगला=योग के अनुसार सूर्य-चन्द्र नाड़ियाँ, आठ कंवल=योग के अनुसार अष्ट चक्र, सिमत=सीने में, जतन से=यत्न-पूर्वक।

**(2) जायसी :**

झूरी=दुःखी, हिय-पूरी=हृदय प्रफुल्लित हो गया, अद्रा=आर्द्रा नक्षत्र, नलिन=कमल, विगसा कंवल=कमल विकसित हुआ (रानी पद्मिनी प्रसन्न हुई) सूरू=सूर्य (राजा रतनसेन से तात्पर्य है), पुरइन=कमल पत्र, अंजोरा (प्रकाश) कटक=सेना, दिनअर कर=सूर्य की किरणें, ससि=चन्द्रमा

(रानी पद्‌मिनी), मेराव=मिलन, सेंदूरू=सिंदूर, गोहन=सहेली, नखत तराई=नक्षत्र और तारे (पद्‌मिनी की सखियों से तात्पर्य है), जनु बसन्त... छूटी=मानों वसन्त ऋतु में नई कोंपलें निकली हों, इन्द्र सवार=बादलों जैसी गर्जना, तमोल=पान का बीड़ा, धनिमाथ=पत्नी का मस्तक, दिष्ट=दृष्टि, बसनीसेति=बरोनियों से, पैठहु=प्रवेश करो, गरव=गर्व, ग्रवइ=गौरवशालिनी।

## (3) सूरदास :

चोलना=नर्तकों के पहनने का वस्त्र (चोला), विषय की माल=इन्द्रियों के विषयों की माला, मोह=अज्ञान आसक्ति, रसाल=रसीले (मधुर) भरम=भ्रम, पखावज=मृदंग की तरह का एक बाजा, तृस्णा=तृष्णा, फेंटा=कमरबन्ध, काछि=पहनकर या बाँधकर, भव-अम्बुनिधि=संसार रूपी समुद्र, ग्राह अनंग=कामदेव रूपी मकर, मोट अघ=भारी पाप, सवार=काई, बीचि=तरंग, सोभासिन्धु, सौन्दर्य का समुद्र, बीछिनु=गलियों में, जसुमति=यशोदा, अगाध=गहरा, उदीप=समुद्र, नवनीत=मक्खन, घुटुरन=घोंटुओं से, रेनु=रेणु (धूल), मंडित=शोभित, चारु-कपोल=सुन्दर गाल, लोल-लोचन=चंचल नेत्र, गौरोचन=गऊ के मस्तक से निकलने वाला पीला पदार्थ विशेष, लट-टलकनि=घुँघराले बालों की लट का लटकना, मादक मदहिं=नशीली मदिरा, कठुला=कंठ की माला अथवा काठ की बनी माला, बज्र हीरा, केहरि नख=सिंह का नाखून, राजत=शोभित, का सत कल्प जिये=सौ कल्प जीने से क्या लाभ ? चितवनि=दृष्टि, सलिल=जल, भंवरनि=भंवरों में, थाह=गहराई, कटाच्छ=कटाक्ष, करार=किनारा, दुरायो=छुपाया, बरजतही=मना करने पर भी, निसिखग=चिमगादड़, कोकिल=कोयल, कूंजत=बोलती है। सींगी=एक प्रकार का बाजा, मदन=कामदेव, निज-बानन=अपने बाणों से, जानन=ज्ञानियों को, पठाये=भेजे, अमाने=अज्ञानी।

## (4) तुलसीदास :

रसना=जीभ, पर-अपवाद=पर-निन्दा, ससि समीप रहि=चन्द्रमा (भक्ति) के निकट रहकर, रविकर जल=सूर्य की किरणों में जल की भ्रान्ति

(मृग-मरीचिका), काम-कथा--काम सम्बन्धी कथाएँ, कलि-कैरव=कलियुग-रूपी कुमुद के पुष्पों के लिये, जातरूप=सोना, जुगुति=भक्ति, रविकुल सरोज रवि=सूर्यवंश रूपी कमलों के लिये सूर्य-राम, पुनीत=पवित्र, परिहरि=त्याग कर, कुरंग=हिरन, सर=तालाब, वारि=जल, परिपूरन=परिपूर्ण, सिवार=काई, त्रिविध- ताप=तीन प्रकार के संताप, दारुण=दारुण (कठोर) पुराननि=पुराणों ने, नेम निबहंगो=नियम का पालन करूँगा, परुष बचन=कठोर वचन, श्रवण=श्रवन (कान), पावक=अग्नि, बिलोके-देखे, दोउ बीर=दोनों भाई, उर आयत=विशाल वक्षस्थल, आजानु=घुटनों तक, सरसीरुह लोचन=कमल नेत्र, परिधन=परिधान (वस्त्र), निखंग=तरकश, मन अगहुँह=मन का आगे बढ़ना, उत्साहित होना, गड़त गौड़=पैरों का रुकना, सकुंच पंक=संकोच रूपी दलदल, राघौ=राम, गीध=गृद्ध-राज जटायु, अरध जल=अर्घ्य जल, खगपतिहि= जटायु को, बदन-विधु, चन्द्र-मुख, पुरुषारथ=पुरुषार्थ (शक्ति), साखा-मृग=बंदर, औसर=अवसर, मनसा=कानदेव, अचंचल=स्थिर, नेमि=राजा जनक के पूर्वज एक राजा का नाम जिनका निवास अभिशाप के कारण नेत्रों में बताया जाता है, बिरंचि=ब्रह्मा, केहि पटतरौं=किससे तुलना करूँ, विदेह कुमारी=सीता, सुचिमन=पवित्र मन से, जनक तनया=जनक की पुत्री सीता; छोभा=क्षुभित या अशान्त हो गया, पीठि=पीठ, परतिय=परायी स्त्री, दीठि=दृष्टि, मकरन्द=पुष्प रस, मृग सावक नैनी=मृग के बच्चे के समान सुन्दर नेत्र वाली, सित=सफेद, निमेषे=पलक, जुग=युग, दो, जलदि=बादल, जलजात=कमल, श्रमबिन्दु=पसीने की बूँदें, कच=बाल; रतनारे=लाल, चिबुक=ठुड्डी, कलभ=हाथी का बच्चा, गीवा=ग्रीवा=गर्दन, केहरि=सिंह, ऐहि बेरिआ=इस समय ।

**(5) मीरां :**

मण=मन, कंवल=कमल, इण=इन, णख=नख, गोबरधन=गोवर्धन पर्वत, मघवा=इन्द्र, म्हां=मैं, पचरंग चोला=पाँच इन्द्रियों से युक्त शरीर रूपी चोला, पाती=पत्र, हिवड़ो=हृदय, अगणा=अग्नि, जौहर=जवाहरात जौहरां=जौहरी, बैण=बचन, छमाशी रैण=छः माह के समान लम्बी रात्रि, कलपां=तड़पना, चैण=चन, गणकी=गणिका (वेश्या),